श्री सीताराम नाम साधना

श्री रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

क्वचिन्निवर्ततेऽभद्रात्क्वचिच्चरति तत्पुनः।
प्रायश्चित्तमतोपार्थं मन्ये कुञ्जरशौचवत्।।

श्रीशुकदेवजी ने कहा व्रत, दान, यज्ञ आदि कर्मों के द्वारा किया गया प्रायश्चित पापियों के किये गये अशुभ (पाप) कर्मों का समूल नाश नहीं करता। कर्मों के अधिकारी अज्ञानी ही होते हैं। अज्ञान रहते पापवासना का सर्वथा अभाव नहीं हो पाता।

कर्मणा कर्मनिर्हारो न ह्यात्यन्तिक इष्यते।
अविद्वदधिकारित्वात्प्रायश्चित्तं विमर्शनम्।। ६।१।११।।

कर्मों में प्रवृत्ति अधिकांश रूप से लौकिक या स्वर्गीय भोगों के निमित्त ही होती है। ऐसे सकामकर्मों से कामनाओं का, वासनाओं का, परिहार कैसे संभव है? यही भोगेच्छा तो पापों में प्रवृत्त कराती है। तब भला अधिक से अधिक स्वर्गीय भोगसुख ही संपादन कराने वाले स्मार्तमतों के प्रायश्चित्तों से हृदय की शुद्धि कैसे हो सकती है? वासनाओं का नाश तो केवल भगवन्नाम से ही संभव है। स्थूल वासना तो ज्ञानविचार से भी दबायी जा सकती है, परन्तु सूक्ष्मवासना इतनी झीनी होती है कि विवेक बुद्धि से उनके अस्तित्व का पता नहीं लगता। नाश कैसे बने? श्रीमार्कण्डेय संहिता हमें विश्वास दिलाती है कि सभी दिव्यानन्द को मिटाने वाली चित्त की सूक्ष्मवासना भी श्रीरामनाम के जप से अनायास मिट जाती है।

चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्दविनाशिनी।
सापि श्री रामसंलापादनायासेन नश्यति।।

शराब के घड़े को गंगादि पवित्र नदियाँ भी अपने परमपावन जल से शुद्ध नहीं कर सकतीं, उसी भाँति भगवत्विमुखी जीव को कृच्छाति कृच्छ चान्द्रायण व्रतादि भी बारंबार अनुष्ठित होने पर भी पवित्र नहीं बना सकते।

प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायण पराङ्मुखम्।
न निष्पुनन्ति राजेन्द्र सुराकुम्भमिवापगाः।।

— श्री मद्भागवत ।६।१।१८।

कर्म प्रायश्चित्त में एक और कठिनाई है। कोई भी सकामकर्म में विधिहीन फलोत्पादन नहीं करता। विधियों का भलीभाँति निर्वाह अनेक दोषों के भाजन साधारण मानव से संभव नहीं। अतः इस दृष्टि से भी कर्मप्रायश्चित्त व्यर्थ हो जाता है।

ऐसी बात नामप्रायश्चित्त में नहीं है। परमसमर्थ श्रीनाम सरकार पापशोधन के लिए विधि की अपेक्षा नहीं रखते।

नामकीर्त्तनस्येति कर्त्तव्यादि निरपेक्षत्वेऽपि विधित्वसमर्थनम्।

— श्रीभगवन्नाम कौमुदी पृ० ५७

श्री भट्ट वार्तिक के शावरभाष्य में भी कहा गया है।

'किमाद्यपेक्षितैः पूर्णः समर्थः प्रत्ययो विधौ।'

कर्मप्रायश्चित की विधि में तंत्रमंत्र का कुपात्रद्वारा अशुद्धोच्चारणवाला छिद्र रह जाय, देश कालोचित दोष लग जायँ, किसी भी त्रुटि की संभावना में उस कर्मप्रायश्चित्त के साथ यदि हरिनाम का संकीर्त्तन कर ले, तो विधिहीन प्रायश्चित आपको पूरा–पूरा लाभदायक हो जायगा।

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हं वस्तुत:।
सर्वं करोति निश्छिद्रं नाम संकीर्त्तनं हरे:।।

श्री स्कन्दपुराण में भी कहा गया कि तप यज्ञ आदि क्रियाओं में त्रुटि हो जाय, तो भगवत्स्मरण या नामोच्चारण कर लेने से न्यूनता होने पर भी वह क्रिया सम्पूर्ण फलदायिनी बन जाती है।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्वा तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

इसी से तो बार–बार कहते हैं कि कर्मप्रायश्चित छोड़कर प्रायश्चित के रूप में भी नामोच्चारण कीजिये। आप अशेष पापपुंज वासना और पापप्रवृत्ति सहित अवश्य नष्ट हो जायेंगे।

❄ श्रीरामनाम जप से सर्वोच्च पद की प्राप्ति ❄

श्रीनन्दीपुराण में श्रीनन्दीश्वरजी ने गणों को समझाया है कि हे गण लोग! श्रीरामनाम का परम बल तुम सब सुन लो। इसी नाम के प्रसाद से हमारे इष्ट श्रीशिवजी सभी देवों में महादेव बने हैं, इसी के बल पर हलाहल पीकर अजर अमर बन गये। श्रीरामनाम के परत्व को जानते हैं तो श्रीगिरिजावल्लभ जू और कोई क्या जानेगा?

शृणुध्वं भो गणास्सर्वे रामनाम परं बलम्।
यत्प्रसादान्महादेवो हालाहलमयीं पिबत्।।
जानाति रामनाम्नस्तु परत्वं गिरिजापति:।
ततोऽन्यो न विजानाति सत्यं सत्यं वचो मम।।

परन्तु अपरिमित प्रभाव और अनन्त शक्ति सम्पन्न श्रीरामनाम का क्षुद्रपापों के नाशार्थ अपव्यय करने में नाम पारखी बुद्धिमानी नहीं मानते। इसी दृष्टि से क्रतु स्मृति नामक धर्मशास्त्र कहते हैं कि श्रीरामनाम के द्वारा जितने अधिक पापों का नाश बनता है, उतना अधिक पातकपुञ्ज महान् से महान् पापियों में भी देखने को नहीं मिलता है। इसी से बुद्धिमानों ने पापनाशार्थ नाम जपने को चीटीं पर तोप चलाना माना है। अत: पापप्रायश्चित भिन्न उपायों से शास्त्रों में वर्णित है।

न तावत्पापमस्तीह यावन्नाम्ना हतस्मृतम्।
अतिरेक भयादाहु: प्रायश्चित्तान्तरं बुधै:।।

सहज सुखस्वरूप जीवों का सहजानन्द पापों से ढक जाता है। प्रायश्चितों से पाप नाश होने पर पुन: सहजानन्द सरसने लगता है। नाम–विश्वासी के पाप तो श्रीनाम जप से अनायास मिट जाते हैं, किन्तु जिस मंदभागी को श्रीनाम प्रभाव में विश्वास नहीं, उसके पाप शोधन के निमित्त ही परमानन्दनिष्ठ महर्षियों ने प्रायश्चित्तान्तरों की व्यवस्था की है। श्रीआदित्य पुराण में भगवान् सूर्य स्वयं ऋषियों से ऐसा कहते हैं।

नामविश्रब्धहीनानां साधनान्तर कल्पना।
कृता महर्षिभिस्सर्वैः परमानन्दनैष्ठिकैः।।

श्रीगणेशपुराण में श्रीगणेशजी ने स्वयं कहा है कि मैं श्रीरामनाम के कीर्तन से ही सभी लोकों में अग्रपूज्य बना हुआ हूँ। अतः सबों को चाहिए कि श्रीरामनाम का सदा सर्वदा कीर्तन करते रहें।

अहं पूज्योऽभवं लोके श्रीमन्नामानुकीर्त्तनात्।
अतः श्रीरामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचित्तम्।।

श्रीशुकपुराण में श्रीशिवजी ने श्रीपार्वतीजी को बताया है कि पार्वती! आप भी श्रीरामनाम रूपी परम रासायनिक महामंत्र का जप करें, क्योंकि इसी महामंत्र के प्रभाव से श्रीशुकदेवजी ने सभी ब्रह्मर्षियों में सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त किया है।

यत्प्रभावं समासाद्य शुको ब्रह्मर्षि सत्तम।
जपस्व तन्महामन्त्रं रामनाम रसायनम्।।

आप जानते हैं न, श्री प्रह्लाद जी भक्तशिरोमणि हैं। सभी भागवतों में द्वादश भागवत सर्वोत्तम बताये गये हैं। उनमें श्री प्रह्लाद जी का नाम सबसे प्रथम गिनाया गया है। अच्छा तो, यह बताइये कि ये भक्तशिरोमणि हुए कैसे?

नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत शिरोमनि भे प्रह्लादू।।

वर्त्तमान युग के समस्त सभ्य संसार ने एक स्वर से महात्मा गान्धी को इस युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष माना है। क्यों? रामनाम बल से। आप भी अपना जीवन श्रीनामाकार बना लीजिये। महान् बन जाइये। ठीक है न?

गोस्वामी जी सर्वश्रेष्ठ वैष्णवाचार्य माने जाते हैं, श्रीरामनाम जप से ही। स्वयं कहते हैं–

राम नाम को प्रभाउ, पाउ महिमा, प्रताप।
तुलसी– सो जग मनिअत महामुनि सो।।

– श्रीकवितावली ७/७२।

श्रीरामनाम से सकल मनोरथ सिद्धि

श्रीस्कन्दपुराण में श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी से कहा है कि जिसे चिन्मय रामनाम में अडोल पराप्रीति है और निरन्तर प्रेम से नामरटन करता रहता है, उसके सभी प्रयोजन बराबर पूरे होते रहेंगे।

येषां श्रीरामचिन्नाम्नि परा प्रीतिरचञ्चला।
तेषां सर्वार्थ लाभश्च सर्वदास्ति ऋणु प्रिये।।

श्री मार्कण्डेयपुराण में श्री व्यासदेव जी ने सूत जी से कहा है कि जिसे सतत श्रीरामनाम स्मरण करते रहने की निष्ठा है, तथा चित्त संकल्प विकल्प से रहित है, उसके लिये तीनों लोकों में ऐसी कौन सी दुर्लभ वस्तु है, जो सुलभ न हो जाय? मैं बिल्कुल सत्य कहता हूँ।

नाम स्मरण निष्ठानां निर्विकल्पैकचेतसाम्।
कि दुर्लभं त्रिलोकेषु तेषां सत्यं वदाम्यहम्।।

श्रीब्रह्मपुराण में श्री ब्रह्माजी ने श्रीनारद जी से कहा है कि श्रीरामनाम का कीर्त्तन ही परम मंगल रूप है। नाम जपने वाले जितना चाहें, उतना धन उनके पास आ जाय।

इदमेवहि माङ्गल्यमिदमेव धनागमः।
जीवतस्य फलश्चैव रामनामानुकीर्त्तनम्।।

श्रीकूर्मपुराण में श्रीशंकर जी ने श्रीपार्वतीजी से कहा है कि हे कल्याणि! श्रीरामनाम गोप्य से गोप्य तत्त्व है। मेरे तो जीवन सर्वस्व ही हैं। विलक्षण लौकिक भोग चाहो, विलक्षण मुक्ति चाहो, श्रीनाम सर्वेश सब दे सकते हैं।

गोप्याद् गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम्।।

वहीं यह भी कहा गया है कि लोक में, वेद में, मनोरथ पूर्ति के जो–जो साधन बताये गये हैं, उन सभी साधनों से अनंत गुणा अधिक सामर्थ्य श्रीरामनाम में है। इनसे सद्यः सभी मनोरथ पूर्ण होते रहते हैं। विश्वासपूर्वक निरन्तर जपना चाहिये।

लौकिकी वैदिकी या या क्रिया सर्वार्थसाधिकाः।
ताभ्यः कोट्यर्वुद गुणं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम्।।

श्रीबाराहपुराण में श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी को उपदेश दिया है कि श्रीरामनाम अकेले सब मनोरथों को पूर्ण करने में समर्थ हैं। इन्हें किसी सहायक साधन को साथ करने की अपेक्षा नहीं है। सब प्रकार की सम्पत्ति देने में परम उदार हैं। सर्वोत्कृष्ट महामंगलमय हैं। अतः इन्हीं का जप किया करो।

निरपैक्षं सदा स्वच्छं सर्वसम्पत्ति साधकम्।
भजध्वं रामनामेदं महामाङ्गलिकं परम्।।

लिंगपुराण में भी श्रीशिव पार्वती संवाद है। श्रीरामनाम अमृत का पान करने वाले धन्य हैं। अपने सभी मनोरथ इन्हीं से प्राप्त करते हैं। ये धनातिधन्य हैं।

अहो नामामृतालापी जनः सर्वार्थसाधकः।
धन्याद्धन्यतमो नित्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

श्रीनृसिंहपुराण में श्रीनारदजी श्री याज्ञवल्क्यजी से बताते हैं। श्रीरामनाम में ऐसा प्रभाव है कि जापक दुर्लभ से दुर्लभ जिन जिन वस्तुओं की चाहना करता है, उन उन वस्तुओं को उसके माँगने से भी अधिक मात्रा में देते रहते हैं और ऐसा शीघ्र ही। इस प्रकार के सभी मनोरथपूर्ण करने वले श्रीरामनाम में जिसे प्रीति नहीं हुई, उसके अपराधों की गिनती नहीं हो सकती ।

राम नाम प्रभावेण यद्यच्चिन्तयते जनः।
तत्तदाप्नोति वै तूर्णमभीष्टमति दुलर्भम्।।
सर्वाभीष्टप्रदे नाम्नि प्रीतिर्नैवाभिजायते।
मुने तस्यापराधानां नियमो नैव विद्यते।।

श्रीपद्मपुराण में श्रीकृष्ण भगवान् ने श्रीअर्जुनजी से कहा है कि परम पावन श्रीरामनाम का जो नित्य जाप करते हैं, उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते रहेंगे। अपुत्री हो, तो उसे पुत्रलाभ होगा।

राम राम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नराः।
अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकाम फलप्रदम्।।

व्रत, अन्य मंत्रका जप, पूजा, यंत्र मंत्र का सहारा लेना, और भी उग्रकर्म करना, व्यर्थ है। न योग करने की भी आवश्यकता है। अकेले नामजप सभी मनोरथपूर्ण करने में सर्व समर्थ हैं।

किं तीर्थैः किं व्रतैर्होमैः किं तपोभिः किमध्वरैः।
दानै र्ध्यानैश्च किं ज्ञानैर्विज्ञानैः किं समाधिभिः।।
किं योगैः किं विरागैश्च जपैरन्यैः किमर्चनैः।
यन्त्रैन्स्तथातन्त्रैः किमन्यैरुग्रकर्मभिः।।
स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामलिखोष्टदम्।।

इतिहासोत्तम नामक प्रामाणिक आर्ष ग्रन्थ में श्री भृगुजी का वचन है। श्रीरामनाम, सुनने वाले या संकीर्त्तन करने वाले सबों के समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले हैं। किसी अन्य प्रसंग वश भी नामोच्चारण हो जाय तो समस्त पापों को भस्म कर डालते हैं। जो भक्ति भावपूर्वक इनका जप करते हैं, उनके विषय में क्या कहना?

श्रुतं संकीर्तितं वाऽपि रामनामाखिलेष्टदम्।
दहत्येनांसि सर्वाणि प्रसंगात्किमु भक्तितः।।

श्रीक्रियायोगसार में किन्हीं ऋषि के प्रति सुग्गा पढ़ानेवाली गणिका का सुग्गे सहित उद्धार श्रीरामनाम से हुआ बताकर, कहते हैं—हे विप्रवर! श्रीरामनाम में इतनी कृपालुता, उदारता है। अतः आप भी इन्हीं का जप करें, आपके सभी मनोरथ अनायास इनके द्वारा पूरे होते रहेंगे और उपाय से मनोरथपूर्ति दुर्लभ है।

ईदृशं रामनामेदं जपस्व द्विजसत्तम।
अनायासेन तेऽभीष्टं सर्व सेत्स्यतिनान्यतः।।

श्रीसौर्य धर्मोत्तर आर्ष ग्रन्थ में आया है कि श्रीरामनाम सभी मनोरथ देने वाले हैं। सज्जनों के अतिप्रिय हैं। लोक लज्जा तो भक्तिपथ का कंटक है, उसे शीघ्र नष्ट कर देते हैं।

'मनोरथ प्रदातारं सज्जनानां परं प्रियम्।
लौकिकी दुर्भगा व्रीडा हन्तारं नाम सद्यशः।।'

श्रीविश्वामित्र संहिता में श्रीविश्वामित्रजी किसी वैश्य को उपदेश दे रहे हैं मैं तो उन्हीं श्रीरामनाम का जप करता हूँ, जिनके स्मरण करते ही सभी मनोरथ अनायास नयनगोचर हो जाते हैं।

'यस्य संस्मरणादेव सर्वाथाश्चक्षुगोचराः।
भवन्त्येवानायासेन तच्छ्रीराममहं भजे।।'

श्रीजावालि संहिता में भी यही कहा गया है कि श्रीरामनाम के सामर्थ्य से सभी मनोरथ सुकृतवान् जापक के उसी भाँति करतल हो जाते हैं, जैसे कल्पवृक्ष के नीचे जाने वाले के लिए धन सम्पत्ति मुँहमाँगा मिलती है।

'श्री रामनाम सामर्थ्यादखिलेष्टं कस्थितम्।
भवन्ति कृत पुण्यानां यथा कल्पतरोर्द्धनम्।।'

श्रीसुश्रुत संहिता का वचन है कि जो अपनी सभी अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए अन्य साधनों का सहारा छोड़कर एकमात्र परात्पर श्रीरामनाम का जप किया करते हैं, वे अन्त में अविनाशी श्रीरामधाम को अवश्य जायेंगे।

'सर्वाभिलाषं पूर्णार्थं जपेन्नाम परात्परम्।
सर्व त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्ययम्।।'

श्रीपतञ्जलि संहिता का वचन है श्रीरामनाम परम मंत्रों को भी उत्पन्न करने वाले अक्षय बीज हैं। इनका जो निरन्तर कीर्त्तन करते हैं, उनके लिये लौकिक पारलौकिक कोई भी अभीष्ट दुर्लभ नहीं है। जो जो चाहेंगे, वही मिला करेगा।

'रामेति नाम परमं मन्त्राणां बीजमव्ययम्।
ये कीर्त्तयन्ति सततं तेषां किञ्चिन्न दुर्लभम्।।'

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम का कीर्त्तन मंगलमय है, सभी पापों को नाश करने वाले हैं। आयु बढ़ाने वाले हैं, सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं। भोग, मोक्ष, भक्ति जो चाहो सब उदारता पूर्वक देने वाले हैं।

'माङ्गल्यं सर्वपापघ्नमायुष्यमखिलेष्टदम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं पुण्यं रामनाम्नस्तु कीर्त्तनम्।।'

श्रीहनुमन्नाटक में श्री हनुमतलाल जी ने श्रीअगस्त्यजी से कहा है कि जो हमारे परमकृपालु स्वामी श्रीमान् रामचन्द्र के मंगलदायक श्रीरामनाम का सतत स्नेहपूर्वक कीर्त्तन करते हैं, उनके समीप पहुँचकर उन्हें मैं यत्नपूर्वक सर्वदा उत्तमोत्तम सुख एवं यथेच्छ मनोरथों को दिया करता हूँ।

'ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारकम्।
श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिनः।।

तेषामर्थे सदा विप्र प्रयातोऽहं प्रयत्नतः।
ददामि वाञ्छितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम्॥'

श्री संमोहनतंत्र में श्रीशिवजी ने श्रीशिवाजी से कहा है हे प्रिये! जो साधक परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम का चित्त एकाग्र करके नित्य निरन्तर जप करते हैं उनके लिये कोई भी अभीष्ट दुर्लभ नहीं है। जो चाहेंगे वही मिलेगा।

''चित्तैकाग्रतया नित्यं ये जपन्ति सदा प्रिये ।
रामनाम परं ब्रह्म किञ्चित्तेषां न दुर्लभम्॥''

श्रीवैरञ्च्य तंत्र में कहा गया है कि अन्यान्य सभी साधनों को छोड़कर एकमात्र श्रीरामनाम के जप में परायण हो जाओ। सभी मनोरथों को देने में ऐसा कोई भी दूसरा यत्न समर्थ नहीं है।

''त्यक्त्वाऽन्य साधनान् सर्वान् रामनाम परोभव।
नातः परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम्॥''

श्रीआदिरामायण में श्रीहनुमतलालजी श्रीनल जी से कहते हैं कि मनोरथ पूर्ण करने में श्रीराम नाम चिंतामणि कल्पवृक्ष तथा कामधेनु से भी अनन्तगुणा बढ़कर है।

''चिन्तामणिः कल्परुः कामधेनुश्चैव नृणाम्।
अनन्त फल संदोह भवनं रामनाम वै॥''

अब आगे हम अर्वाचीन नामजापक आचार्यों की महावाणियाँ उद्धृत करेंगे। श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम महाराज बिना माँगे अपने आश्रितों को अपनी ओर से साम्राज्य सुख के समान लौकिक साजसज्जा से परिपूर्ण रखनेवाले हैं। गोस्वामीजी ने भी श्रीदोहावली में इसी बात की पुष्टि की हैं। नाम गरीब निवाज को राजदेत जन जानि॥ श्रीबड़े महाराज पुनः आदेश करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी जो कुछ माँगना हो इनसे निशंक माँगते रहो। तुम्हारे ऊपर यदि कोई दारुण दुःख आ पड़ा है तो उसके निवारण में श्रीनाम तनक भी विलंब नहीं करेंगे। तत्पश्चात तुम निष्कलंक रहकर सुखसार मौज इनके द्वारा लेते रहो। हमें श्रीनाम सरकार की ओर कृतघ्न होते देखकर फटकारते हैं कि कौन सा तुम्हारा ऐसा प्रयोजन है जो श्रीनामसरकार पूरा नहीं करेंगे?तब दूसरे साधन के द्वार खटखटाने की आवश्यकता? अन्य साधनों का भरोसा नहीं छूटता है तभी तो दरिद्रता के कीचड़ में लथपथ हो रहे हो। मैं(श्री बड़े महाराज) ने अन्य साधनों की आशा छोड़ दी है। अतः श्रीरामनाम से परमानंद में निर्भर होकर श्रीनामसरकार के मनोरथ प्रदायक यश का डंका बजाकर विश्व की भाँति घोषित कर रहा हूँ।

नाम महाराज सामराज सुख दैन द्रुत
चाहे जौन चीज माँगि लीजिये निसंकही
होई है न वार दुख दारुन प्रहार बिच
लीजिये बहार सुखासार अकलंक ही

कौन हेत हेरत हरामखोर और ओर
याही लिये नित्त रहे कंक रंक पंक ही।
(श्री)युगल अनन्य दूजी आस विसराय हिय
हरष अमाय वदै विज्ञ दिये डंक ही।।१२८।।

उसी श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज पुनः कहते हैं कि श्रीरामनाम, चिन्तामणि के भी मनोरथ पूरक चिन्तामणि हैं। अनन्त कामधेनु और कल्पवृक्ष के समान मुँह माँगी वस्तु देने में उदार हैं। ऐसा श्रीनाम प्रभाव स्वयं वेद कहते हैं। श्रीराम चिदानन्दघन है। बुद्धि मन की गति से परे पूर्णउदार हैं। सच्चे सर्वेश्वर है। श्री शंकर जी के तो हृदयहार ही हैं। श्रीशिव जी अपने हृदय में इनकी स्मृति जोगाये रहते है। श्रीनाम आश्रित के आरतिनिवारण में करुणानिधान है। नामार्थ के अनुरूप ही रमणार्थक धातु सिद्ध श्रीनाम दिव्य मधुर रस की खान है। प्राणों को भी अनुप्राणित करने वाले प्राण है। एकबार मुख से उच्चारण करने पर कोटि रोग हर लेते हैं। श्रीबड़ेसरकार कहते हैं कि श्रीनाम निर्मल हैं। सहज स्वतंत्र हैं। ज्ञान योग भक्ति भाव दिव्य रसों की स्वाद सीमा है।

चिंतामनि हू की चिंतामनि नाम कामधेनु
देवद्रुम अमित समान गुन वेद वद।
चिदघन–रूप मन मति गति पार,
परिपूरन उदार हर हार सर्वेश सद।।
करुनानिधान रसखान प्रानहू के प्रान
वारक वदन वरनत हरे कोटि गद।
श्रीयुगल अनन्य स्वच्छ सहज स्वतंत्र सदा
ज्ञान योग भक्ति भाव रस जस स्वाद हद।।१६१

वहीं श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीरामनाम रटने पर आपको रिद्धि सिद्धि निर्मल सुख सब मिलेंगे। अन्य शुभ सुकृत समूह का आश्रयण तो नामजप के मार्ग में विघ्न(प्रत्यूह) रूप हैं। श्रीब्रह्मा विष्णु महेश आदि त्रिदेव अपनी अपनी जगह सभी जगदीश्वर कहाते हैं। श्रीरामनाम जप से ही उन पदों को प्राप्त किया है। यह बात वेद प्रसिद्ध है रत्ती भर भी शंका न करना। श्रीरामनाम के अधीन पांचों मुक्तियाँ सारी शक्तियाँ तथा भक्तिभाव सब कुछ हैं। यह बात संत वेद सम्मत है। श्रीनामजप से श्री जानकी वल्लभलालजू का स्नेह प्राप्त करो। सदा मौज लूटते रहो।

रामनाम रटे रिद्धि सिद्धि सुख स्वच्छ शुभ
सुकृत समूह परत्यूह परमानिये।
जेते जगदीश तेते नाम महाराज बल
भये बेद बदत रतीक संक नानिये।।

पाँचों मुक्ति शक्ति भाव भक्ति रामनाम तंत्र
संत श्रुति संवत सु एकरस जानिये।
(श्री) युगल अनन्य जानकीश से सनेह साज
सजिये सदैव याही माँझ मौज आनिये।।४१५

श्रीगोस्वामीजी के काव्यों में तो श्रीरामनाम के मनोरथ प्रदायक प्रभाव का वर्णन अनेक स्थलों में आया है।

रामनाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता।।
राम नाम काम तरु जोइ जोइ मांगि हैं। तुलसिदास स्वारथ न खांगि हैं।।
'कलि नाम कामतरु राम के।'

सर्वत्र श्रीस्वामीजी यही दिखाते हैं कि मनोरथ पूर्ति के लिए श्रीनामतेर सभी साधन कलि से बाधित हैं। एकमात्र श्रीरामनाम के आगे कलि की दाल नहीं गलती।

कालनेमि कलिकपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू।।

नामजापकवर्य परमहंस श्रीसियालालशरण प्रेमलता जी महाराज स्वरचित श्रीवृहदउपासना रहस्य में कहते हैं—

कोटिन साधन साधिये, कोटिन जन्म सुधारि।
रामनाम की रटन सम, सुखद न कहत पुरारि।।
अस बिचारि जो चहहु भलाई। रटहु रटावहु नामहि भाई।।
विद्यारथी रटै जो नामहि। पावहि विद्या विनु श्रम सामहि।।
धन हित रटन करै जो कोई। मिलै विपुल कहुं घटै न सोई।।
उभय लोक महँ जो चह जीती। रटै रटावै नाम सप्रीती।।
जो चह कोउ सुंदर सुत नारी। रटै नाम नित होय सुखारी।।
नारि चहहि जो सुत पति भूषण। पावहि सो रटि नाम अदूषण।।
रोगी जो चह रोग नशावन । रटै नाम लय लाय सुपावन।।
कोढ़ी जो चह निर्मल काया। रटै नाम सियराम सुहाया।।
रुजगारी रुजिगार में, लाभ चहहिं जो कोय।
रटैं रटावें नाम नित, कबहुँ न हानी होय।।
भयदायक असथलनि मसाना। रटत जाव सियराम सुजाना।।
राज भवन जंगल जल माँही। प्रविसहु नाम रटत भय नाहीं।।
कालहुँ की गति नाहिन तहँवा। होत उचारन नाम सुजहवां ।।
दुखप्रद जो सिंहादिक नाना। सुनत पराहि नाम धुनि काना।।
जे गृह ग्राम परै बीमारी। हैजा प्लेग बुखार तिजारी।।

जय सियाराम नाम धुनि कीजै। मिलि सुपरस्पर सब दुख छीजै।।
जो सीखन चह गुन चतुराई। सो सियराम रटै मन लाई।।
जोग जुगति जो चाहहि जोगी। रटै नाम सियराम निरोगी।।

कहत सुनत गावत सुजन, रामकथादि पुरान।
आदि अंत श्रीनाम धुनि, कीजै हित कल्यान।।

नाम सुकीर्त्तन गाय बजाई। करहु करावहु हिलिमिलि भाई।।
आरंभौ जो कवनिहुं काजा। करिय नाम धुनि सहित समाजा।।
जो चह सिद्ध करन सब कामा। करिय नाम धुनि प्रद विश्रामा।।
चाहहु जो सब सुख अनुकूला। करहु नाम धुनि मंगलमूला।।

❄ नामजप से त्रिगुणमयी सिद्धियाँ ❄

श्रीवृहद् विष्णुपुराण में श्रीपराशरजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि जो रामनाम का नित्य प्रत्येक क्षण जप करता रहता है वह श्रीनाम प्रभाव से सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं जपति क्षणम्।
स सर्वसिद्धिमाप्नोति रामनामानुभावत:।।
श्री अगस्त संहिता में भी यही श्लोक आया है।

श्रीवृहन्नारदीय पुराण में कहा गया है कि कलिकाल में वेद विहित कर्मों को कोई घटा—बढ़ाकर करेगा तो सिद्धि मिलने में संदेह रहता है। कर्म के आदि अन्त में श्रीनाम कीर्त्तन अवश्य करें करावें। नाम कीर्त्तन से वैदिक कर्म की त्रुटि पूरी हो जायगी तथा उसी से वैदिक कर्मों का पूरा—पूरा फल मिलेगा उसे।

न्यूनातिरिक्ता सिद्धि कलौ वेदोक्तकर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्णा फलदायकम्।।

क्रियायोगसार में कहा गया है कि किसी के घर में श्राद्ध हो, तर्पण हो, बलिदान की नौवत आवे, कोई उत्सव हो, यज्ञ, दान, व्रत, देवाराधन आदि कोई भी वैदिक सत्कर्म करने का अवसर आवे उस समय इन सत्कर्मों का सम्पूर्ण फल चाहने वाले चतुर व्यक्तिको चाहिये कि श्रीसीतारामनाम का स्मरण भक्तिपूर्वक करता रहे।

श्राद्धे च तर्पणे चैव बलिदाने तथोत्सवे।
यज्ञे दाने ब्रते चैव देवताराधनेऽपि च।।
अन्येष्वपि च कार्येषु वैदिकेषु विचक्षणै:।

संस्मरेधत्फलं प्रेप्सु रामरामेति भक्तित:।।

श्रीआदिपुराण में श्रीकृष्णार्जुन सम्वाद में कहा गया है कि श्रीरामनाम के प्रभाव से सभी प्रकार की सिद्धियाँ पाकर जापक सिद्धराज बन सकता है। बुद्धिमान साधक को चाहिये कि विश्वासपूर्वक निरन्तर जपता रहे।

रामनामप्रभावेण सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
विश्वासेनैव श्री रामनाम जाप्यं सदा बुधै:।।

श्री अनन्त संहिता में आया है कि श्रीरामनाम सब जगह सदा सर्वदा सबों को सिद्धि देने वाले हैं। इनके स्मरण करते ही अन्य साधनों में दीर्घकाल में प्राप्त होने वाला फल इनके द्वारा शीध्र प्राप्त हो जाता है।

सर्वेषां सिद्धिदं रामनाम सर्वत्र सर्वदा।
यस्य संस्मरणाच्छ्रीध्रं फलमायाति दूरगम्।।

वहीं यह भी कहा गया है कि श्रीरामनाम सभी ऐश्वर्य को, सभी सिद्धियों को तथा धर्मों को देने वाले हैं। सभी प्रकार की मुक्तियाँ तथा परमानन्द इससे प्राप्त हो जाते हैं। श्रीरामनाम के प्रभाव से ही ब्रह्मा जी सृष्टि की रचना करते हैं तथा सभी देवता सब ऐश्वर्य से सम्वित हैं।

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्व सिद्धिदं सर्व धर्मदम्।
सर्वमोक्षकरं शुद्धं परानन्दस्य कारणम्।।
रामनामम्न: प्रभावेण स्वयम्भू: सृजते जगत्।
तथैव सर्वेदेवाश्व सर्वैश्वर्य समन्विता:।।

श्रीअध्यात्म रामायण में कहा गया है कि श्रीरामनाम के निरन्तर जप से वचन सिद्धि आदिक सिद्धियाँ स्वयमेव निश्चित रूप से आती हैं।

राम रामेति सततं पठनाल्लभते फलम्।
वाचा सिद्धयादिकं सर्व स्वयमेव भवेद्ध्रुवम्।।

श्रीकबीरजी श्रीरामजी से सभी सिद्धियाँ सुलभ बताते हैं–

जाकी गाँठी नाम हैं, ताके है सब सिद्धि।
कर जोरे ठाढ़ी रहै, आठ सिद्धि नव निद्धि।।

अनुभवी नाम जापकवर्य परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज स्वरचित वृहद उपासना रहस्य में सिद्धाई प्राप्त करने की युक्ति बताते हैं।

हनुमंतहि जो चहहु रिझाई। तौ रटि नाम सुनावहु भाई।।

सकल वासना करिहैं पूरी। सुनि सियराम नाम धुनि रूरी।।
जो चह प्रभु पद–पंकज–प्रेमा। करै नाम धुनि दायक छेमा।।
सब विधि कुसल चहहु सब ठामा। रटहु सदा सियराम सुनामा।।
आकर्षन मारन मोहन मन। असतंभन वसकरन उचाटन।।
जप तप जोग विराग सुदाना। पूजन पाठ होम ब्रत ध्याना

अनुष्ठान सिधि होय सब, आदि सुषष्ट प्रयोग।
रटै नाम हनुमान ढिग, बैठि सु तजि तियभोग।।

यहि विधि जो हनुमानहि कोई। नाम सुनावै तौ सिधि होई
नारि संग तजि श्री सियरामा। रटै अखंड पुलकि बसु यामा।।
करि सुअचल मन सुचि सब अंगा। बैठे सनमुख तजि सब संगा।।
सुक्षम शुद्ध बसन एक बारा। रटै नाम सियराम उदारा।।
मध्यम स्वर से करै उचारन। षष्ट मास करि नेम सुधारन।।
विघन होय तौ मन न डुलावै। अधिक नेम से प्रेम बढ़ावै।।
विलम होय वरु नेम न त्यागै। दिन दिन नाम रटन में पागै।।
अपर आस भय नींद विहाई। केवल नाम रटै लय लाई।।
उर दृढ़ता लखि श्री हनुमाना। सकल काज सिधि करहिं सुजाना।।
कहेउँ न कछु विधि जुगुति बनाई। यह सब बात मो अजमाई ।।

श्री रामनाम अपने चारों प्रकार के भक्तों को अपनी–अपनी अभिलषित वस्तु देने में परम समर्थ हैं। ज्ञानी भक्त ब्रह्मानंद का अनुभव चाहते हैं। योग साधन से विलम्ब से मिलता है। जीभ से बैखरी वाणी में नामोच्चारण करें तो सिद्धि अनायास शीघ्र मिलेगा।

नाम जीह जपि जागहि जोगी। विरति विरंचि प्रपंच वियोगी।।
ब्रह्म सुखहि अनुभवहि अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा।।

इसी प्रकार जिज्ञासु को जीभ से नाम जप करने पर गूढ़ तत्त्वों का ज्ञान होता है।

जाना चाहहि गूढ़ गति जेऊ। नाम जीह जपि जानहि तेऊ।।

आरत भक्तों के घोर संकट अनायास नाम जाप से मिट जाते हैं।

जपहि नाम जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

हम आगे सिद्धि चाहने वाले के लिए नामयुक्ति बता रहे हैं।

साधक नाम जपहिं लय लाये। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाये।।

❄ नामजप से विभिन्न सिद्धियाँ ❄

अद्‌भुत यह मंत्र सर्वतन्त्र है स्वतंत्र जाके
ऋद्धि सिद्धिदायक खल घालक सुरस्वामी हैं।
ममता को मारन उच्चाटन भवनिद्रा को
इन्द्रियन वशीकरन विषय को विरामी है।
मनको आकर्षन अस्तंभन चित्त चंचल को
पापन को प्रयोग दुष्ट दापन को दामी है।
सबको परिनाम सो सुमिरले 'सहाय राम'
नाम तो अनन्त तामें रामनाम नामी है।।

कल्याण के श्रीरामायण परिशिष्टांक पृ० ५३२ में एक गुणातीत बीतराग अवधूत के बताये साधनों से पृथक्–पृथक् अनेक सिद्धियों की प्राप्ति बतायी गयी है।

जिनको सिद्धि प्राप्त करने की इच्छा है वे साधक श्रवण नेत्रादि इन्द्रियों को विषयों से रोककर और मन बुद्धि चित्त तथा अंहकार की वृत्ति खींचकर एकाग्र होकर राम नाम जपते हैं, और अणिमादिक सिद्धियों को प्राप्त करके सिद्ध हो जाते है।

१– रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से थोड़े काल में त्रिकालज्ञत्त्व सिद्धि प्राप्त होती है। यानी तीनों काल का ज्ञान हो जाता हैं।

२– फिर कुछ समय पीछे अद्वन्द्व सिद्धि प्राप्त होती है यानी शीतोष्ण नहीं व्यापता।

३– तदन्तर कुछ काल बीतने पर चित्ताद्मभिज्ञाता सिद्धि मिलती है अर्थात दूसरे के चित्त की बात जानी जा सकती है।

४– फिर थोड़े दिनों में अग्न्यकीब्र विषादीनांप्रतिष्टम्भ सिद्धि मिलती है अर्थात् अग्नि आदि से बाधा नहीं होती।

५– फिर कुछ काल में अपराजिता सिद्धि प्राप्त होती है यानी किसी से भी पराजय नहीं होती। क्षुद्र सिद्धियाँ रामनाम के जप से स्वाभाविक प्राप्त हो जाती है।

६– श्रीरामरूप में मन लगाकर नाम जपने से थोड़े ही दिनों में क्षुधा पिपासा शोकमोह जन्म मरणादि षडूर्मी नाश हो जाती है।

७– ब्रह्माण्डनाद में श्रवण देकर, रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से दूरश्रवणसिद्धि प्राप्त होती है यानी दूर की बात सुनी जा सकती है।

८– सूर्यतेज में रामरूप स्थित करके उसमें मन दृष्टि लगाकर नाम जपने से दूरदर्शन सिद्धि प्राप्त होती है। अर्थात् दूर की वस्तु दीखने लगती है।

९– पवन में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से मनोजव सिद्धि मिलती है यानी मन के समान देह की गति तीव्रगामिनी हो जाती है।

१०–अनन्तर मनोरथ में रामरूप स्थित करके उसमे मन लगाकर नाम जपने से मनोरथ सिद्धि प्राप्त होती है यानी मनचाही वस्तु प्राप्त हो जाती है।

११– सब देहों में स्थित आत्मा में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से पर काय प्रवेश सिद्धि प्राप्त हो जाती है यानी दूसरी देह में प्रवेश करने को समर्थ हो सकता है।

१२– प्राणायाम की विधि से ब्रह्मरन्ध्र में प्राण चढ़ाकर वहाँ रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से स्वच्छन्द मृत्यु सिद्धि प्राप्त होती है।

१३– देवसत्त्व सहित रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से देवांगना क्रीड़ा सिद्धि प्राप्त होती है।

१४– सत्य संकल्पमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से यथासंकल्प सिद्धि प्राप्त होती है।

१५– अभंग आज्ञामय प्रभु में मन लगाकर नाम जपने से आज्ञा अप्रतिहत सिद्धि प्राप्त हो जाती है यानी उसकी आज्ञा का कभी भंग नहीं हो सकता। ये सामान्य गुण सम्बन्धी सिद्धि है।

१६– शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्ध तन्मात्राओं में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से अणिमा सिद्धि प्राप्त होती है यानी शरीर अणुमात्र हो सकता है।

१७– ज्ञानमय महतत्त्व में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से महिमा सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

१८– आकाशादि पञ्चभूतों में रामरूप स्थित करके उसमें मन लगाकर नाम जपने से लघिमा सिद्धि प्राप्त होती है देह लघु हो सकती है।

१९– सात्विक अहंकारमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से प्राप्ति सिद्धि प्राप्त होती है। यानी इन्द्रिय और देह सहित पराये देह में प्रवेश किया जा सकता है।

२०– क्रियामहतत्त्वमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से प्रकाश्य सिद्धि प्राप्त होती है यानी भूमि आदि के गुप्त पदार्थ दिखायी देने लगते हैं।

२१– त्रिगुण माया प्रेरक कालमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से ईशता सिद्धि प्राप्त होती है। यानी ईश्वर शक्ति प्रेरणादि प्राप्त हो सकती है।

२२– तुरीय अवस्थामय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से वसिता सिद्धि प्राप्त होती है यानी मन विषयों से विलग हो जाता है।

२३– अगुणमय रामरूप में मन लगाकर नाम जपने से अवश्यता सिद्धि प्राप्त होती है। यानी इच्छामात्र से सर्वाङ्ग सुख प्राप्त रहते हैं।

आठों सिद्धियाँ भगवत प्रधान है। सबसे श्रेष्ठ ईश सिद्धि है। परिचित रामारूप में मन लगाकर नाम जपने से सब सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती है।

'साधक नाम जपहि लयलाये। होहि सिद्ध अनिमादिक पाये।।'

यह परम प्रामाणिक मानस पंक्ति की सूत्रात्तिका व्याख्या है। पिछले पृ० ६९,७९ में हम श्रीरामनाम महामंत्र से विभिन्न सिद्धियों की प्राप्ति सम्बन्धी चर्चा कर आये हैं। उसकी व्याख्या उपरि निर्दिष्ट पंक्तियों में हो गई। किसी तान्त्रिक अनुभवी नामानुरागी गुरु के पथ प्रदर्शन का सहारा लेकर इन सिद्धियों के लिए यत्न करना चाहिये।

नामजप से पारमार्थिक सिद्धियाँ

श्रीपुराणसंग्रह में श्रीसूत जी ने शौनक ऋषिको समझाया है कि सभी मंत्रों में श्रीरामनाम सर्वश्रेष्ठ बताये गये हैं, किन्तु इस नाम का मर्म गोप्य है। श्रीउमापतिजी का तो जीवन ही है। जापक के अन्त:करण को शुद्धबनाने वाले हैं। सभी जीवों के लिये स्मरण करनें में सुलभ है। इनसे अनायास सिद्धि प्राप्त होती है। अन्य सभी साधनों को छोड़कर शीघ्र इसी नामात्मकमंत्र को प्रेमपूर्वक जपना चाहिए।

''सर्वेषां मन्त्रवर्गानां रामनाम परं स्मृतम्।
गोप्यं श्री पार्वतीशस्य जीवनं चित्तशोधकम्।।
सुलभं सर्व जीवानामनायासेन सिद्धिदम्।
सर्वोपायं विहायशु जप्तव्यं प्रेमतत्परैः।।''

श्रीसौर्य धर्मोत्तर ग्रन्थ में कहा गया है कि श्रीरामनाम का परत्व वेदों में सर्वत्र प्रसिद्ध है, अज्ञानी नहीं जानते हैं। इसी से भवसागर में गोते खा रहे हैं। श्रीनामजप से कर्मकाण्ड के सहित ज्ञान भक्ति अनायास सिद्ध हो जाती है। जीभ से परात्पर श्रीरामनाम का जप होना चाहिए।

''परत्वं परमं नाम्नो विदितं सर्वतः श्रुतौ।
अबुधाः नैव जानन्ति सम्पतन्ति भवार्णवे।।
सकर्मोपासना ज्ञानमनायासेन सिद्धयति।
रामनाम सदा जिह्वा संजपत्यखिलिश्वरम्।।''

श्रीजावालि संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम में बिना साधन किये ही प्रगट रूप से सिद्धि मिलते देखी गयी है। अन्य साधनोंमें सिद्धि के लिए रचते पचते रहो वह नामजप वाला दिव्यानन्द तो दुर्लभ ही रहेगा।

''साधनेन बिना सिद्धि दृष्टं नाम्नैव संस्फुटम्।
अन्यत्र साधनैः दुखैः दुर्लभं तन्महत् सुखम्।।''

श्रीविनय १३०(४) में भी कहा गया है कि कलियुगी बनिये नाममात्र की पूँजी लगाकर अमित धन पाने को उत्सुक रहते हैं। उसी प्रकार सिद्धि चाहने वाले नाममात्र का साधन करके महान से महान सिद्धि पाना चाहते हैं। श्रीनामनगर में ऐसे लोभी का भी मनोरथ पूरा हो जाता है।

''साधन बिनु सिद्धि सकल लोग लपत।
कलिजुग बर बनिज बिपुल नाम नगर खपत।।''

श्रीसुदर्शन संहिता में कहा गया है कि अपने सदगुरु द्वारा उपदिष्ट रीति से मन को एकाग्र बनाकर श्रीरामनाम का जप करे। इस विधि से नाम जपने पर थोड़े ही समय में संसार से तीव्र वैराग्य तथा मधुररसमयी भक्ति, दोनों की परम सिद्धि हो जायगी।

यथा गुरूपदेशेन नित्यमेकाग्रमानसैः।
एवं रीत्या जपेन्नाम तदा स्वल्पमुपायतः।।
जायते परमा सिद्धिर्विरक्ति भक्तिरूज्ज्वला।

श्रीकेदारखंड में कहा गया है कि श्रीरामनाम के समान वेदान्त की जानकारी में कोई तत्त्व नहीं है। श्रीरामनाम के ही प्रभाव से निर्मल मुनिगण परम सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

रामनाम समं तत्त्वं नास्ति वेदान्तगोचरम्।
यत्प्रसादात्परां सिद्धि सम्प्राप्ता मुनयोऽमलाः।।

श्रीपार्वतीजी ने श्रीलोमश संहिता में पारमार्थिक तत्त्व के मर्मज्ञ जगदगुरु भगवान शंकरजी से एक बार पूछा था कि मैंने आपसे अनेक तत्त्व जाने। इस समय मैं यह जानना चाहती हूँ कि बिना अधिक साधन श्रम किये ही सब सिद्धियों को देने वाला किस गोप्य तत्त्व को आपने निश्चित किया है। उत्तर में भगवान शिवजी ने बताया कि श्रीरामनाम ही सर्वशास्त्र प्रसिद्ध परम तत्त्व है। परम प्रिय रहस्य यही है। इन्हीं से सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है। श्रीरामनाम के प्रभाव ही से तो मैं सर्वज्ञ बना बैठा हूँ। तीनों लोकों में श्रीरामनाम से बढ़कर कोई तत्त्व है ही नहीं।

इदानीं श्रोतुमिच्छामि किं तत्त्वं कृतनिश्चितम्।
गुह्यादगुह्यतरं गुह्यं पवित्रं परमं च यत्।
सुलभं सुगमोपायं विनायासेन सिद्धिदम्।।

शिव उवाच

रहस्यं परमं श्रेष्ठं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।
रामनाम परं तत्त्वं सर्वशास्त्रेषु प्रस्फुटम्।।
यस्य नाम प्रभावेण सर्वज्ञोऽहं वरानने।
रामनाम्नः परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्त्रये।।

श्रीअत्रिसंहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम का स्मरण चाहे किसी भी प्रकार से किया जाय, भगवत्प्राप्ति रूपा मनोरमा सिद्धि अवश्य मिलती है।

येन केन प्रकारेण संस्मरेद्राम नामकम्।
अवश्यं लभते सिद्धि प्राप्ति रूपां मनोरमाम्।।

मंत्र तंत्र रहस्यों के परम मर्मज्ञ श्रीहनुमतलालजी श्रीनल जी के प्रति श्रीआादि रामायण में कहते हैं कि अन्य प्रकार के सैकड़ों मंत्रो की आराधना करो, फल होगा या नहीं संशय रहता है। किन्तु श्रीरामनाम अपने स्वभाव से ही उच्चारण मात्र करने वाले को फल अवश्य देते हैं। श्रीनाम

मंत्र में अन्य मंत्रों की भाँति नहा धोकर जपके पहले पवित्र बनने का प्रतिबन्ध नहीं है। अन्य मंत्र के कीलनादि सिद्धि विरोधी रुकावटें है। परमसमर्थ रामनाम में कीलन का गम नहीं हैं। रामनाम का मनोरथ प्रदायक स्वभाव कल्पवृक्ष के समान है।

अन्यदाराघंनं शतैर्मन्त्रं फलति नाथवा।
गृहीत मात्र फलदं रामनाम स्वरूपत:।।
न शौच नियमाद्यच न सिद्धारि विचारणम्।
कल्पवृक्ष स्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम्।।

श्रीसाकेत प्राप्ति

श्रीपद्मपुराण में जगदगुरु शंकरजी श्रीपार्वतीजी से कहते हैं कि बड़े—बड़े सिद्ध योगीन्द्रों के लिए भी सभी वैकुण्ठों से ऊपर परात्परतम श्रीसाकेत संज्ञक रामधाम की प्राप्ति अगम है, दुर्लभ। अन्य किसी भी साधन से वहाँ जीव नहीं पहुँच सकता। एकमात्र श्रीसीतारामनाम ही ऐसे परम शक्तिशाली शक्तिशाली हैं, जिनके सहारे साधक वहाँ अनायास सुखपूर्वक पहुँच सकता है।

दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेत संज्ञकम्।
सुखपूर्व लभेत्तत्तु नाम संराधनात प्रिये।।
'तुलसी रामनाम सम मित्र न आन।
जो पहुंचाव रामपुर तनु अवसान।।(श्रीवरवै रामायण ७/६७)

दिब्य भगवद्धामों के महत्त्वज्ञाता लोकपितामह श्री बह्माजी देवर्षि श्रीनारदजी को गोप्य से गोप्यतम तत्त्व बताते हुए कहते हैं कि नारद! सत्य जानना केवल एक ही बार श्रीरामनाम उच्चारण करने वाले परात्पर श्रीरामधाम अर्थात् साकेत प्राप्त कर लेता है।

श्रृणु नारद सत्यस्त्वं गुह्याद्गुह्यतमं मतम्।
रामनाम सकृज्जप्त्वा याति रामास्पदं परम्।।

श्रीपद्मपुराण में ही श्रीशिवजी श्रीपार्वती जी से कहते हैं कि प्राण त्यागते समय श्रीरामनाम एक ही बार स्मरण कर ले वह अर्चिरादि मार्ग से सूर्यमंडल को भेदन करता हुआ श्रीसाकेत संज्ञक परमधाम को जाता है।

प्राण प्रयाण समये रामनाम सकृत्स्मरेत्।
सभित्वा मण्डलं भानो: परं धामाभिगच्छति।।

इतिहासोत्तम नामक आर्षग्रन्थ में कहा गया है कि प्राचीन काल में सभी महर्षिगण श्रीरामनाम के संकीर्त्तन से ही सिद्ध बन कर ब्रह्मानन्द में मगन रहते थे तथा शरीरान्त होने पर सभी श्रीरामधाम साकेत को गये।

पुरा महर्षय: सर्वे रामनामानुकीर्त्तनात्।
सिद्धा ब्रह्मसुखे मग्ना याता: श्रीरामसद्मनि।।

आदिपुराण में भगवान श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन से कहते है कि अनान्य साधनों से हीन भी जो एकमात्र श्रीरामनाम ही का जप करता रहता है। उसकी सद्गति अर्थात् श्रीसाकेत प्राप्ति सुनिश्चित है।

रामनामैव नामैव रामनामैव केवलम्।
गतिस्तेषां गतिस्तेषां गतिस्तेषां सुनिश्रितम्।।

वहीं कहा गया है कि श्रीनामजप परायण प्रेम निर्भर जहाँ जहाँ–जाते है उन भक्तों के पीछे–पीछे सभी मुक्तियाँ उनकी स्तुति करती हुई अनुगमन करती है।

रामनाम रता यत्र गच्छन्ति प्रेमसंप्लुता:।
भक्तानामनुगच्छन्ति मुक्तय: स्तुतिभिस्सह।।

श्रीआदिपुराणान्तर्गत श्रीकृष्णार्जुन संवाद में कहा गया है कि जिनके चित्त में परममांगलिक श्रीरामनाम की स्मृति बनी रहती है वह श्री साकेत के मार्ग में सभी लोक लोकान्तरों के प्रलोभन को जीतकर निर्द्वन्द श्रीपरात्पर रामधाम में पहुँच जाते हैं।

यस्य चेतसि श्रीरामनाम माङ्गलिकं परम।
स जित्वा सकलांल्लोकान् परंधाम परिब्रजेत।।

वहीं कहा गया है कि अर्जुन! जिनके मुख से श्रीरामनाम किसी भी प्रसंग में कहा जाय वह भी सब पापों से मुक्त होकर नित्य रामधाम को जाता है। जो निर्वाण दायक नाम को श्रद्धा से रटते हैं, उनके पुण्य फल को कौन कह सकता है?

रामनाम प्रसङ्गेन ये जपन्तीह चार्जुन।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामस्पदं परम्।।
घोषयन्नाम निर्वाण कारणं यस्त्वनन्यधी:।
तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तु क: शक्यतेभुवि।।

श्रीअध्यात्म रामायण में वालि ने श्रीराघवजी से कहा है कि जिनके नाम विवश होकर भी कहने पर मरणशील प्राणी आपके परमधाम की प्राप्ति कर लेता है वही आप साक्षात रूप से मेरे मरते समय मेरे आगे विराजमान है।

यन्नाम विवशो गृणन म्रियमाण: परं पदम्।
याति साक्षात त्वमेवासि मुमूर्षो मे पुरस्थितम।।

श्रीसुश्रुत संहिता का वचन है कि सभी अन्यान्य साधनों को छोड़कर एकमात्र सर्वोपरि भगवन्नाम अर्थात श्रीसीतारामनाम का जप करने वाले के ऐहिक जीवन कालीन सर्वमनोरथ पूर्ण होते रहते हैं तथा अन्त में अविनाशी श्रीरामधाम की प्राप्ति सुनिश्चत रूप से हो जाती हैं।

सर्वाभिलाष पूर्णार्थ जपेन्नाम परात्परम।
सर्व त्यक्त्वा ततो याति ह्यवशं पदमव्यथम्।।

बोधायन संहिता के मत से यज्ञादि अनुष्ठान, कूप वावली खोंदवाना, धर्मशाला औषधालय आदि बनवाने को इष्टार्पूर्त्त कर्म कहते हैं। इनको अधिक रूप से करने पर भी इनसे अधिक–अधिक स्वर्गलोक का सुख भोगना होता है। अन्त में पुन: संसार चक्र में पिसाना पड़ता है। एकमात्र

श्रीरामनाम ही हैं, जिनकी साधना से जीव सामीप्य सायुज्य सालोक्य सामीरय जो मुक्ति चाहे सभी संभव हो जाती हैं।

इष्टापूर्त्तानि कर्माणि सुबहूनि कृतान्यपि।
भव हेतूनि तान्येव रामनाम्ना सुमुक्तद:।।

तापनीय संहिता का कहना है कि श्रीरामनाम परम प्रकाशमान हैं, पवित्रों को भी पवित्र बनाने वाले हैं। संसार से तारने में समर्थ इनसे बढ़कर कोई भी उत्तम मंत्र कहीं नहीं विद्यमान है।

रामानाम परंधाम पवित्रं पावनास्पदम्।
अत: परं न सन्मन्त्रं तारकं विद्यते क्वचित्।।

श्रीहिरण्यगर्भ संहिता के कथनानुसार श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है 'श्रीरामनाम ही परम अवलंब है श्रीरामनाम ही जन्म—मरण के भय को छुड़ाकर संसार से तारने वाले अर्थात् तारक एकमात्र श्रीरामनाम ही है।

श्रीरामेति परं मन्त्रं तदेव परमं पदम्।
तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्यु भयापहम्।।

वहीं आदिपुराण में श्रीकृष्णार्जुन संवाद कहता है कि स्वर्ग नरक देने वाले शुभाशुभ कर्मों को करते हुए भी यदि वह श्रीरामनाम का गान करता है तो वह भी परात्पर श्रीदिव्य साकेत धाम में पहुँच कर श्रीराधवजू के दिव्य विहार का आनन्द लूटेगा।

गायन्ति रामनामानि कर्म कुर्वन्ति चाखिलम्।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।

वहीं यह भी कहा गया है कि जो अन्यान्य साधन छोड़कर नाम जपता है वह चाहे किसी भी प्रकार से जपे वह बिना श्रम के ही आदरपूर्वक परात्पर श्रीसाकेतधाम को जायगा हो।

येनकेन प्रकारेण नाममात्रैक जल्पका:।
श्रमं विनैव गच्छन्ति परे धाम्नि समादरात।

वहीं यहाँ तक कहा गया है कि श्रीरामनाम के अनुरागी जापक के दर्शन से जो स्नेहार्द हो जाता है, वह भी परमानन्द सागर श्रीरामधाम को जायगा।

नामयुक्ताञ्जनान् दृष्ट्वा स्निग्धो भवति यो नर:।
स याति परं स्थानं परमानन्दसागरम्।।

श्रीसौर संहिता में कहा गया है कि दिवारात्रि श्रीरामनाम ही का कीर्त्तन करना चाहिये। सब सारो के सार तथा मोदनिधान तो यही है। जन्मजन्मान्तरों के पाप जनित दु:ख नामजप से मिटते हैं। सब धर्मों के फल मिल जाते हैं। अन्त में जापक परम धाम को प्राप्त करता है।

श्रीराम नाममनिशं परिकीर्त्तनीयं वर्तेतमोद सुनिधानमशेष सारम्।
जन्मार्जितानि विविधान्यपहाय दु:खान्यत्यन्त धर्म निचयं परधाममेति।।

हिरण्यगर्भ संहिता में श्रीअगस्त्य जी श्रीसुतीक्ष्णजी से कहते हैं। श्रीरामनाम अभिराम को विवश होकर भी उच्चरण करे तो वह सभी पापों से मुक्त होकर श्रीसाकेत जाता है।

''अभिरामेति यन्नाम कीर्त्तितं विवशाच्च यैः।
तेऽपि ध्वस्ताखिलाघौघा यान्ति रामास्पदं परम्।।

मार्कण्डेय संहिता का वचन है कि श्रीरामनाम में कृपादि अनंत कल्याण गुणागण भरे हैं। श्रीरामनाम ही सदा जीवों के शोक हरने में समर्थ हैं। संसार से तारनेवाले भी यही हैं। अतः हम तो भई इन्हीं श्रीसीतारामनाम का जप करते हैं। जिन्हें अन्य नामों में, अन्य मंत्रों में रुचि हो उन्हें मै मना नही करता। अपनी–अपनी रुचि न्यारी–न्यारी होती ही है सबकी।

''कृपादि गुण सम्पन्न सर्वदा शोक हारकम्।
तारकं संसृतेनित्यं रामनाम भजाम्यहम्।।''

श्रीनारायण रहस्य नामक तन्त्र ग्रन्थ में कहा गया है कि श्री रामनाम ही तीनों लोकों के प्राणियों को अपने कीर्त्तन से तारते रहते हैं अतः श्रीरामनाम स्वरूप को हम बार–बार प्रणाम करते हैं।

''यस्तारयति भूतानि त्रिलोकी संभवानि च।
स्वनाम कीर्त्तनेनैव तस्मै नामात्मने नमः।।''

बामनतन्त्र में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर न जाने कितने मनुष्य उत्पन्न हुए और कितने मरे। किन्तु निःसन्देह तर गये वही जिन्होंने श्रीरामनाम का कीर्त्तन किया।

''पृथिव्यां कतिधा लोका न जाताः कति नो मृताः।
मुक्तास्तेऽत्र न संदेहो रामनामानुकीर्त्तनात्।।''

श्री हनुमन्नाटक में श्री हनुमतलालजी श्रीअगस्त्यजी से कहते हैं कि बैठा हो, सोया हो, चाहे कहीं भी रहें श्रीरामनाम स्मरण करते रहने से वह श्रीसाकेत को ही जायगा।

''आसीनो वा शयानोवा तिष्ठतो यत्रकुत्र वा।
श्री रामनाम संस्मृत्य याति तत्परतमं पदम्।।''

नाम तो अनन्त तामे रामनाम भूप है।
नारायण आदिनाम कहे कोटि बार तऊ
तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है।
और नाम देत भुक्ति मुक्ति विष्णु लोक लगि
रटे रामनाम देश पावै रस रुप हैं।।
परम पियूण और मत अंधकूप है।
(श्री) युगल अनन्य साँच बदत बजाय बात
नाम तो अनंत तामें रामनाम भूप है।।

अब हम पुराणों के प्रमाण द्वारा सिद्ध करेंगे कि मुक्ति श्रीरामनाम से ही सुलभ होती है। श्रीक्रियायोगसार नामक पुराणखंड में कहा गया है कि कोटि कोटि जन्मों तक अत्यन्त साधनकष्ट उठाने पर भी सुमुक्ति अर्थात, श्रीधाम की प्राप्ति संदिग्ध बनी रहती है सो श्रीरामनाम से सहजही मिल जाती है। अब आपही बताइये कि श्रीरामनामजप से बढ़कर और कौन साधन है?

''अत्यन्त दुःख लभ्योपि सुमुक्तिर्जन्म कोटिभिः।
लभ्यते रामनाम्नैव कर्मास्ति किमतः परम्।।

श्रीवृहद्विष्णुपुराण में कहा गया है कि विकारी हो, अधिकारी हो, अत्यन्त सब दोषों का भाजन ही क्यों न हो, श्रीसीतारामनाम का कीर्त्तन करने से परम साकेतधाम जायगा ही। अतः वेदोकी सम्मति में नाम कीर्त्तन से बढ़कर कोई साधन नहीं है। सब सिद्धान्तों का सार निचोड़ नाम कीर्त्तन ही है। इससे मुक्ति सबों के लिए दुर्लभ है।

''अविकारी विकारीवा सर्व दोषैक भाजनः।
परमेशपद यान्ति सीतारामनुकीर्त्तनात।।''
नातः परतरः पायो दृश्यते सम्मतौ श्रुतौ।
सारात्सारतमं शुद्धं सर्वेषां मुक्तिदं परम्।।

श्रीनृसिंहपुराण में आया है कि जो पापी मनुष्य नरक रूप है, जीते हुए भी मृतक तुल्य मानने योग्य है, वैसी नारकी की भी श्रीरामनामकीर्तन से मुक्ति हो जाती है।

''नरका ये नरा नीचा जीवन्तोऽपि मृतकोपमः।
तेषामपि भवेन्मुक्ती रामनामानुकीर्त्तनात्।।'

वृहन्नारदीयपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम जापक सदा कृतार्थ रूप हैं, नाम प्रभाव से शुद्ध हो चुके हैं, श्रीनामसरकार उन्हें सभी उपद्रवों से रक्षा करते रहेंगे और अन्त में श्रीनाम के प्रभाव से ही परमधाम अर्थात् श्रीसाकेत को भी प्राप्त कर लेंगे।

'' ते कृतार्थाः सदा शुद्धाः सर्वोपाधिविवर्जिताः।
नाम्नः प्रभावमासाद्य गमिष्यन्ति परं पदम्।।''

श्रीनारदीयपुराण में श्रीसूतजी श्रीशौनकजी को उपदेश होते देते हुये कहते हैं कि हे विपेन्द्र, श्रीरामनाम स्मरण करने से, सभा क्लेश मिट जाते हैं श्रीनामाप्रताप से उन्हें कोई विघ्न नहीं व्यापता तथा अन्त में मुक्ति पाते हैं।

राम संस्मरणच्छीघ्रं समस्तक्लेशसंक्षयः।
मुक्तिं प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न वाधते।।

श्रीविष्णुपुराण में कहा गया है कि श्रीरामनाम निर्गुण सगुण सभी ब्रह्मरूपों के भी ईश्वर हैं। आदि देव भी यही हैं, भूमंडल में वह जीव धन्य है जो इन रामनाम का सतत स्मरण करते रहते हैं। श्रीनाम निर्मल अनपायिनी, परमानन्द दायिनी भक्ति को देने वाले हैं तथा यत्नपूर्वक जपने पर इनसे परम मुक्ति श्रीसाकेत प्राप्ति भी हो जाती है।

श्रीरामनाम सकलेश्वरमादिदेवं धन्याजना भुवितले सततं स्मरन्ति।
तेषां भवेत्परममुक्तिप्रयत्नतस्तथा श्रीरामनाम भक्तिरचला विमलाप्रसादा।।

श्री रहस्य नाटक का वचन है कि श्रीरामनाम जपने पर अत्यन्त मीठे स्वाद को सरसाने वाले हैं। मंगलों के भी मंगल कर्त्ता हैं। समस्त वेद रूपी लता जाल के यह चिन्मय फल है। श्रद्धा से या अश्रद्धा से जो एकबार भी इनका उच्चारण कर लें, वह श्रीरामनाम के प्रभाव से संसार से पार उतर जाता है

मधुर मधुरमेतं मङ्गलं मङ्गलानां सकल निगमवल्ली सत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा स भवति भवपारं रामनामानुभावात्।।

जो मोक्ष श्रीराम से भिन्न अन्य उपाय से प्राप्त हुआ है, वह मोक्ष भी विधवा स्त्री की भाँति श्रीरकार मकार रूपी सौभाग्य सूचक कर्णफूल से विरहित एवं अशोभित है। ऐसा मोक्ष व्यर्थ है। उसी रहस्य नाटक में कहा गया है कि चित्त रूपी भ्रमर को मधुर प्रेम मकरन्द पान करने के लिए दोनों नामवर्ण दो प्रेममकरन्द परिपूर्ण कमल हैं। दोनों को सुनकर कानों को इतना स्वाद मिलता है मानों सुधा पान कर रहे हों। श्री सरस्वती के ये दोनों नामवरण दोनों नयन हैं। इनके बिना श्री गिरा देवी भी अन्धी हैं। महामोह रूपी सघन अन्धकार को भगाने के लिए दोनों वरण सूर्य चन्द्र से सभी अधिक समर्थ हैं। वेद सिन्धु को मथकर काढ़े गये दोनों कौस्तुभमणिवत हैं। मुनिमानस में विहरने वाले दोनों राजहंस हैं। ऐसे सुखदायक श्री रामनामाभिराम में दोनों मधुर मनोहर वत्ण राज हैं।

येतोऽले: कमलद्वयं श्रुतिपुटी पीयूषपूरद्वयं वागीशा नयनद्वयं घनतमश्वणडांशु चन्द्रद्वयम।
छान्दसिन्धु मणिद्वयं मुनिमन: कासार हंसद्वयं मोक्षश्री श्रवणोत्पलद्वयमिदं रामेति हवर्णद्वयम्।।

श्री प्रेमार्णवनाटक का आदेश है कि यदि किसी को परात्पर ब्रह्म धाम की प्राप्ति की स्वच्छ अभिलाषा हो, तो उसे सभी अन्यान्य साधनों की आशा छोड़कर, मंगलमय श्रीरामनाम का स्मरण करना चाहिए।

सर्वाशां संपरित्यज्य संस्मरेन्नाम मङ्गलम्।
यदीच्छा वर्तते स्वच्छा प्राप्ति रूपा परात्परा।।

कूर्मपुराण में भगवान शंकरजी भगवती पार्वती से कहते हैं हे कल्याणी, श्री रामनाम गोप्य से भी गोप्य तत्व हैं। मेरे तो जीवन सर्वस्व ही हैं। इनके जपसे विलक्षण भोग तथा मुक्ति मिलते हैं।

गोप्याद् गोप्यतमं भद्रे सर्वस्वं जीवनं मम।
श्रीरामनाम सर्वेशमद्भुतं भुक्ति मुक्तिदम्।।

ब्रह्माण्ड पुराण में श्री धर्मराज स्वयं परमप्रभु श्री रामचन्द्रमाजू से कहते हैं कि हे राजन्! आपका नाम कीत्तर्न सुनकर, राक्षस, भूतप्रेत गुप्तचर वर्ग सभी भाग जाते हैं। यदि उपद्रव करने

पर तुल गये, तो उनका नाश भी हो जाता है। कीर्त्तन कार अन्त में आपके साक्षात् परम धाम भी साकेत को जाते हैं।

श्री यजुर्वेद में आया है श्री राघवजी के नाम का परम सुयश फैला है। श्रीराम नाम जाप से ही मुक्ति हो जाती है।

'यस्य नाम महद्यश: रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति।'

श्री ऋग्वेद का मंत्र कहता है, परब्रह्म स्वरूप ज्योतिर्मय श्रीराम नाम की उपासना मुक्ति चाहने वालों को करनी चाहिए।

ॐ परं ब्रह्म ज्योतिर्मय नाम उपास्यं मुमुक्षुभि:।'

श्री सामवेद का आदेश है कि जिस श्रीराम नाम में ॐ कार प्रतिष्ठित है, उसी रामनाम का ध्यान करना चाहिए, जो संसार से पार जाना चाहते हैं उनके लिये।

'ॐमित्येमकाक्षरं यस्मिन्प्रतिष्ठितं तन्नामध्येयं संस्मृति पारमिच्छो:।'

भगवान श्री कृष्ण श्री आदि पुराण में श्री अर्जुन जी से यह सिद्धान्त बताते हैं कि श्री राम नाम स्मरण के प्रभाव से ही परमपद श्री साकेत प्राप्त होता है, मैं सत्य सत्य कहता हूँ। श्री नाम फल को मैं भी यथातथ्य नहीं जानता।

श्री रामस्मरेणनैव नरो याति पराङ्गतिम्।
सत्यं सत्यं सदा सत्यं न जाने नामजंफलम्।।

इस प्रसंग में भी जो मुक्ति, परमधाम की बात कही गई, उन सबों से नित्य अयोध्या अर्थात् साकेत की प्राप्ति ही माननी चाहिये। इस सम्बन्ध में श्री बड़े महाराज जी के श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका से नीचे उद्धृत किया हुआ कवित्त विचारणीय है।

'भजै जौन जाको तौन पावै ताको धाम है।
और को उपासक न और के सदन जात
बात वेद विदित विचारिये ललाम है।
सीताराम सेवै तौन लेवै श्री अवधधाम
अचल मोकाम हीन काल कर्म काम है।।
हुजिये अनन्यमति खाौंचि इत उत सन
पूजिये हमेश इष्ट गुन गन ग्राम है।
(श्री) युगल अनन्य तिल भरि हूँ न संक यामें
भजै जौन जाकौ तौन पावै ताको धाम है।।

श्री नामाभ्यास से परमानन्द श्री साकेतधाम की प्राप्ति के लिए क्या क्या साधन करना होगा? श्री बड़े महाराज कहते हैं कि कामना त्यागकर, केवल एक पहर मन लगाकर वैखरी वाणी में नाम रटले। शीत घाम की सुरक्षा में लगा रहे, माता–पिता पुत्र कलत्र की ममता में लिपटा रहे, तोभी उसकी संसार बाधा मिट जाएगी।

रटै मन लाय नाम याम एक, काम त्यागि
पावैं परमेश परानन्द धाम जीव जड़।
सीत बात घाम तात मात सुत नात वाम
बीचहू वितावै तऊ मिटैगो उपाधि बड़ ॥१०२॥

श्री नारायण रहस्य नामक मंत्र शास्त्र में स्वयं श्री मन्नारायण देव देवर्षि नारद जी को बता रहे हैं कि जैसे उग्रवीर्य औषधि में यह अमोघ प्रभावशाली वस्तु गुण होता है कि उसे जानकर या अनजान में चाहे कैसे भी खालो, तो उसका यथागुण असर होगा ही, उसी भाँति श्री राघव नाम का अचूक प्रभाव है कि चाहे किसी भाँति मुख से नामोच्चरण हुआ, तो उसे अनायास योगिदुर्लभ श्री साकेत धाम की प्राप्ति अवश्य ही होगी।

यथौषयधं श्रेष्टतमं महामुने अजानतोऽप्यात्मगुणं प्रकुर्वते।
तथैव श्री राघवनामतो जना: परंपदं यान्त्यनसायसत: खलु॥

अत: जो नाम तीनों लोकों के प्राणियों को अपने कीर्त्तन मात्र से तार देते हैं, उन नामको भगवान नारायण बार—बार नमस्कार करते हैं।

यस्तारयति भूतानि त्रिलोकी सम्भवानि च।
स्वनाम कीर्त्तने नैव तस्मै नामात्मने नम: ॥

श्री ब्रह्म रहस्य का वचन है कि सभी आचार विचार से हीन, ताप क्लेशादिका भागी भी, यदि श्री राम नाम का कीर्तन कर लेता है, तो वह सनातन ब्रह्म 'राम अनादि अवधपतिसोई।' के पास पहुँच जाता है।

सर्वाचार विहीनोऽपि ताप क्लेशादि संयुत:।
श्री रामनाम संकीर्त्य याति ब्रह्म सनातनम्॥

श्री विष्णु रहस्य में कहा गया है कि श्री राम नाम का निरन्तर जप करने वाला, क्षण मात्र में अज्ञानवश कृत कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। अन्त में कोटि कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान मंगलमय श्री राम धाम को प्राप्त होता है।

यस्य नाम सततं जपन्ति येऽज्ञानकर्मकृत बन्धनं क्षणात्।
सद्य एव परिमुच्य तत्पदं याति कोटि रवि भास्वरं शिवम्॥

श्री आश्वलायन तन्त्र में कहा गया है सभी प्रकार के धर्मों से वर्हिभूत हो जाने वाला अधमनर, परात्पर ब्रह्म श्री रघुनाथ जी के नामों का कीर्त्तन करता है, तो वह भी उनके परमधाम को प्राप्त करेगा।

ये कीर्त्तयन्ति नामानि रामस्य परत्मात्मन:।
सर्व धर्म वहिर्भूतास्तेऽपि यान्ति परं पदम्॥

वहीं कहा गया है कि स्वप्न में भी श्री रामनाम का स्मरण करने वाला, मुक्त हो जाता है। जो प्रीति पूर्वक श्री रामनाम का कीर्त्तन करते रहते हैं, उन्हें कौन—कौन दुर्लभ फल मिलेगा इसका पता किसी को नहीं है।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु स्मरणान मुक्तिमाप्नुयात।
प्रीत्या संकीर्त्तयेद्यस्तु न जाने किं फलं लभेत्।।

श्री नारायण तन्त्र में कहा गया है कि सर्वोपर दो अक्षर वाले श्री राम नाम का जो निरन्तर जप करते हैं, वे भागवतों में सर्व श्रेष्ठ हैं, सुखमय हैं सर्वदा पूज्य हैं। सुत कलत्र आदि ग्राहों से तथा तृष्णा रूपी जल से परिपूर्ण भवसमुद्र से पार उतर कर, वह श्री राघव जू की सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

ये गृणान्ति निरन्तरं परपदं रामेति वर्णद्वयं
ते वै भागवतोत्तमाः सुखमया पूज्यास्तु ते सर्वथा।
ते निस्तीर्य भवार्णवं सुत कलत्राद्यैस्तु नक्रैयुतं
तृष्णा बारि सुदुस्तरं परतरे सायुज्यमायान्ति वै।।

श्री रामनाम सरकार मुक्ति देने में अनधिकारी का विचार नहीं करते, ब्राह्मण हो, चाहे राक्षस हो, पापी हो या धार्मिक हो, श्री राम नाम का उच्चारण कर लेना चाहिये। वह संसार बन्धन से मुक्त होगा ही। यह प्रमाण श्री भुशुण्डि रामायण का है।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
राम रामेति यो वक्ति स मुक्तो भववन्धनात।।

मन शांत चाहै तो एकांत रहै इन्द्री रोकि
अवलोकि नाशा भौंह बैठि प्रान साधै जू।
साधु होन चाहै तो सरल रहै सबही सो
गहै ज्ञान विरति भगति निरूपाधै जूँ।।
प्रभु प्रेम चाहै तो सुसंग करै प्रेमिन को
सुनै कथा गुन रूप ध्यान नेह नाधै जू।
तरन जो चाहै तो सरन सीताराम होय
तारक सुमंत्र रामनाम अवराधै जू।।
धारत जे पतित पुनीतता विरुद नित्त
तेई प्रभु कृपा चित्त धारिहैं पै धारि है।
मारत है काल जाके बल महाबलिन को
तेई काम मलिन को मारिहै पै मारि है।।

जारत है जग जाके जाप रुद्र रस रङ्ग
ताको तेज मेरे पाप जारिहैं पै जारिहैं।
तारत है जो सुनाय काशी ईश सोइ मोहि
तारक श्री रामनाम तारिहै पै तारि हैं।।

नाम जप से श्री साकेत प्राप्ति का दृष्टान्त

महात्मा बजरंगदास जी का जन्म विक्रम सम्बत् १८५५, चैत्र शुक्ला नवमी के दिन, अयोध्या से उत्तर अट्ठारह कोश पर स्थित एक छोटे से गाँव में हुआ था। पिता का नाम श्री गोविन्दप्रसाद और माता का नाम श्रीमती सावित्री देवी था। बाल्यावस्था से ही इनमें जन्मजात बैराग्य के लक्षण दीख पड़ते थे। वैराग्य के कारण ही विद्याध्ययन भी अधिक नहीं कर पाये। गृहबंधन में जकड़ने के लिए माता–पिता ने इनका अल्पावस्था में ही विवाह कर दिया। सावन भादों को बढ़ी हुई बेगवती नदी का प्रवाह कौन बाँध सकता है? अभी बीस वर्ष के भी नहीं हुये थे कि रातों रात घर से छिप कर भाग चले। सद्गुरु की खोज में जहाँ तहाँ भटकते हुये, आप प्रभु प्रेरणा से श्रीगोकर्णनाथ धाम के पास ही कङ्कोड़ी चौकी नामक एक श्री रामानंदी संत के आश्रम में पहुँचे। महात्मा कमलदास स्थान धारी होकर भी वीतराग भजनानंदी संत थे। उन्हीं से आपने पंच संस्कार पूर्वक वैष्णवी दीक्षा ली। श्री गुरुदेव से भजन भावना की रीति सीखकर, वहीश्री गुरु सेवा में तत्पर रहने लगे। घरवाले इन्हें ढूँढ़ते ही थे। किसी प्रकार वहाँ आपका पता पाकर पहुँचे और इन्हें घर लौट चलने को बाध्य करने लगे। उस विघ्न के मारे श्री गुरु आज्ञा लेकर आप तीर्थाटन को निकल पड़े। श्री द्वारका धाम पहुँचे। वहाँ से सिद्धपुर, आबू, मथुरा, वृन्दावन, चित्रकूट, प्रयाग, काशी, गया आदि तीर्थों का दर्शन कर श्री अयोध्या पधारे। यहाँ कुछ दिन सानन्द रहकर, श्री जनकपुरी जाकर दर्शन किये। संयोग वश श्री वद्रीनारायण जाने वाले कुछ सन्तों का संग पाकर, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, बद्रीनारायण होते हुए पुनः द्वारका पधारे। लौटती बार डाकोर तथा सिद्धपुर होते हुए अकेले धरणीधर भगवान के दर्शनार्थ चल पड़े। भगवान धरणीधर के दर्शन कर, गुजरात की जनता को निश्छल अहिंसक भगवत भागवत प्रेमी जानकर, वहीं एक नहेड़ी नामक ग्राम के समीप एक रमणीय झाड़ी एवं समीप ही निर्मल जलाशय देख वहीं झोपड़ी लगाकर, भजन करने लगे।

लगभग बीस वर्ष की अवस्था में आपने गृह त्याग किया था, पांच वर्ष के लगभग तीर्थाटन में लग गये। नहेड़ी में एक गोभक्त ब्राह्मण नंदीराम से आपको सत्संग सम्बन्ध से मैत्री हो गई। गोसेवा में जब नन्दराम जी स्वयं असमर्थ हो गये, तो बाबा बजरंगदास जी ने उनकी गो सेवा सम्हाली। तब तक आपकी अवस्था तीस वर्ष की हो चुकी थी। उसी समय आपका असमायिक मृत्युयोग आया। ज्वरावेश के कारण एक रात आपका पंच भौतिक शरीर चेतना शून्य हो गया। देवगण विमान में बैठकर, आपको देव लोक ले गये। एक रमणीय बागीचे में इन्हें बैठाकर, देवगण जाने लगे। बाबा ने पूछा, आप लोग कौन हैं? मुझे कहाँ लाये हैं? मुझे यहाँ कब तक रहना है? देवताओं ने उत्तर में कहा हम लोग देवगण हैं। इस देवलोक में आप लाये गये हैं और हमलोग

ठीक—ठीक नहीं कह सकें कि आपको यहां कब तक रहना होगा। आपने कहा मुझे देवलोक का निवास पसंद नहीं है। मैं तो अपने इष्टधाम श्री साकेतपुरी को जाऊँगा। कृपया आप लोग मुझे वहाँ पहुचावे। आपकी बात सुन, देवताओं ने आपस में परामर्श कर, कहा आप कुछ देर यहीं रहे। थोड़ी देर में आपको संतोषप्रद उत्तर मिलेगा। यहाँ प्रश्न यह होता है कि एक नैष्ठिक सदाचार परायण रामभक्त मरणोपरान्त देवलोक लाये ही क्यों गये? उतर सीधा है। बाबा ने श्री साकेत प्राप्त करने वाले श्री राम नाम का अभ्यास किया नहीं। आपके साधन में प्रधान रूप से अब तक तीर्थाटन और गौसेवा थी। इन कर्मों का फल स्वर्गही तो है। श्री गोस्वामिपाद कहते हैं—

''न मिटे भव संकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो।''

''बिनु विश्वास भगति नहीं तेहि बिन् द्रवहि न राम''

अपने इष्टाराधना में कट्टर अनन्य हुये बिना शरणागति भी नहीं बनती है। भक्ति प्रपत्ति बाबा से सधी नहीं थी। नामजप हुआ नहीं था। आखिर साकेत मिले भी तो कैसे?

हाँ तो, कुछ देर में देवगण लौटकर आये और बाबा को आदेश सुनाया कि आपकी आयु १२ वर्ष और बढ़ा दी गयी है। पुनः मृत्यु लोक में जाकर भगवद्भजन कीजिये, तब भजन के प्रभाव से साकेत पाइयेगा। यहाँ आपके आश्रम पर भक्तगण आपके दिवंगतशव की रातभर जग कर सुरक्षा कर रहे थे। प्रातः की प्रतीक्षा में अब तक आपका मृतसंस्कार नहीं हो पाया था। इतने ही में बाबा धीरे—धीरे सांस लेने लगे और कुछ देर मे उठ बैठे। आपके पुनर्जीवन पर भक्तों के हर्षका ठिकाना नहीं रहा। अपने भक्तों को देव लोक का सारा वृत्तान्त सुनाया। लोग बाबा को बारंबार नमन कर, अपने—अपने घर चले गये।

पुनर्जीवन मिलने पर अब बाबा श्री साकेत प्राप्ति के तीव्रसाधन में तत्पर होना चाहते हैं। देवताओं ने भजन करने का आदेश दिया सही, पर भजन करे भी तो कैसे और क्या? ऊहापोह में कुछ निश्चय पर नहीं पहुँचने के कारण व्याकुल हो रहे थे कि श्री हनुमानजी कृपा कर आपके सामने साक्षात् रूप से प्रगट हो गये। आपको नामाभ्यास की युक्ति बतायी। पुनः श्री हनुमतलाल जी अन्तर्धान हो गये। तब से आप दिन रात जगकर, अथक रूप से श्रीसीता राम नाम रटन में तत्पर हुये। गाँव का भक्त थोड़ा सा गोदुग्ध आपको दे जाता था, चौबीस घंटे में एक बार दूध लेकर आप नामजप दिन—रात करने लगे। जीवन भर पैर पसारकर सोने का नाम नहीं लिया। रात्रि में निद्रा तंग करे तो टहलने लगते थे। कभी एक इमली के वृक्ष में चोटी बांधकर बैठते। ऊँधने पर चोटी खींच जाय दुखने लगे पुनःऊँघाई से सावधान होकर नामजपने लगते थें। कुछ दिनों के बाद श्रीरामनाम के अनन्यप्रेमी भगवान शिवजीने आपको दर्शन दिया। आपने उनसे अपने इष्ट श्रीसीताराम जी के साक्षात् दर्शन का वरदान माँगा। भगवान शिव ने इनकी मनोकामना पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया और कहा यहाँ से थोड़ी दूर पर एक झाड़ी है वहाँ एक तालाब है। तालाब पर एक पीपल का वृक्ष है। वहीं रहकर नामाभ्यास में तत्पर रहो तुम्हें इष्टदर्शन अवश्य होंगे। श्रीशिवजी के बताये हुये स्थान को ढूँढ़ निकाला। यहीं कटाव नामक आपका भजनाश्रम बना। भजनके

द्वारा आपको इष्टमिलन की तीव्र विरहोत्कंठा जागी। साथ साथ आपका संसार से तीव्रवैराग्य और प्रचंड विरह देख प्रभु ने कृपापूर्वक प्रगट होकर सपरिकर दर्शन दिया और बहुत भाँति से आपको प्यार किया।

आज आपकी देवदत्त आयु के बारहोवर्ष पूरे हुये। माथे में तीव्र दर्द उठा। प्रार्थना करने पर दर्द शांन्त हो गया । फिर बारह वर्ष अखंड नाम जप के प्रभाव से आपको पुन: दीर्घ जीवन मिला। आप स्वयं तीव्र नाम साधना पूर्वक अपना जीवन तो व्यतीत ही कर रहे थे, प्रभु आज्ञा से आपके दर्शनार्थी समागत भक्तों को भी रामरटन में लगाकर उनके लौकिक तथा पारलौकिक मंगल बनाने में तत्पर रहनें लगे। आपके सम्पर्क में आने वाले वहाँ आसपास की जनता में नाम लगनका अप्रत्याशित रूप में प्रचार और प्रसार हुआ। देवदत्त आयु के पश्चात् भी आप अड़सठ वर्ष और जीवित रहे। अंत में सम्वत १९९५ की माध तृतीया को आप अपने प्रेमी भक्तों एवं शिष्यों को नाम जपका उपदेश देकर भौतिक शरीर त्याग, सुन्दर सच्चिदानन्दमय दिव्य रूप धारण कर श्रीसाकेत धाम के नित्य निवासी बन गये।

परलोक संवारने के निमित्त नामजप

पूज्यपाद श्रीहरिबाबा कल्याण के भगन्नामांक पृ०७५ में लिखते हैं किसी सत्संगी मित्र ने एक बार मुझसे कहा कि मेरे परलोकवासी ताऊ बड़े कष्ट और दुर्दशा में है। मैने उत्तर में कहा कि यहां कोई भय नही आओ! हमसब मिलकर उनके निमित्त नामसंकीर्त्तन करें। उसी समय बहुत से पुरुष मिल गये और लज्जा को त्यागकर ताली बजाते हुए स्वर से नामसंकीर्त्तन करने लगे। प्राय: एकघंटा नाम कीर्त्तन होता रहा। उसी रात को फिर उन्होंने स्वप्न में देखा कि वे पूर्णरूप से आनंद में है। कल्याण सम्पादक भाई श्रीहनुमानप्रसाद पोछार उसी पृष्ठ की पादटिप्पणी में इस घटना के उल्लेख के साथ–साथ निजी अनुभव भी मिलते हैं। 'प्राय: इसी प्रकार का मेरा भी एक समय का अनुभव है– सम्पादक।।'' एक और सत्संगी मित्र के पिता जी का कुष्ठ रोग से देहांत हुआ। उनके पिताजीकी नाम में सामान्य श्रद्धा थी, वे कोई उच्चकोटि के भगवदभक्त नहीं थे, वरन किसी अंश में उनकी साधु संतों पर श्रद्धा थी, पिताजी की सद्गति के निमित्त शास्त्रोक्त विधि करने की सत्संगी मित्र की सामर्थ्य नहीं थी। वे बड़ी चिन्ता में पड़े, अंत में उनके मन में आया कि नाम संकीर्त्तन से बड़ा तो कोई यज्ञ नहीं है, अतएव सत्संगियों ने मिलकर ताल बजाते हुये उच्चस्वर से बड़े जोश के साथ हरिकीर्त्तन आरंभ किया। संकीर्त्तन करते ही उनमें से दो तीन सत्संगियों को यह भान हुआ कि पिताजी विमान पर बैठे बैकुण्ठ जा रहे हैं। इस घटना से नाम में सबकी श्रद्धा बढ़ गयी। इस घटना वर्णन के साथ तत्कालीन कल्याण संपादक भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार वहीं पाद टिप्पणी में अपना विचार निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त करते हैं।

'' कोई यह न समझे कि शास्त्रोक्त श्राद्ध पिडदानादि क्रिया नहीं करनी चाहिये, वास्तव में भगवन्नाम इतनी बहुमूल्य और अलौकिक वस्तु है कि जिसके साथ इन लौकिक क्रियाओं की किसी

अंश में भी तुलना नहीं हो सकती। मरते हुए प्राणी को नामश्रवण करवाना तो प्रत्येक कुटुम्बों का कर्त्तव्य ही होना चाहिये, सबसे बड़ी सेवा यही होती है, क्योंकि इसी से जीव का परमकल्याण होता है। मरने के बाद भी अन्यान्य शास्त्रोक्त क्रियाओं के साथ साथ नाम–संकीर्त्तन किया जाना प्राणी के लिए निःसंदेह अत्यंत हितकर है।

आपको किसी भी बहुत पहले मरे हुये, अथवा थोड़े दिन पूर्व दिवंगत आत्मीय सम्बन्धी की सद्गति के निमित्त कुछ करना हो, तो आप यथासंभव उनके लिए अष्टयाम, नवाह्नमास–व्यापी वर्षव्यापी अखंड श्री राम नाम का कीर्त्तन करवायें। कीर्त्तन अर्थाभाव से न बने, तो आप स्वयं उनके निमित्त नाम जपिये। ऊपर के दृष्टान्तों से तथा इस तुच्छ लेखक के अनुभव से भी दिवंगत व्यक्ति के नाम से जप या कीर्त्तन उन्हें अवश्य भवद्धाम की प्राप्ति करायेंगें, चाहे वे नरक में या किसी योनि में भटक गये हों।

श्री जानकी रमण में प्रीति भक्ति

श्री ब्रह्मवैवर्तपुराण का प्रसंग है। भगवान वेद व्यास जी देवर्षि नारदजी से कहते हैं कि यदि परमानन्ददायिनी राघव प्रीति पाना चाहते हैं, तो आपको उनके नाम का कीर्त्तन करना चाहिए।

यदीच्छेत्परमां प्रीतिं परमानन्ददायिनीम।
तदा श्री राम भद्रस्य कार्यं नामानुकीर्त्तनम्।।

श्री मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यास देव अपने शिष्यों को समझा रहे हैं। श्री राम नाम वेदों के सार सिद्धान्त हैं। सब सुख के एक मात्र दाता हैं। श्री रामनाम को ही स्वयं परमब्रह्म समझना। नामजप करने वाला चाहे जो हो, सबों को दिव्य प्रेम देने वाले हैं।

वेदानां सार सिद्धान्तं सर्वसौख्यैक कारणम्।
रामनाम परब्रह्म सर्वेंणां प्रेमदायकम्।।

श्री लघुभगवत में कहा गया है कि नाम कीर्त्तन से सभी परमार्थ बन जाते हैं। स्वस्वरूप परस्वरूप का सरसज्ञान चाहिये, विषयों से तीव्र वैराग्य चाहिये, परात्पर ब्रह्म श्री जानकी रमण में प्रीति चाहिए, तो परमानन्ददायक सर्वविलक्षण श्री राम नाम आपको सब देंगे।

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्भुतम्।।

श्री भारत विभाग नामक पुराण में कहा गया है श्री रामनाम प्राण यात्रा के राहखर्च हैं, संसार के जन्ममरण रूपी रोग को छुड़ाने की औषधि है, दुःख शोक से रक्षा करने वाले हैं। योगशास्त्र कथित दस प्रकार के अन्तर्नादों में महानाद तो परधाम से ही होता है, उसे भी आप नाम जपकर सुन सकते हैं। श्री साकेत प्राप्ति महामोक्ष कहाता है, वह भी श्री रामनाम देने वाले हैं। मधुर उपासना वाली मधुराप्रीति चाहिये, तो वह भी श्रीराम ही देंगे और परमानन्द तो देंगे ही।

प्राणप्रयाण पाथेयं संसारव्याधि भेषजम्।
दुःख शोक परित्राणं श्री रामेत्यक्षर द्वयम्।।
महानादस्य जनकं महामोक्षस्य हेतुकम्।
महाप्रेम रसेशानं महामोदमयं परम्।।

श्री याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि आप विषयों से तीव्र वैराग्य चाहते हैं, तो श्रीसीतारामनाम जपिये। ज्ञानविज्ञान से सम्पन्न होना चाहें, तो इसी नाम का कीर्त्तन कीजिए। निर्मल और परिपूर्ण भगवत्प्रीति तो आप चाहते ही होंगे, सो भी नाम कीर्त्तन से ही पाइयेगा ही।

ज्ञानविज्ञान सम्पनं वैराग्यं विषयेष्वनु।
अमलांप्रीति मुन्द्रिां लभते नामकीर्त्तनात्।।

श्री प्रेमार्वर्णवनाटक नामक आर्यग्रन्थ का प्रमाण है कि प्रेम वैचित्र्य दिव्य प्रेम ही में संभव है। यह प्रेम की उच्च स्थिति है। इस प्रेमस्थिति में श्री प्रियाप्रियतमजू के मिलन काल में भी कभी कभी वियोगसा आभास हो जाता है।

'रसिक अली संजोगहु में अतिनेह विरह के छंद।'

यह दुर्लभ प्रीतिस्थिति साधक भी पा सकते हैं। ऐसी प्रीति की प्राप्ति एक मात्र नाम कीर्त्तन से संभव है और होगा भी इसमें कोई संशय नहीं। श्रद्धा–विश्वास के साथ ध्यानपूर्वक निरन्तर नाम जपिये।

प्रेम वैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः।
तां लभेद्राम नाम्नस्तु जपाच्छीघ्रं न संशयः।।

श्री विचित्र नाटक नामक ऋषि प्रणीत प्रामाणिक ग्रन्थ का उपदेश है कि श्री रामनाम से बढ़कर न तो कोई साधन है, न कोई साध्य। नामानुराग होना परम सौभाग्य सूचक है। श्री जानकी रमणजू में सर्वोत्कृष्ट प्रेम नाम जप से ही प्राप्त होता है। नामजप तो अमृत का सार है स्वाद देने में तथा अनन्त वैभव का सार भी नाम ही को मानना चाहिए।

न नामतः साधनमन्यदस्तिवै न साध्य सौभाग्यमतः परंक्वचित।
परात्परं प्रेमप्रकाशकं वरं सुधासरं सारमनन्त वैभवम्।।

श्री आदि पुराण में श्री कृष्णार्जुन सम्वाद का सिद्धान्त है कि श्री राम नाम जप में लगे हुये, महाभाग, धन काम, विष भोगों को त्याग कर, भूमंडल में अनासक्त विचरा करते हैं, उन्हें अनपायिनी विशुद्धा तथा सर्व मङ्गला भक्ति एवं भक्ति में परमनिष्ठा प्राप्त होती है।

ये नाम युक्ता विचरन्ति भूमौ त्यक्त्वाऽर्थ कामान्विषयांश्चभोगान्।
तेषां च भक्तिः परमा च निष्ठा सदैव शुद्धाः सुभगा भवन्ति।।

श्रीवशिष्ठ रामायण का वचन है कि नाना प्रकार के तर्क–कुतर्क करने वाले अथवा वाद–विवाद में माथा पच्ची करने वाले तो मानों अन्धेरे गढ्ढे में जाकर गिर पड़े। कौन निकालेगा इन्हें? इनके

लिये एकही उपाय है कि ये श्रीरामनाम के आश्रित होकर नाम जपे। श्री नाम ही इन्हें उबारेंगे, नही तो परमार्थ भ्रष्ट तो हो ही गये। श्रीराम नाम से बढ़कर कोई भी सुललित मंत्र नहीं है। अन्त:करण को पावन बनाकर, दिव्य प्रेम उत्पन्न कर दें, ऐसी करामात केवल श्रीनाम ही में है।

श्री नाम थोड़े जप श्रम करने पर अनन्तगुण फल दे डालते हैं। समुन्नत सुख तो आपको नाम रटने ही से मिलेगा।

नानातर्क विवाद गर्त कुहरे पाताश्चयेजन्तव
स्तेषामेकमसंशय सुशरणं श्री रामनामत्मकम्।
मंत्र नास्ति यत: परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं
स्वल्पायास फलप्रदान परमं प्रोत्कर्ष सौख्यप्रदम्।।

श्री गोस्वामिपाद का भी यही आदेश है, देखिये श्री विनय प्रत्रिका ६७/५

'राम नाम प्रेम—परमारथ को सार रे। रामनाम तुलसी को जीवन आधार रे।।'

श्री बड़े महाराज स्वरचित सीतारामनाम सनेह वाटिका नामक ग्रन्थ में आदेश देते हैं कि आपको यदि प्राणप्रियतम श्री जानकी रमणजी के प्रति कृपासाध्य एवं परमपावन बनाने वाली पराप्रीति चाहिये तो, खूब शौक से नित्य हरे भरे श्री सीताराम नाम सरकार की ओर याचकता पूर्ण दृष्टि से अवलोकन कीजिए। यह जगत्प्रसिद्ध बात है कि श्री बाल्मीकि जी सीधा रामराम न जपकर उल्टे, मरा—मरा जपते जपते संसार में निरोग नि:शोक हो गये तथा परमानन्द का अनुभव भी करने लगे। श्री प्रेम रूपी वस्त्र पहन लें तो नित्य दिव्य आनन्द से हरे भरे बने रहेंगे। चित्तको वासना समूह शमन करेंगे, श्रीनाम सरकार। बड़े सरकार की आज्ञा है कि वाणी से आप श्री नामजप की झड़ी लगाकर जपिये, श्री नाम में क्या दिव्यानंद है, सो नामानुरागियों के संग बैठकर आप देख लीजिए।

पराप्रीति प्रीतम प्रसाद पावनेश हित, हेरिये हरित नाम शौक सरसाय के।
नामही जपत जग जाहिर जहान युग, अरुग असुग बाल्मीकि हरसाय के।।
हराहर रोज ओज चोज चित चाह सोज, समन समूह प्रेमपट परसाय के।
युगल अनन्य त्वरा ताकिये सुसंग बैठि, विमल बहार नाम बाग बरसाय के।।

हम श्री बड़े महाराज की विरचित एक और कवित्त वहीं से उद्धृत करेंगे।

सीतारामनाम मोद मंगल मुफीद धाम
अमल अदाग राग बाग दसावहीं।
पारावार प्रबल प्रवाह आह दाह बिन
पावन परम प्रेमपट परसावहीं।।

करुनानिधान जीव जान प्रानहूँ के प्रान
स्वाद सुखखान रोमरोम हरसावहीं।
युगल अनन्य अविलोक नींक नेह निज
विमल विचित्र बर बूंद बरसावहीं।।

शब्दार्थ:— मुफीद = हितकर। राग = अनुराग के पूर्ववाला प्रेम। पारावार = समुद्र। आह दाह बिन = शोक संताप मिटाने को। अविलीक = अ (नहीं) व्यलीक (झूठा) असत्य नहीं, अर्थात् सत्य यथार्थ। बरबूंद = प्रेमाश्रु।

राम सुधा घनश्याम निरंतर जापिये याजिये चाव चढ़ाये।
नाम महाधन पाय विभव बल पाइये प्रेम प्रवीन पढ़ाये।।
और से काम न नात कछु कल्पांत लौ वासना दाग कढ़ाये।
युग्म अनन्य अभीत अजय हिय होयगो नाम सनेह बढ़ाये।।

श्री बड़े महाराज का स्वानुभूत कथन है कि अपने इष्ट के प्रति प्रवल प्रेम एवं उनकी कृपा मैंने प्राप्त कर लिया है। केवल श्री सीताराम नाम का परिपूर्ण परत्व विचार कर नाम रटने से ही। श्रीसीताराम नाम की अचिन्त्य विभूति सभी लोक लोकान्तरों में व्याप्त है। श्रीनाम से भिन्न और कुछ दृष्टि में नहीं आता है। ऐसा समझकर हृदय में बड़ा ही हर्ष हो रहा है। श्री युगलकिशोर का दिव्य विहारचिंतन ही सर्वथा निर्विकार है, अत: विचार करने से किसी से रागद्वेष करना व्यर्थ है।

सीताराम नाम की विभूति अविचिन्त्य चारु
व्यापि रही निखिल निकेतन मझार है।
ताते भिन्न तिहू लोक नजर देखात नाहि
समुझि सुहीय हरणात एकतार है।।
कौन साथ रागद्वेण कीजिये विचारु नेकु
एक रघुनाथ को विलास अविकार है।
युगल अनन्य नाम पूरन परत्व पेखि
पायो प्रेम प्रवल प्रसाद स्वच्छ सार है। १५०।

श्री आदि पुराण में स्वयं भगवान श्री कृष्ण श्री अर्जुन से कहते हैं कि श्री रामनाम जप परायण सज्जन ही श्री राघव लाल के भावुक भक्त हैं। उनके दर्शनों से ही दर्शनार्थी को मधुर रस वाली भक्ति प्राप्त होती है।

राम नाम रता ये च ते वै श्री राम भावुका:।
तेणां संदर्शनादेव भवेद्भक्ति रसात्मिका।।
'रामनाम प्रेम परमारथ को सार रे।
रामनाम तुलसी को जीवन आधार रे।। (श्री विनय६७/५)

श्री नाम जप से ही दिव्यानन्द का अनुभव

श्री पद्मपुराण में देवर्षि नारद जी महाराज अम्बरीष जी को नामोपदेश देते हुए, बताते हैं कि सभी मनोरथों के पूर्ण करने वाले श्री राम नाम के कीर्त्तन करने से जापक संसार बन्धन को काटकर परमानन्द प्राप्त करता है।

कीर्तयन श्रद्धया युक्तो राम नामा खिलेष्टदम्।
परमानन्द माप्नोति हित्वा संसार बन्धनम्।।

मार्कण्डेय पुराण में श्री व्यास देव जी ने श्री सूत जी को बताया है कि जीभ से निरन्तर श्रद्धा सहित नाम रटो। थोड़े ही दिनों में परमानन्द होगा।

भजस्व सततं नाम जिह्वायां श्रद्धया सह।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते।।

श्री नृसिंह पुराण में श्री नारद जी ने महर्षि श्री याज्ञवल्क्य जी से कहा कि सर्वदा भक्तिपूर्वक श्री रामनाम के कीर्त्तन करने से स्वच्छ सौभाग्य एवं लोक विलक्षण सरस आनन्द अवश्यमेव मिलेगा।

सौभाग्यं सर्वदा स्वच्छं सरसानन्दमद्भुतम्।
अवश्यं लभते भक्त्या रामनामानुकीर्त्तनात् ।।

श्री वृहद विष्णुपुराण में महर्षि पराशर अपने शिष्य को बता रहे हैं कि भावना पूर्वक भी सीता राम नाम जपने से जापक परमानन्द के सुधासमुद्र में मग्न हो जाता है।

परानन्दे सुधासिन्धौ निमग्नो जायते जनः।
यदा श्री राम सन्नाम संस्मरेद्भावना युतः।।

श्री अङ्गिरस पुराण का वचन है कि जो जीभ से उच्चारण करके तथा मन से भी एक साथ श्री राम नाम का उच्चारण करते हैं, उनकी थोड़ी ही साधनश्रम से हृदय स्थित आनन्द की कली खिल जाती है।

आभ्यन्तरं तथा बाह्यं यस्तु श्री राम मुच्चरेत।
स्वल्पायासेन संकाशं जायते हृदि पङ्कजे।।

श्री बारहपुराण में श्री शिवजी भगवती उमा से कहते हैं कि प्रेम के अनन्य रसिकों के लिए श्री रामनाम नित्य ध्यान करने योग्य हैं। श्रवणपुट से सदैव पान करने योग्य हैं, जो सज्जन ज्ञान निरत है, उनके लिये श्री नाम तत्त्व ही ज्ञातव्य हैं। शुभाशुभ कर्मों की शान्ति भी श्री नाम से ही संभव है। परात्पर ब्रह्म श्री राघवजू का राम नाम सर्वेश्वर हैं, आनन्ददायक हैं। सबके सुहृद मित्र हैं। देवदानव से नमस्य है। श्री नाम परमानन्द की वृष्टि करने वाले घनश्याम हैं।

ध्येयं नित्यमनन्य प्रेमरसिकैः पेयं तथा सादरम्।
ज्ञेयं ज्ञानरतात्ममिश्च सुजनैः सम्यक् क्रियाशान्तये।।

श्री मद्रामपरेश नाम सुभगं सर्वाधिपं शर्मदम्।
सर्वेषां सुहृदं सुरासुरनुतं ह्यानन्दकन्दं परम्।।

श्री भारत विभाग में कहा गया है कि श्री राम नाम आनन्ददायक तत्त्वों के शिरमौर है, स्वयं परमब्रह्म है, परम प्रकाशमान है तथा सभी कारणों के भी आदि कारण हैं।

''आह्लादकानां सर्वेषां रामनाम परात्परम्।
परब्रह्म परंधाम परंकारणकारणम्।।''

श्री जावालि संहिता का वचन है कि श्री रामनाम का दिव्य प्रकाश हृदय में जगमगा रहा है, उसके लिये सर्वेश्वर ब्रह्म जन्य सभी दिव्यानन्द सुलभ हैं।

'' रामनाम प्रभा दिव्या यस्योरसि प्रकाशते।
तस्यास्ति सुलभं सर्व सौख्यं सर्वेशजं परम्।।

रहस्य नाटक नामक प्रामाणिक आर्षग्रन्थ का वचन है कि श्री राम नाम के स्मरण से जापक को जो दिव्यसुख न मिले, वह आकाश वाटिका के फूल के समान, वन्ध्या पुत्र के समान अनहोनी बात है। अर्थात् निश्चय सब सुख मिलेगा, न मिले तो आश्चर्य मानना।

''स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः।
तत्सुखं खेगतं पुष्पं वन्ध्यापुत्रमिवाद्‌भुतम्।।''

श्री सांखल्यस्मृति नामक धर्मशास्त्र में कहा गया है कि मंगलमय श्री राम नाम पापों का विनाश करके, परमानन्द अनुभव कराने वाले हैं। इनके जप से चित्तवृत्ति भी निरुद्ध हो जाती है। ऐसे नाम का भजन करना चाहिए।

''पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम्।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मङ्गलम्।।''

श्री रहस्यसार नामक ग्रन्थ में श्री मन्नारायण मुनियों को श्री राम नाम का उपदेश करते हुए, आदेश देते हैं कि श्री राम नाम परब्रह्म हैं। सभी आनन्दों के एक मात्र निलय हैं। नित्य दिव्य परिकरों तथा महात्माओं के लिए तो इनका जप ही जीवन है, प्राणावलम्ब है।

''रामनाम परंब्रह्म सर्वमोदैकमन्दिरम।
जीवनं दिव्यनित्यानां परिकराणां महात्मनाम्।।

श्री बड़े महाराज स्वरचित श्री सीताराम नाम सनेहवाटिका २४३ में कहते हैं कि श्री राम नाम को करुणांश से अनन्त भाँति के परमानन्द अनुभव में आते हैं। जापक में काम विकार की किंचिन्मात्र भी गन्ध नहीं रह जाती। क्रोध मोह आदि कष्ट नहीं देते। विषय वासना की क्षुधा मिटाने के लिए आठो पहर नाम की माला फेरनी चाहिये। निष्काम नाम जपने से श्री जानकी बल्लभलालजी स्वयं आकर आपसे मिलेंगे।

''नामहिकी करुना लवलेश से होत हजार करोर महामुद।
काम कषाय रहे न कहीं फिर मोह रु कोह करे न जरा तुद।।

आठहु याम सुदामहि फेरिये शीघ्र नसे विषवासना की छुद्र।
(श्री) युग्म अनन्य अकाम भये पर जानकिजीवन आय मिले खुद।।''

श्री पद्मपुराण में भगवान् श्री कृष्ण भी अर्जुन से कहते हैं कि जो दिनरात सदैव श्री रामनाम का जप करते हैं, उनके घर में सभी प्रकार के मंगल तथा सुख भरे रहते हैं।

''मङ्गलानि गृहे तस्य सर्व सौख्यानि भारत।
अहोरात्रं च येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम्।।''

श्री मार्कण्डेय पुराण में भगवान् श्री व्यास देव जी अपने शिष्य से कहते हैं कि श्री रामनाम पर ब्रह्म हैं, वेदों के सार सिद्धान्त हैं। सब सुखों को प्रकटानेवाले कारण हैं, सबों को दिव्यप्रेम देने वाले हैं। मंगलों के करने वाले हैं। अत: सब प्रकार से सभी दुराग्रहों को छोड़कर, सावधानतापूर्वक तुम लोग श्री रामनाम का जप करो।

'' वेदानां सार सिद्धान्तं सर्वसौख्यैक कारणम्।
रामनाम परंब्रह्म सर्वेषां प्रेमदायकम्।।
तस्मात्सर्वात्मना रामनाम माङ्गल्यकारकम्।
भजध्वं सावधनेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम।।''

श्री प्रमोद नाटक नामक आर्षग्रन्थ में आया है– हम श्री रामचन्द्र जी के परममुक्ति देने वाले श्री रामनाम की वन्दना करते हैं, श्री नामसरकार की लेश मात्र कृपा से आज हम लोगों की सर्वप्रकार के सुख सुलभ हैं।

'' वन्दे श्री रामचन्द्रस्य नाम मुक्ति प्रदं परम।
यत्कृपालेशत: ऽस्माकं सुलभं सर्वत: सुखाम्।।''

''जितना नाम रटै लय लाई। उतना सुख पावे अधिकाई।।
जेहि न प्रतीति वचन सुनि होई। रटि सियाराम परीच्छै सोई।।
नाम उचारत सुख जो होई। जापक को कहि सकै न कोई।।

श्री वृहद उपासना रहस्य, श्री प्रश्नोत्तर प्रकरण

नाम जापकानि कर सुख जोई जानत नाम जापकै सोई।।

✡ श्री नाम जप से इष्टदर्शन ✡

श्री पद्मपुराण में श्री ब्रह्माजी ने नारद जी से कहा कि श्री राम नाम जप के प्रभाव से परात्परब्रह्म श्री सीताराम जी को जापक साक्षात् दर्शन प्राप्त कर लेते हैं। श्री नामार्थ भूत रूप चिंतनपूर्वक नाम जपना चाहिए।

''राम नाम प्रभावेण सीतारामं परेश्वरम्।
साक्षात्कारं प्रपश्यन्ति रामनामार्थचिन्तका:।।''

भविष्योत्तर पुराण में श्री मन्नारायण देव ने अपनी प्रियतमा श्रीमती लक्ष्मी देवी से कहा है कि वेद मर्मज्ञ तथा ज्ञानसागर मग्न सज्जन कहते हैं कि सभी साध्नों में श्री राम नाम का उच्चारण सर्वश्रेष्ठ है। श्री नाम ही जप के प्रभाव से श्री जानकी बल्लभलालजू के नित्य परमानन्ददाता रसमय दिव्य रूप का मैंने भी दर्शन पाया ।

सर्वेषां साधनानां वै श्री नामोच्चारणं परम।
वदन्ति वेदमर्मज्ञा निमग्ना ज्ञान सागरे।।
यत्प्रभावान्मया नित्यं परमानन्ददायकम्।
रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्री जानकीपते:।।

उसी पुराण में श्री नारद जी ने श्री भरद्वाज जी से कहा है कि हे मुनिवर! श्री रामनाम के प्रभाव से श्री जानकी रमणजू का लोक विलक्षण, दुर्लभ भक्तसर्वस्वभूत रूप अनायास प्राप्त हो जाते हैं।

अनायासेन सर्वस्वं दुर्लभं मुनिसत्तम।
प्रभावाद्रामनाम्नस्तु लभते रूपद्भुतम्।।

श्री मार्कण्डेयपुराण में श्री व्यास देव ने अपने शिष्यों को बताया है कि सभी पापों से संशुद्धि पाने के जितने भी समस्त धर्म समुदाय हैं, उनसे अनन्त गुण पाप संशोधन शक्ति में समर्थ श्री रामनाम का कीर्त्तन है। श्री नाम ही सरकार के अनुग्रह से श्री रामचन्द्र माजू के परमानन्द सिन्धु रूप निश्चय ही सुलभ हो जाते हैं।

धर्मानशेष संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमा:।
तेभ्योऽनन्तगुणं प्रोक्तं श्रेष्ठ श्री नाम कीर्त्तनम्।।
यस्यानुग्रहतो नित्यं परमानन्दसागरम्।
रूपं श्री रामचन्द्रस्य सुलभं भवति ध्रुवम्।।

श्री पुराण संग्रह में श्री सुत जी ने श्री शौनक ऋषि से कहा है कि श्री राम नाम का परात्पर ऐश्वर्य मैं वचन के द्वारा कैसे व्यक्त करूँ? श्री रामनाम के स्मरण से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशमय रामरूप मय भासने लगता है।

नाम्न: परात्परैश्वर्य कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्ष्यते विश्वं रामरूपेण भास्वरम्।।

श्री शिव संहिता में कहा गया है कि श्री राम नाम के स्मरण करते ही श्री राम रूप सम्मुख हो जाते हैं। अत: श्री रामनाम का कीर्त्तन सदैव करते रहना चाहिए।

नाम स्मरण मात्रेण नामी सन्मुखतां लभेत्।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कीर्त्तनं सर्वदोचितम्।।

श्री लोमशसंहिता में श्री शिवजी ने श्रीपार्वती को बताया है कि जहाँ बुद्धिमान नामजापक दो अक्षर वाले श्री रामनाम का कीर्त्तन करते हैं, वहीं भगवान् श्री रामभद्रजू साक्षात् प्रगट होकर, जापक के समस्त दु:खों का विनाश करते हैं।

रामेति द्वयक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः।
तत्राविर्भूय भगवान सर्वदुःखं विनाशयेत।।

श्री पद्मसंहिता में कहा गया है कि नित्य अविनाशी श्री रामनाम के प्रभाव से परमानन्द सागर दिव्य श्री रामरूप का साक्षात्कार वाला अनुभव हो जाता है। वैसे श्री नामरसका सदैव जप द्वारा पान करना चाहिए।

रुपस्यानुभवं दिव्यं परमानन्दसागरम।
रामनामरसं दिव्यं पिव नित्यं सदाव्ययम्।।

श्री राघवजू के श्री रामनाम देवमुनीश्वरों से प्रपूजित हैं, निर्मल हैं, निर्विकार हैं, भक्तों की विपत्ति को सदा भंजन करने वाले हैं। श्री सीताराम नाम द्वारा युगल रूप का साक्षात्कार होता है। अतः हम इन्हीं नामका स्मरण करते रहते हैं।

अनामयं रूप युगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्री राघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देव मुनीश्वरेश्वरैः।।

श्री याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है श्री जानकी रमणलाल प्रधान पुरुषोत्तम हैं। परतम ब्रह्म है श्री अयोध्या विहार में अनधिकरियों के लिए अलक्ष्य रहते हैं। उनको श्री रामनाम का कीर्त्तन करने से वे अनायास प्राप्त हो जाते हैं।

परमात्मानमव्यक्तं प्रधान पुरूषेश्वरम्।
अनायासेन प्राप्नोति कृते तन्नाम कीर्त्तनम्।।

श्री शिव सर्वस्व नामक ग्रन्थ में श्री शिवजी ने श्री पार्वती जी से कहा है कि श्री रामनाम के कीर्त्तन ही से तारक ब्रह्म श्री जानकी जीवनजू के दर्शन होते हैं। देवि! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। मेरा वचन अन्यथा हो नहीं सकता।

नाम संकीर्त्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते।
सत्यं वदामि ते देवि नान्यथा वचनं मम।।

श्री अथर्वणोपनिषद में कहा गया है कि इष्ट देव के दर्शन उनके नामजप से ही संभव है। कलिकाल में दूसरा उपाय नहीं है।

'जपात्तेनैव देवता दर्शनं करोति कलौ नान्येषां भवति।

जैसे चंग–पत्र नभ–कूप मध्य जाइ रहे
गहे गुन हाथ बिना खींचे नहि आइ है।
धेनु मातु घरही में नेकु अंतराल पर

बाल बच्छ रोये बिनु दूध न पियाइ है।।
जीव ईश सहज संघाती त्यों अनादि उर
भजन विहीन ब्रह्म आनंद न छाइ है।
लोक वेद विदित है बात 'रसरंगमनी'
रामनाम रटे बिन नामी न मिलाइ है।।
भूमि के खने से आप आपहि कढ़त जैसे
पढ़त पढ़त पूरी पंडिताइ पाइ है।
ग्रास–ग्रास खात ही सुतुष्ट ज्यों चले ते पथ
आपुही सिरात घर जाई ठहराइ है।।
काठ के घिसत आगि आपै प्रगटात जिमि
मथत मथत दूध माखन सो खाइ है।
जानि यह बात ठीक रटै रसरंगमनी
रामनाम रटे राम आपही दिखाइ है।।

श्री राघवदर्शन के लिए चौबीस घंटे का अखंड नाम जप

कल्याण के भगवन्नाम महिमा अंक के पृ. ६१५ में यह प्रयोग लिखा है। मैंने और भी सन्तों से इस प्रयोग की चर्चा सुनी है। मेरा अपना अजमाया तो नहीं है, दर्शनार्थी सज्जन चाहें तो प्रयोग करके देख सकते हैं। विधि इतनी ही है कि एक एकांत कमरे को सब सामान हटाकर खाली करके, धोकर, स्वच्छ कर लेना चाहिए। सूर्योदय के पूर्व ही स्नान करके, उस कमरे में किसी ब्राह्मण द्वारा कलश स्थापन कराके गणेश जी का पूजन कर लेना चाहिये और शुद्ध घी का अखंड दीपक जला लेना चाहिये। सूर्योदय के समय से ही 'राम' इस नाम को स्पष्ट रूप से बोलना प्रारंभ कर देना चाहिए और दूसरे दिन सूर्योदय तक अर्थात् पूरे चौबीस घंटे 'राम–राम' बोलते रहना चाहिये। इसके लिये केवल इतने नियम हैं–

१–एक क्षण के लिए भी नाम बोलना बन्द न हो।

२– उस कमरे से अनुष्ठान काल भर बाहर न जाय।

३– उस कमरे में दूसरा कोई इस बीच में न आये। द्वार भीतर से बन्द रहे।

४– अखंड–दीपक बुझने न पाये।

एक दिन पहले ऐसा भोजन करना चाहिये कि अनुष्ठान के दिन शौच लघुशंका अधिक तंग न करे। अनुष्ठान वाले कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे तो कमरे में जल रखना चाहिये। आवश्यक होने पर बोलते हुए जप चलता रहे और लघुशंका से निवृत्त हुआ जा सकता है। कमरे में ही नाली पर। उस कमरे में अनुष्ठान करने वाला बैठे, खड़ा हो, टहले, चाहे जैसे रहे, किन्तु नामोच्चारण बंद न हो, इतना ध्यान रक्खें। दूसरे दिन प्रातः काल कलशादि का विसर्जन कर दिया जाता है।

रहेउ एक दिन अवधि अधारा। समुझत मन दुख भयेउ अपारा।।
कारन कवन नाथ नहि आयउ। जानि कुटिल किधौं मोहि बिसराउ।।
अहह धन्य लछिमन बड़भागी। राम पदारविंद अनुरागी।।
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा। ताते नाथ संग नहि लीन्हा।।
जौं करनी समुझै प्रभु मोरी। नहिं निस्तार कलप सतकोरी।।
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ। दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ।।
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई। मिलहहिं राम सगुन सुभ होई।।
बीतें अवधि रहहि जौं प्राना। अधम कवन जग मोहि समाना।।

उपर्युक्त चौपाइयों को आर्तभाव से भगवान श्री राम के शीघ्र दर्शन की उत्कट उत्कंठा को लेकर, जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय, कम से कम इक्कीस बार जप करे और साथ ही ॐ रां रामायनमः' मन्त्र की १११ माला का जप करे।

जिस समय ये पंक्तियाँ लिखी जा रही थीं , उस समय एक भक्त महिला लेखक के पास बैठी थी। वह बिहार के सीतामढ़ी जनपद के अभ्यन्तर वेलाशान्ति कुटीर नामक ग्राम की निवासिनीथी। नाम है राजकिशोरी सहचरी । बेला बाबू लक्ष्मीनारायण चौधरी की धर्म पत्नी अपने पति देव की आज्ञा से श्री अयोध्या कार्तिक कल्पवास करने आई है। ठहरी हुई हैं अपने गुरुस्थान श्री रसमोदकुंज में ही। उसने साक्षात्कार के लक्ष्य से उपर्युक्त चौबीस घंटे अखंड नाम जप वाले अनुष्ठान की अनुमति माँगी। आदेश मिला और किया भी। आज दिनांक २३.१०.८१ को अनुष्ठान समाप्त कर, प्रातः ७ बजे रोती हुई और प्रेम विह्वल दशा में लेखक के समीप आकर उसने अपने गुरु सहितश्री युगल किशोर जू के प्रगट दर्शनों का सम्बाद सुना गयी है। अनुष्ठान अचूक फलप्रद है। युगल सरकार ने कृपापूर्वक यह भी बताया कि हम सदा श्री रसमोदकुंज में ही रहते हैं। हैं भी श्री रसमोदकुंज विहारी लाडिले लाल प्रगट प्रत्यक्ष ठाकुर । दर्शन करते ही चित्त वरवश चुराते हैं।

श्री नाम जप से सर्व रोग निवारण

श्री वृहद् विष्णु पुराण में श्री पराशरजी ने अपने शिष्यों से श्री रामनाम जप का प्रभाव बताते हुए कहा है कि श्री राम नाम के कीर्त्तन सभी रोग मिट जाते हैं, सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं तथा सभी मारणकारक योग शीघ्र टल जाते हैं।

सर्व रोगोपशमनं सर्वोपद्रव नाशनम्।
सर्वारिष्टहरं क्षिप्रं रामानुकीर्त्तनम्।।

श्री शुक पुराण में श्री अगस्त्यजी ने श्री सुतीक्षण जी को समझाया है कि श्रीमान् रामचन्द्र जू के श्री रामनाम सभी प्राणियों के जीवन दाता हैं क्योंकि रकार के सहारे ही श्वासा बाहर निकलती है और मकार के सहारे भीतर जाती है। रामनाम द्वारा श्वास लिये बिना कैसे कोई जीवित रहेगा?

रकारेण वहिर्याति मकारेण विशेत्पुन:।
रामरामेति सच्छब्दो जीवो जपति सर्वदा।।

इतना ही नहीं, श्री राम नाम के कीर्त्तन से सभी रोगों से जापक मुक्त हो सकता है इसमें कोई संशय नहीं। एक बात इस सम्बन्ध में स्मरण रहने योग्य है कि रोग तो प्रारब्ध प्रेरित ही आते हैं। यदि हम सकाम भाव से रोग निवारण के लिए ही नाम जपें, तो निश्चय रोग मिट जायेंगे। जपसंख्या रोग कारण भूतपूर्व पापों की गुरुता के अनुपात से ही निश्चय की जा सकती है। यदि निष्काम हो रहा है, तो भी रोग आप ही आप मिट जायेंगे।

श्री मद्रामेति नामैव जीवानां च जीवनम्।
कीर्त्तनात्सर्व रोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशय:।।

श्री सूत संहिता में कहा गया कि भावुक संतों का एक ही सिद्धान्त है कि श्री राम नाम रूपी अमृत को पीकर, नित्य सर्व रोगों से रहित हो जाना चाहिए।

राम नामामृतं पीत्वा भवेन्नित्यं निरामयम्।
सिद्धान्तं सारमित्येकं साधूनां भावितात्मनाम्।।

श्री पराशर संहिता में श्री व्यास देव जी ने श्री कृष्ण पुत्र साम्ब को समझाया है कि दुष्ट रोग व्याधि जनित दु:ख नाना औषधियों के सेवन से असाध्य हैं। श्री रामनाम रूपी रसौषधि पीकर निस्सन्देह सभी व्याधियाँ मिट जायेंगी।

न सांव व्याधिजं दु:खं हेयं नानौषधैरपि।
रामनाम्नौषधं पीत्वा व्याधिस्त्यागा न संशय:।।

कोई पूछे कि रोग तो पूर्वजन्मों के किये हुए पापों का परिपाक हैं, पाप मिटे तब न रोग छूटेगा। इसके उत्तर में श्री व्यास देव जी कहते हैं करोड़ों पूर्वजन्म के पापों की क्या औषधि है जानते हो? परात्पर श्री रामनाम का कीर्त्तन करो शारीरिक रोगों की कौन कथा जन्मरण रूपी भवरोग भी इससे मिट जाता है।

सभी प्रकार के शारीरिक रोग तथा सभी मानस रोगों के विनाश के लिए तुम महामोद मन्दिर श्री राम नाम का स्मरण करो।

कोटि जन्मार्जितं पापमौषधै: शान्तिमंति किम्।
कीर्त्तनीयं परं नाम भवव्याधेस्तदौषधम्।।
सर्वरोगोपशमनं सर्वाधीनां विनाशनम।
स्मरत्वं रामरामेति महामोदैक मन्दिरम।।

श्री वैश्वानर संहिता कहती है कि जो श्री रामनामात्मक मंत्र का निरन्तर कीर्त्तन करते रहते हैं, वह सभी रोगों से मुक्त होकर, दुर्लभ मुक्ति भी पा लेते हैं।

रामनामात्मकं मंत्रं सततं कीर्त्तयन्ति ये।
सर्वरोग विनिर्मुक्तो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्।।

श्री ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में श्री नारद जी ने महाराज अम्बरीष को समझाया है कि सभी आधिव्याधि अर्थात् मानसिक और शारीरिक रोग श्री रामनाम के स्मरण कीर्त्तन से शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। उन नाम पुरुषोत्तम श्री जानकी कांतजू को हम प्रणाम करते हैं।

आधयो व्याधयो यस्य स्मरणान्नाम कीर्त्तननात्।
शीघ्रं वै नाशमायान्ति तं वन्दे पुरुषोत्तमम्।।

श्री हनुमन्नाटक में श्री हनुमतलाल जी श्री अगस्त्यजी को श्री रामनाम की महिमा बताते हुये आदेश देते हैं कि मानव का यह स्थूल शरीर सैकड़ों जोड़ों के कारण सदा जर्जर बना रहता है। परिणाम तो मृत्यु है ही, जो अटल है अवश्यम्भावी है। इस रोगमय शरीर से पिंड छुड़ाने की क्या दवा है? श्री राम नाम का स्पष्ट प्रभाव देखते हुए भी ऐसा प्रश्न दुर्मतिमूढ़ ही कर सकता है। श्री सर्वरोगनाशक श्री रामनाम रूपी रसायन का पान करना चाहिये। शारीरिक तथा भवरोग सबों की यह श्रीरामवाण औषधि है।

इदं शरीरं शतसन्धि जर्जरं पतत्यवश्यं परिणाम दुर्वहम्।
किमौषधं पृच्छसि मूढ़ दुर्मते निरामयं राम रसायनं पिव।।

श्री बड़े महाराज स्वरचित श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका में कहते हैं कि जो श्री रामनाम रूपी महान औषधि का पान करते हैं, उनके शरीर में शारीरिक या मायाकृत कामादिक मानसरोग निश्शेष रूप से नष्ट हो जाते हैं। प्रीति प्रतीति सहित नाम रटने से दिव्य रसानन्द का अनुभव होगा, तो अंग तीनों ताप से तपने नहीं पायेंगे। स्त्रीजन्य काम सुख को छोड़कर, नाम रटने से चित्त से विलक्षण दिव्यानंद हटेगा ही नहीं। उमंग उत्साह बढ़ाकर श्वावप्रश्वास के साथ अखंड नाम जपने वाले को सांसारिक किसी भी विलास वस्तु की चाहना नहीं होती।

नाम महौषध पान किये कुल कायिक मायिक रोग रहे ना।
प्रीति प्रतीति समेत रटे राहत अंगन दाह दहे ना।।
वाम विकार विलास विहाय विनोद विचित्र सुचित्त जहे ना।
युग्म अनन्य अमंग उछाह अखंडित श्वास जहान चहे ना।।७३।।

श्री बड़े सरकार अपनी श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १९७ में कहते हैं कि सांसारिक प्राणियों ने विषय भोग रूपी विष को खूब अघा–अघा कर खाया है। उन मूर्ख पापियों को यह भोग पचे कैसे? फलस्वरूप नाना शोक संताप सह रहे हैं। अब भी होश नहीं हो रहा है। विषय रूपी मदिरे के नशे में चूर हो रहे हैं। बुरी वला के समान तथा दुःख के बीच मोहरात्रि में बेखबर सो रहे हैं। अतः घायल होकर चारों ओर डोल रहे हैं। इस भव संकट रोग के लिए धर्म कर्म साधन रूपी औषधि भी करे, अनेक मंत्र तंत्रों का भी अवलंब लिया, परन्तु विषैली भवव्याधि बढ़ती ही गई। श्री बड़े सरकार हमें कृपा पूर्वक बता रहे हैं कि अब श्री राम नाम जप रूपी तीव्र रसायन औषधि सेवन करें, तो सभी असाध्य कुरोग मिट जायेंगे।

हाय विषय विष खाय अघाय पचाय सक्यो नहि मूढ़ मलायन।
घूमत घायल घोर निशा मधि मोहनिशा दुखबीज बलायन।।
साधन औषध मंत्र किये हिय और हुँ व्याधि बढ़यो विषलायन।
(श्री) युग्म अनन्य असाध्य कुरोग नशे जब चाखिय राम रसायन।।

सचमुच और भी अनेकों असाध्य कुरोग श्री नाम जप से अवश्य मिटेंगे।

(भगवन्नाम महिमा अंक पृ. ८३ से साभार उद्धृत)

कुछ वर्ष पहले की बात हैं। सिद्ध महापुरुष श्री बलराम स्वामी जी महाराज की अतिप्रवृद्ध अवस्था थी। ८५–८६ वर्ष का वय:क्रम रहा होगा। उस समय आप श्री अयोध्या के श्री विजय राघवाचार्यजी महाराज के आश्रम में गद्दी के अधीश्वर थे। आप आश्रम में ही बीमार हो गये। रोग नाश के लिए प्रतिदिन श्री विष्णु सहस्रनाम के पाठ किये जाते थे। आपकी बीमारी के समाचार पाकर, एक सामान्य साधु आपके दर्शनार्थ आये। कुछ देर बैठने के बाद साधु ने श्री स्वामीजी से पूछा, आज आप कैसे हैं?

श्री स्वामी जी– दो दिनों से कुछ ठीक हैं।

साधु– श्री विष्णु सहस्र नाम का पाठ कितने दिनों से चल रहा है?

श्री स्वामी जी– आज दस दिन हो गये।

साधु– कुछ दिन और पाठ होने पर, आप पूर्ण निरोग हो जायेंगे। श्री स्वामी जी महाराज ने उन्हें तो इसका कोई उत्तर न देकर, केवल मुस्कराकर टाल दिया, परन्तु उनके चले जाने पर श्री स्वामी जी ने दस दिनों में पाठ बंदकरवा दिया। स्वामी जी ने कहा कि श्री विष्णु सहस्रनाम के पाठकी फलश्रुति जैसा कहती है– रोगार्त्तो मुच्यते रोगात्।' यह अक्षरशः सत्य है। किन्तु नाम पाठ का सहज फल है। प्रभु प्रसन्नता, न कि रोग निवारण, शारीरिक रोग नाश के निमित्त श्री नाम का उपयोग मुझे अभीष्ट नही। मैं तो केवल प्रभु की प्रसन्नता मात्र चाहता हूँ। 'या कहना' जब विष्णुसहस्र नामका यह प्रभाव, तो उनसे सहस्रगुणित प्रभाव वाले श्री रामनाम का क्या कहना? महात्मा गाँधी को दृढ़ विश्वास था कि श्री राम नाम से समस्त रोग, यहाँ तक कि असाध्य से असाध्य भी र्निमूल होंगे। आपने अपनी श्री 'रामनाम' नामक पुस्तक के आधे भाग में इस सम्बन्ध में अधिक लिखा है।

महात्मा गाँधी (ह. संठ २.६.४६ में) लिखते हैं मेरा यह दावा है कि रामनाम सभी बीमारियों की, फिर वे तन की हो, मन की हो, या रूहानीहो एक ही अचूक दवा है। इसमें शक नहीं कि डाक्टरों या वैद्यों से शरीर की बीमारियों का इलाज कराया जा सकता है। लेकिन राम–नाम आदमी को खुद ही अपना वैद्य या डाक्टर बना देता है और उसे अपने को अन्दर से नीरोग बनाने की संजीवनी हासिल करा देता है। जब कोई बीमारी इस हद तक पहुँच जाती है कि उसे मिटाना मुमकिन नहीं रहता, उस वक्त भी रामनाम आदमी को उसे शान्त और स्वस्थ भाव से सह लेने की ताकत देता है। जिस आदमी को रामनाम में श्रद्धा है, वैसे जैसे तैसे अपनी जिन्दगी के दिन बढ़ाने के लिए नामी–गरामी डाक्टरों और वैद्यों के दर की खाक नहीं छनेगा और यहाँ से वहाँ मारा–मारा नहीं फिरेगा। राम नाम डाक्टरों और वैद्यों के साथ टेक देने के बाद लेने की

चीज नहीं। वह तो आदमी को डाक्टरों और वैद्यों के बिना अपना काम चला सकने वाला बनाने की चीज है। राम नाम में श्रद्धा रखने वाले के लिए वही उसकी पहली और आखिरी दवा है।

✓ कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदय से राम नाम ले तो व्याधि नष्ट होनी चाहिये। राम नाम पोथी का बैंगन नहीं वह तो अनुभव की प्रसादी है। जिसने उसका अनुभव प्राप्त किया वह दवा दे सकता है दूसरा नहीं।

✓ विषय जीतने का सुवर्ण नियम राम नाम के सिवा कोई नहीं, मैं संसार में यदि व्याभिचारी होने से बचा हूँ तो रामनाम की बदौलत .... जब जब मुझ पर विकट प्रसंग आये हैं मैंने रामनाम लिया है और बच गया हूँ। बिकारी विचार से बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है। स्वप्न में ब्रतभंग हुआ तो उसका प्रायश्चित सामान्यत: अधिक सावधानी और जागृति आते ही रामनाम है।, ब्रह्मचर्य साधने की इच्छा रखने वाले हररोज नियम से सच्चे हृदय से रामनाम जपे और ईश्वर की कृपा चाहे।

हरिजन सेवक २८.७.१९४६ में महात्मा गाँधी लिखते हैं— जन्द अवस्ता (पारसीलोगों का धर्म ग्रन्थ) का जो हिस्सा आज इन बहनों ने गाकर सुनाया, उसमें ५ किस्म के बैद्य या हकीम का जिक्र है। पांचवा और सच्चा वैद्य वह कहा गया है जो रोग को मिटाने में ईश्वर के नाम का ही भरोसा रखता है। मैं तो यह चीज कहता ही रहा हूँ। कुदरती इलाज में एक ही रामवाण दवा है और वह है रामनाम। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई और ताज्जुब भी हुआ कि गाथा में भी वही बात कही गई है। मेरी राय में कुदरती इलाज में राम नाम का स्थान पहला है। जिसके दिल में राम नाम है, उसे और किसी दवा की जरूरत नहीं है। राम के उपासक को मिट्टी और पानी के इलाज की भी जरूरत नहीं है।

श्री सुन्दरदास जी भवरोग की, सर्व विकार परिहार की, एक मात्र महौषधि श्री राम नाम ही को बताते हैं—

'' रामनाम मिस्री पिये, दूर जाहि सब रोग।
सुन्दर औषधि कटुक सब, जप तप साधन जोग।।

श्री कबीर जी महाराज राम—नाम रूपी रसायन के द्वारा सर्वरोग निवारण पूर्वक कायाकल्प की सम्भावना बताते हैं—

'' सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय।
रंचक घटमें संचरे, सब तन कंचन होय।।
रामनाम निज औषधी, काटे कोटि विकार।
विषय व्याधि भी ऊबरै, काया कंचन सार।।''

✓ कल्याण भगवान्नामांक पृ. ७५ में पूज्यपाद हरिबाबा लिखते हैं— इन्फ्लूयंजा ज्वर के दिनों में मुझे एक बार जोर का ज्वर हुआ। बचने की आशा न रही। मैं उस समय अकेला कुटी में लेटा हुआ था। मन में विचार किया कि अब अंत का समय उपस्थित हुआ है। सावधानता से उठकर हरिनाम

जपना चाहिए। बड़े कष्ट में ही उठ बैठा और भगवन्नाम जपना आरंभ किया। कोई पाँच सात ही बार नामोच्चारण किया होगा कि अकस्मात् इतना आनंद और प्रफुल्लता हुई कि, शरीर में रोग का लेशमात्र भी लक्षण न रह गया और आश्चर्य से भरा हुआ आनन्द के मारे उठकर भागा एवं दो कोस जाकर दूसरे ग्राम में स्नान किया तथा नित्य क्रिया में प्रवृत्त हुआ।

(डाक्टर भगवती प्रसाद सिंह द्वारा लिखित पोद्दारजी के जीवन दर्शन पृ.६४ से साभार उद्धृत)

बात सन १९१६ ई. की है। भाई श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार उन दिनों भारत–रक्षा–विधान के अनुसार बंगाल के बाकुड़ा जिले के शिमला पाल थाने के क्षेत्र में अन्तरीय (नजरबद) थे। वही आपको मोतियाज्वर (टायफाइड) हो गया। शिमला पाल का एकाकी जीवन, कोई साथी था नहीं। छोटे–से गाँव में कोई वैद्य डाक्टर भी नहीं था। एक बंगाली वैद्य थे, जिन्हें पुराना कम्पाउण्डर कहना ही ठीक होगा। दो–चार दवाएँ उनके पास रहा करती थी। पड़ोस में ही घर था। वे पोददार जी के पास आया करते थे। एक दिन घबड़ाहट ज्यादा बढ़ गई। मन में आया क्या भगवान्नाम में इतनी भी शक्ति नहीं कि मेरी घबड़ाहट मिटा दे? इतना सोचकर पोददारजी ने भगवन्नाम जप आरंभ कर दिया। उस जपका अनोखा फल हुआ। मन को शान्ति मिली। शान्ति–प्राप्ति के साथ ज्वरभी उतरने लगा। नाम जपने से उस ज्वर को पूर्णतः दूर कर दिया।

श्री नाभास्वामी जी ने स्वरचित भक्तमाल के छप्पय ९८ में श्री पद्मनाभजी की कथा लिखी हैं। पहले एक दिग्विजयी पंडित थे। श्री कबीर दास जी के ''पढै समुझि कैसमुझि पढ़े, सोई परम सयान । बिन याके विद्वान हूँ मूरख परम अयान।।'' ऐसी वाणी सुनकर अपना विद्याभिमान त्याग आपके शिष्य हो गये। श्री कबीर जी ने उनका नाम रखा श्री पद्मनाभ जी।

मूल छप्पय: – कबीर कृपा तें परम तत्त्व पद्मनाभ परचौ लह्यौ''

नाम महानिधि मंत्र नाम ही सेवा पूजा। जप तप तीरथ नाम नाम बिन और न दूजा।।
नाम प्रीति नाम बैर नाम कहि नामी बोलै। नाम अजामिल साखि नाम बंधन तें खोलै।।
नाम अधिक रघुनाथ तें राम निकट' हनुमत कह्यो।।

एक धनी मानी गलितकुष्ठ रोगी, किसी भी उपचार से रोगमुक्त न होने पर, श्री काशी की भागीरथी में डूब मरने जा रहा था। श्री पद्मनाभजी ने तीन बार रामनाम कहा कर, उसे तत्काल रोग मुक्त कर दिया।

श्री प्रिया दास जी कवित्त टीका पढ़िये:–

काशी वासी साहु भयोकोढ़ी सो निवाह कैसे
परि गये कृमि चले बूड़िवे को भीर है।
निकसे 'पदम' आय पूछी ढिग जाय कही
गही देह खोलो गुन न्हाय गङ्गा नीर है।।
रामनाम कहे वेर तीन में नवीन होत
भयौई नवीन कियौ भक्ति मति धीर है।

गयो गुरु पास तुम महिमा न जानी यही
नामाभास काम करे कही यों कबीर है।।

अर्थात् एक काशी वासी सेठ कोढ़ी हो गया और उसकी देह में कीड़े पड़ गये। उसने किसी प्रकार से जीने में अपना निर्वाह न देखा, तब उसने कहा कि हम श्री गंगाजी में डूब जायेंगे। उसके घर के और बहुत से लोग लेकर गंगा तट गये। उसी समय उनके भाग्यवश श्री पद्मनाभ जी वहां आ पहुँचे, और पूछा कि क्या है? लोगों ने सब कह दिया कि यह कोढ़ी डूब मरने जा रहा है। आपने आज्ञा दी कि इसके बंधन और पाषण आदि खोल दो। गंगा स्नान करके यह संकल्प करे कि 'मैं जन्मभर श्री रामनाम जपूँगा।' तीन बार श्री रामनाम कहें, अभी अभी इसकी नवीन काया हो जावेगी। वैसा ही किया। श्री रामनामनुरागी की कृपा से उसका नवीन शरीर हो गया, कुष्ठ छूट गया। तदनंतर उसने जन्मभर भक्ति पूर्वक श्री राम नाम स्मरण किया। इधर श्री पद्मनाभ जी अपने गुरू देव श्री कबीर जी के पास आये। श्री कबीर जी यह वार्ता सुनकर कहने लगे कि तुमने श्री राम नाम की महिमा नहीं जानी। कुष्टतो श्री राम नाम का आभास (अर्थात् हराम शब्द में श्री राम शब्द का योग) मात्र नष्ट कर देता है। तब श्री पद्मनाभ जी ने अति आश्चर्य को प्राप्त हो श्री नाम का प्रभाव जाना।

❄ श्री राम जप से भय निवारण ❄

बात अग्निपुराण की है। देवाधिदेव श्री महादेव जी, श्री दुर्वासाजी से कहते हैं कि श्रीरामनाम कीर्त्तन करने से, नामानुरागी के लिए न तो यमदूतों का भय रहता, न रौरवादि नरक गमन का। श्री यमराज का भी उसे भय नहीं रहता, क्योंकि ये महाभागवत हैं, नामानुरागियों का आदर करते हैं।

न भयं यमदूतानां न भयं रौरवादिकम्।
न भयं प्रेतराजस्य श्री मन्नामानुकीर्त्तनात्।।

वहीं श्री प्रह्लाद जी अपने सहपाठी बालकों से कहते हैं कि तुम सबों के सामने की बात है मेरे पिता ने मेरे प्राण लेने के लिए, क्या क्या न भयानक परिस्थियाँ प्रगट की। बलिहारी है श्री राम नाम के प्रभाव की! मैं उस भय सिन्धु से अनायास पार उतर चुका हूं। अतः तुम लोगों को भी दैत्यों सा दुराग्रह छोड़कर,सावधानी से नाम कीर्त्तन करना चाहिये। अन्य साधनों को नीरस समझकर, त्याग दो। एक मात्र श्री राम नाम का अवलंब पकड़ लो।

यत्प्रभावादहं साक्षात्तीर्त्वा घोर भयार्णवम् ।
अनायासेन वाल्येऽपि तस्माच्छ्री नामकीर्त्तनम्।।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा सर्व दुराग्रहम।
साधनान्यं विहायाशु बुद्धवा वैरस्यमात्मनि।।

श्री नृसिंहपुराण में इसी भाँति श्री प्रह्लाद ने अपने पिता से भी कहा है– 'श्रीपिता जी, आप मुझे प्रचंड अग्निज्वाला में जलाने की धमकी क्या दे रहे हैं? मैं नहीं डरता। भला श्रीराम नाम जपने वाले के लिये भी भय? श्री राम नाम से तीनों ताप मिट जाते हैं तो अग्नि की ज्वाला क्या है? पिता जी देखिये, अग्नि की लपटें, मेरे शरीर में लगकर जल की भाँति शीतल प्रतीत हो रही है, यह श्री राम नाम जप की खूबी है।

राम नाम जपतां कुतो भयं सर्वतापशमनैक भेषजम्।
पश्च तात मम गात्र सङ्गत: पावकोऽपि सलिलायतेऽधुनां।।

श्री ब्रह्म वैवर्तपुराण में श्री व्यास देव जी ने देवर्षि नारद जी को समझाया है कि नाम जापक चाहे वेदविहित शुभाचरण विशेष रूप से करता हो या उससे विरहित हो, यदि दिवारात्रि नाम कीर्त्तन करता है, तो नरक भय, जन्ममरण के भय से वह बिल्कुल मुक्त हो जाता है।

क्रिया कलाप हीनो वा संयुतो वा विशेषत:।
रामनामानिशं कुर्वन कीर्त्तनं मुच्यते भयात्।।

श्री आदि पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि श्री राम नाम का उच्चारण श्रद्धा वा अश्रद्धा से मनुष्य इस मर्त्यलोक में करता है, उसे श्री नाम प्रसाद से कोई भय नहीं व्यापता।

श्रद्धया हेलया नाम वदन्ति मनुजा भुवि।
तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनाम प्रसादत:।।

श्री महाशम्भु संहिता में मंत्र तत्त्व के विशेषज्ञ भगवान शंकरजी का वचन है कि श्री राम नाम समस्त मंत्रों के बीज हैं। संजीवनी जड़ी हैं जिसके हृदय में श्री नाम सरकार विश्वास सहित स्मरण रूप से विराजमान हैं , वह चाहे हालाहल जहर पी ले, या प्रलय कालीन अग्निज्वाला में पड़ जाय, काल के मुख में ही घुस पड़े तो उसके लिये भय कहाँ? उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

श्री रामनामा खिलमन्त्र बीजं सञ्जीवनं चेत हृदये प्रविष्टम्।
हालाहलं वा प्रलयानलं वा मृत्योमुर्ख वा विशतां कुतोभी:।।

श्री शिव सर्वस्व नामक ग्रन्थ का वचन है कि संसार चक्र में पिसने का भय तभी तक जीव के हृदय में बना रहता है, जब तक वह समस्त कलिमल विध्वंसक श्रीराम नाम का कीर्त्तन नहीं करता है। अर्थात् नाम कीर्त्तन करते ही सभी भय स्वत: भाग जाते हैं।

यावन्न कीर्त्तयेद्रामं कलिकल्मष नाशनम्।
तावत्तिष्ठति देहेऽस्मिन् भयं संसारदायकम्।।

श्री अध्यात्म रामायण का वचन है कि इस मर्त्य लोक का मानव श्री राम नाम का नित्य जप करता है उसे मृत्यु आदि से कभी भय नहीं होते।

रामरामेति ये नित्यं पठन्ति मनुजा भुवि।
तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन।।

पूज्यचरण श्री बड़े महाराज स्वरचित श्रीसीता राम नाम सनेह वाटिका में कहते हैं कि श्री राम नाम के अनुरागी को कोई भय शंका नहीं होती। वे नित्य निर्भय होकर, अविचल रूप से अपने नाम जप में डटे रहते हैं, क्योंकि श्री राम नाम का प्रताप श्री नाम कृपा से उनके हृदय में जमा रहता है। यदि प्रलय कालीन उनचासों पवन एक साथ घोर तूफान के रूप में बहने लगें या सातों समुद्र उमड़कर पृथ्वी को जलमग्न कर दे, या हजारों सूर्य एक साथ उदित होकर, चराचर को भस्म करने लगें, तोभी नामानुरागी को किंचित भी भय नहीं होगा। श्री नाम जप में उनकी वृत्ति जब डूब जाती हैं, तो उन्हें बाह्य उपद्रवों की नेक भी परवा नहीं होती। श्री बड़े सरकार कहते हैं कि नानानुरागियों की रीति भाँति समझना मन के लिये अगम अथाह है। मेरी बुद्धि तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं पाती।

रहे संक तंक बिन अचल अडोल नित्त चित्त में प्रताप नाम छायो अविकार है।
वहे बरवात उनचासहूँ समुंद सात, होय जाय एक तऊ खेद न विकार है।।
सूर सत उदित के भये में न लेश डर, सावधान वृत्ति नाम लीनएकतार है।
(श्री) युगल अन्न्य मेरी मति न पहुँचि सके नाम अनुरागिन की रीति मन पार है।।

श्री पद्मपुराण में भगवान शंकर श्री पार्वती जी को समझा रहे हैं कि श्री राम नाम का उच्चारण सुनकर, भूत, प्रेत, पिशाच बेताल, कुष्माण्डक, राक्षस, ब्रह्मराक्षस तथा चेटक टोना आदि उपद्रवकारी आप ही दशों दिशाओं में भाग जाते हैं।

भूत प्रेत पिशाचाश्च वेतालाश्चेटकादयः।
कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मराक्षसाः।।
श्री रामनामग्रहणात पलायन्ते दिशो दश।।

श्री वात्स्यायनसंहिता में कहा गया है– विप्रवर! श्री रामनाम समस्त जगत के आधार हैं, अखंड सर्वेश्वर हैं। कलिकाल में इनका जो नित्य निरन्तर आदरपूर्वक जप करते हैं, वही धन्य है, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं कोई भय नहीं हैं। मैं सत्य कहता हूँ। मेरी बाते झूठी नहीं हो सकती।

समस्त जगदाधारं सर्वेश्वर मखण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।
ते धन्याः पूजनीयश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित।
सत्य वदामि विप्रेन्द! नान्यथा वचनं मम।।

श्री हनुमत्संहिता में श्री हनुमत लाल जी ने कहा है कि श्री रामनाम रूपी मंत्र को जिसने यंत्र बनाकर, अपने किसी अंग में धारण कर लिया, वह कहीं भी रहे, उसके लिये कोई भय नहीं है। मैं सत्य कहता हूँ।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम्।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

श्री नारदीयपुराण में श्री सूत जी ने शौनक ऋषि से कहा कि श्री रामनाम भयों के भी भय निवारक हैं। परत्पर तत्त्व है। प्रकाश देने वाले हैं। श्रीरामनाम स्मरण से अनंत पूर्व जन्मों के उत्पन्न भयसमूह सभी प्रकार से भाग जाते हैं।

भयं भयानामपहारिणिस्थिते परात्परे नाम्नि प्रकाश संप्रदे।
यस्मिन्स्मृते जन्म शतोद्भवान्यपि भयानि सर्वाण्यपयान्ति सर्वतः।।

❋ संकट-मोचन ❋

श्री मद्भागवत महापुराण में श्री शुकदेव जी ने परीक्षित जी को बताया है कि महाभयानक संसार का संकट आ पड़े, उस समय विवश होकर भी श्री राम नाम का उच्चारण कर लेने पर, उस घोर संकट से रक्षा हो जाती है, क्योंकि श्री रामनाम के डर से स्वयं डर भी डरकर भाग जाती है।

आपन्नः संसृति घोरां यन्नाम विवशो गृणन्।
ततः सद्यो विमुच्येत यद् विभेति स्वयं भयम्।।

श्री क्रियायोगसार में कहा गया है कि श्री रामनाम के स्मरणार्थ किसी खास समय का प्रतिबन्ध नहीं है। चाहे किसी भी समय भ्रमपूर्वक भी नामोच्चारण हो जाय, तो उसी समय सब दुःख शान्त हो जाते हैं।

स्मरणे रामनाम्नास्तु न काल नियमः स्मृतः।
भ्रमादुच्चार्यमाणोऽपि सर्वदुःख विनाशनः।।

श्री प्रमोदनाटक में कहा गया है कि श्री रामनाम निर्विकार है।, युगल रुपको प्रकट करने वाले है।, ऐसे कृपानिधान हैं कि सदैव अपने जापकों के संकट को हर लेने में तत्पर रहते हैं ऐसे श्रीरामनाम की देवता, मुनीश्रवर, तथा ईश्वर वर्ग के महान गण भी पूजा करते हैं। उन्हीं श्रीरामनाम का मैं भी स्मरण करता हूँ।

अनायमं रुपयुगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघव नाम निर्मल प्रपूजितं देव मुनी देव मनुीश्वरेश्वरैः।

वहीं यह भी कहा गया है। कि श्रीरामनामजप से, कषाय, विक्षेप, लय और रसाभास नामक जप विघ्न भी मिट जाते हैं। जापक संसार सागर से तर जाता है। श्री परमेश्वर के भी अतिप्रिय श्री रामनाम को हम भक्तिभाव से स्मरण करते हैं, श्री रामनाम दयानिधान तो दीनों की आरति संकट को सदैव हरते ही रहते हैं।

कषाय विक्षेप लयादि हारकं सुतारकं संसृति सागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधिं स्मरामि भक्त्या परमेश्वर प्रियम्।।

श्री आङ्गिरस स्मृति का कहना है कि आप यदि मार्ग चलते अकस्मात् वाघ सिंहादि हिंसपशुसेवित घोर जंगल में पड़ गये हों, अथवा शत्रुओं से घिरे किले में बन्द हों, रास्ते में डाकुओं

ने आपको घेर रखा हो, इसी प्रकार अन्यान्य आपत्ति में आप फँस गये हों, तो श्री रामनाम का कीर्त्तन प्रारम्भ कीजिए। श्रीराम नाम के प्रभाव से आप तत्काल सभी आपत्तियों से बाल–बाल बच जायेंगे। आश्रितों की विपत्ति निवारण में ऐसे प्रवीण तथा स्वच्छ और स्वतंत्र हैं श्री रामनाम।

कान्तारवन दुर्गेषु सर्वापत्सु च सम्भ्रमे।
दस्युभि स्संनिरुद्धे च यस्तु श्री नाम कीर्त्तयेत्।।
ततः सद्यो विमुच्येद्वै रामनामप्रभावतः।
एतादृशं सदा स्वच्छं स्वतन्त्रं रामनाम च।।

श्री नारदीय पुराण में श्री सूत जी श्री शौनक जी से कहते हैं कि श्री रामनाम के स्मरण से समस्त क्लेश शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। श्री रामनाम से सुरक्षित नामजापक को विघ्न बाधा नहीं पहुँचा सकता। अन्त में उसे मुक्ति भी हो जाती है।

राम संस्मरणाच्छीघ्रं समस्त क्लेश संक्षयः।
मुक्ति प्रयाति विप्रेन्द्र तस्य विघ्नो न बाधते।।

श्री क्रियायोगसार में श्री धर्मराज ने अपने दूतों से कह दिया है कि भाई, तुम लोग श्री राम नाम उच्चारण करने वालों के समीप भूलकर भी नहीं जाना। भगवत्पार्षदों से पिटाइ घलेगी, तो मैं नहीं जानता। घोर कठोर राजा के द्वार पर आ गया हो, किसी शत्रु के किले में बंद हो जाय, विदेश में संकट ग्रस्त हो जाय, डाकुओं के पल्ले में पड़ गया हो, दुःस्वप्नदर्शन से भयाकुल हो, किसी क्रूर ग्रह के द्वारा पीड़ित हो जाय, घोर वियावानवत में जा पड़े अथवा भयंकर श्मशान में अंधेरी रात के समय जा पहुँचे, ऐसे संकटों के अवसर पर भी श्री रामनाम का स्मरण करता रहे, तो वह सभी संकटों से बच जाता है। नामजापक के समीप कोई भी आपत्ति फटकने नहीं पाती।

राजद्वारे तथा दुर्गे विदेशे दस्यु सङ्गमे।
दुःस्वप्न दर्शने चैव ग्रह पीड़ासु वै मुने।।
अरण्ये प्रान्तरे वाऽपि श्मशाने च भयानके।
रामनाम स्मरेत्तस्य विघ्नन्ते नापदो द्विज।।

वहीं यह भी कहा गया है कि महा घोर उत्पात होने पर, दुस्साध्य राजरोग से ग्रस्त हो जाने पर, श्री राम नाम का स्मरण करे, तो उसे कभी कोई भी अमंगल नहीं होने पायेगा। हे मुनिवर! श्री रामनाम सभी अमंगलों को मिटाने वाले हैं। इतना ही नहीं, श्रीराम नाम से मनोरथ सिद्ध कीजिए, मोक्ष लीजिए आपको सब देंगे। अतः बुद्धिमानों को इन्हीं का सदैव स्मरण करते रहना चाहिए।

औत्पातिके महाघोरे राजरोगादिके भये।
रामनाम स्मरन मर्त्योलभते नाशुभं क्वचित्।।
रामनाम द्विजश्रेष्ठ सर्वाशुभनिवारणम।
कामदं मोक्षदं चैव स्मर्तव्यं सततं बुधैः।।

श्री रामनाम के स्मरण करनेवाले कभी दुखी नहीं होंगे। मैं आपसे सत्य कहता हूँ। श्री राम नाम नित्य महामंगल को प्रगट करते हैं।

स्मरन्ति रामनामानि नावसीदन्ति मानवा:।
सत्यं बदामि ते नित्यं महामङ्गलकारणम।।

श्री प्रपन्नगीता में महर्षि श्री पुष्कर जी कहते हैं कि किसी घोर संकट से आपन्न व्यक्ति श्री राम नाम का स्मरण करता है, तो स्मरण करते ही उसका समुद्र के समान अपार दु:ख भी उसी समय मिट जाता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं करना।

ये केचिद्दुस्तरं प्राप्य रघुनाथं स्मरन्ति हि।
तेषां दु:खोदधि: शुष्को भवत्यपि न संशय:।।

श्री बड़े महाराज श्री सीतारामनाम सनेह वाटिका १८२ में कहते हैं कि श्री रामनाम सोहन हैं, सुख के निलय है, इनसे कोई स्नेह करे तो उसके शरीर, मन, वाणी के कोई भी क्लेश नहीं रहने पायेंगे। श्री नाम प्रभाव के विषय में जो कुछ वेद, संत कहते हैं, सब सत्य है। शान्ति के तो घर ही है। नाम जपने से घोर से घोर दु:ख भी मिटेंगे। लोक परलोक में सर्वत्र नामजापक शोक रहित होकर, आनंदपुंज से भरा रहेगा। देवता, मुनीश्वर, कोई भी उसे कोई कष्ट नहीं दे पायेंगे। श्री नाम जापक को किसी भी प्रयोजनीय वस्तु की कमी नहीं रहेगी। उसे लाखों प्रकार के मनोरम लाभ अनायास प्राप्त होते रहेंगे।

सीताराम सोहन सुखौन नामनेह किये
कायिक कलेश वाक् मानस न रहेगो।
साँचो श्रुति संत वर वैन ऐन चैन नाम
दशा दुखा दारुन दरार वन दहेगो।।
लोक परलोक में विशोक मोद थोक पाय
देवता मुनीश कोऊ फेंट को न गहेगो।
(श्री) युगल अनन्य काहू चीज की न कमी कछु
लाखन ललाम लाह अनायास लहेगो।।

एक पौराणिक कथा है। वन में कुछ ऋषिकुमार मिलकर खेल रहे थे। इसी बीच चारों ओर से वनाग्नि लग गयी। बालकों को कहीं से निकलने का मार्ग नहीं मिल रहा था। अपने अपने पिताजी से सब सुन चुके थे, भगवान्नाम सब संकटों से रक्षा करते हैं। अत: हार कर सब ऋषिपुत्र मिलकर नाम गान करने लगे। उसी समय संकट भजन नाम सरकार की कृपा से मूसलाधार वर्षा होने लगी। दाबाग्नि शांत हो गयी। सब बालक हँसते हुए अपने–अपने आश्रम पर लौट आये। कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक पृ. २०५ के आधार पर लिखा गया है।)

(वहीं पृ.२०६ में एक और प्रसंग छपा है। कल्याण केवल सच्ची घटना ही छापता है।)

एक वृद्ध ब्राह्मण को हत्याके अपराध में फाँसी की सजा हुई थी। वह बनारस जेल में अपनी फांसी की कोठरी में बैठा अपने अंतिम दिन गिन रहा था। जिस गाँव में ब्राह्मण रहता था, उसमें एक खून हुआ था। पुलिस ने चार गवाहों को इन ब्राह्मणों के विरुद्ध झूठी गवाही देने को राजी किया। इससे उसे फांसी की सजा मिली। इन गवाहों को सिखाते समय पुलिस ने उन्हे वचन दिया था कि सेशन अदालत से ब्राह्मण को हलकी से हलकी सजा मिलेगी, पर बाद में वह छोड़ दिया जायगा। पुलिस ने गांव वालों पर दबाव डालकर और उनको धमकाकर गवाह बनाया था, और अदालत में पेश हुए थे। जब ब्राह्मण को मालुम हुआ कि उसे फाँसी की सजा हुई है तो उसी समय से वह मृत्युतक भगवन्नामोच्चारण का निश्चय कर रामनाम जपने लगाा। जेल में भी वह केवल रामनाम जपता रहा। जेल के अन्य सामान्य कैदियों ने उसे अपने उपहास और विनोद का लक्ष्य बनाया, पर ये जपको खंडित करने में असमर्थ रहे। इसके पूर्व मैंने कभी किसी को इतनी तन्मयता से रामनाम जपते नहीं देखा था। इस प्रकार दिन बीतते हुये, वह हाईकोर्ट के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था। एक दिन जेल में बड़ा तहलका मचा, पता लगाने पर मुझे मालूम हुआ कि जब उन गवाहों को मालूम हुआ कि ब्राह्मण को फाँसी की सजा हुई है, तब वे अपने कुटुम्ब के सम्पूर्ण आदमियों के साथ सेशन जज के पास पहुँचे और उनको सारी कहानी ठीक–ठीक सुना दी कि किस प्रकार पुलिस ने उनको झूठी गवाही देने पर राजी किया, जिसके फलस्वरूप ब्राह्मण को फाँसी की सजा हुई। उन लोगों ने प्रार्थना की कि ब्राह्मण के बदले वे अपने सारे कुटुंब के साथ फाँसी पर चढ़ा दिये जाये। विज्ञ जज ने परिस्थिति की गुरूता देखकर ब्राह्मण की सजा हटा दी और झूठी गवाही देने के जुर्म में उन गवाहों को दो–दो वर्ष की सजा दी। उसने प्रसन्नता पूर्वक यह दंड स्वीकार किया। रामनाम का यह प्रभाव देख मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

संकट मोचन रामनाम

घटना मेरे मित्र की है । मित्र बीकानेर राज्य के एक भाग में ग्राम्य पाठशाला के निरीक्षण के लिये गये थे। राजस्थान में आज भी ऊँट ही सवारी का सर्वश्रेष्ठ साधन है। एकबार एक गाँव से दूसरे गाँव में जाने के लिये उन्होंने एक ऊँट को भाड़े पर तय किया। ऊँट से यात्रा सुबह तीन चार बजे आरम्भ की। मित्र ने देखा कि ऊँटवान 'राम' नाम का लगातार जप कर रहा था। १० मिनट, २० मिनट तक मित्र महोदय वह जप सुनते रहे। दस मिनट और निकल गये। सुनने–सुनते आधा क्या पूरा एक घंटा हो गया। मेरे मित्र भी थोड़े आस्तिक हैं। उनसे नहीं रहा गया। वे ऊँटवान से पूछ ही बैठे – 'क्यों भाई' तुम राम–राम लगातार कैसे जप रहे हो? नाम–जप की चाट तुमको कैसे लग गई? ऊँटवान थोड़ा मुसकराया और उसने बात को टालने की चेष्टा की, पर मित्र के आग्रह करने पर ऊँटवान ने कहा–

मेरे जीवन का एक प्रसंग है , जिसने मुझे राम का नाम दिया। मेरे गाँव से सटकर ही पंजाब प्रान्त की सरहद है। पंजाब से राठ जाति के लोग प्राय: गाय–बछिया–पशु आदि खरीदने के लिए आया ही करते हैं। मेरे घर पर एक बछिया थी, जिसे एक राठ ने खरीद लिया, पर उसने एक बात कही। उसने कहा– इस बछिया को मेरे घर तक पहुँचाना पड़ेगा। अभी यह

बछिया तुम्हारे खूँटे से और तुमसे हिली मिली है। अत: मेरे साथ जायगी नहीं। तुम मेरे घर पर मेरे खूँटे से बाँध दोगे, तब दाम दूँगा। उसकी बात मैंने स्वीकार कर ली। बछिया लेकर मैं चला। राह में एक गडढा पड़ा जो बरसाती पानी से भरा था। ईंट बनाने के लिये काफी मिट्‌टी खोदकर निकाल ली गई थी। अत: गड्ढा बहुत चौड़ा तथा ज्यादा गहरा था, इतना गहरा कि एक व्यक्ति आसानी से डूब जाय। मेरी बछिया मेरे साथ जा रही थी। इधर–उधर भागती बछिया एक बार ऐसी उचकी कि संयोग से उस गड्ढें में जा गिरी। मुझे अपनी असावधानी पर बड़ा खेद हुआ। उसे बचाने के लिए मैं भी गडढे में कूद गया। कूदने के पहले मुझे पता नही था कि गड्ढ़ा ज्यादा गहरा है और मुझे लेने के देने पड़ जायेंगे? वछिया को तो क्या बचाता? मुझे अपनी ही जान के लाले पड़ गये । तैरना तो आता नहीं था, मैं पानी में डूबने लगा। जीवन का अंत सामने दीखने लगा। कोई पास नहीं, कोई सहारा नहीं। संकट भी कुछ इस प्रकार का आया कि पाँव पानी की तह में जाकर मिट्‌टी की दलदल में धँस गये। अब तो जीवन की आशा पूर्णत: छूट गयी। निराशा छा गई। मन–ही–मन भगवान को याद किया। अंदर –ही–अंदर राम राम की रट लग गई। रक्षा के लिए गुहार करने लगा। इतने में क्या हुआ कि अचानक मुझे ऐसा लगा कि किसी ने झटका देकर मुझे ऊपर उठा दिया है, दलदल से पैर निकल गये हैं और मैं पानी की सतह पर आ गया हूँ। उसी समय मेरे सामने से तैरती हुई बछिया निकली। उसकी लंबी पूछ मेरी पकड़ में आ गई। वह तो तैरकर पार हो रही थीं, उसकी पूँछ को पकड़े–पकड़े मैं भी तैरता हुआ पार हो गया।

जीवन के इस संकट में ही मुझे रामनाम की प्राप्ति हुई। 'राम' के स्मरण ने विपदा की उस घड़ी में रक्षा की। इतना ही क्यों, उसके बाद भी अनेक विपदाओं में इस रामनाम ने मेरी रक्षा की है। अब तो यही मेरे जीवन का आधार है, आश्रय है।

ऊँटवान के इस प्रसंग को सुनकर मेरे मित्र अत्यधिक प्रभावित हुए। उनकी नाम–निष्ठा और भी बढ़ गयी।

विघ्न वाधा निवारण

श्री गणेशपुराण में श्री गणेश जी स्वयं ऋषियों को समझा रहे हैं कि श्री रामनाम सभी विघ्नों के नाशक हैं, सब संपत्ति को देने वाले हैं अमृत के भी सार सर्वस्व, निर्विकार एवं स्वतंत्र है।

''विघ्नानां संनिहन्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
सुधासारं सदा स्वच्छं निर्विकार निराश्रयम्।।

श्री ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में देवर्षिनारद जी ने महाराज अंबरीष जी से कहा है– महाभाग राजन् मेरे परमोत्तम वचन को आप सुन लें। यदि आपके सामने कोई भी उपद्रव आवे, तो आप उसके निवारण के लिये कोई और यत्न मत करियेगा। श्री रामनाम का कीर्त्तन शुरू कीजिये। सभी उपद्रव अनायास मिट जायेंगे।

अम्बरीष महाभाग शृणु मद्वचनं वरम्।
सर्वोपद्रवनाशाय कुरु श्री रामकीर्त्तनम्।।

श्री वामन पुराण में स्वयं वामन भगवान् मुनियों से कहते हैं कि बज्रपात आदिक दुर्घटना जन्य दु:ख समूह घटित हो जायें, अथवा अन्य दुष्टाचरण से उत्पन्न कष्ट समूह आ जुटे तो श्री रामनाम के स्मरण से क्षणमात्र में सब शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

अघौघा बज्रपाताद्याह्यन्ये दुर्नीत सम्भवा:।
स्मरणाद्रामभद्रस्य सद्यो याति क्षयं क्षणात।।

श्री नृसिंह पुराण में कहा गया है कि जैसे सूर्योदय होते ही अन्धकार आप ही आप समाप्त हो जाता है, उसी भाँति श्री रामनाम स्मरण करते ही सभी उपद्रव शांत हो जाते हैं।

सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्वान्तमाशु वै।
तथैव राम संस्मरणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवा:।।

इस पाप ताप पूर्ण संसार में कोई तो नाना प्रकार की चिन्ताओं से आतुर हो रहे हैं। कोई मानसिक, कोई शारीरिक रोग से व्याकुल हैं, किसी को ज्वर लगा है, कोई मृगीरोग से, तो कोई कुष्ठ रोग से, कोई यक्षमादि महारोगों से पीड़ित है। कोई बड़े—बड़े उत्पापों से व्यथित है, तो कोई अरिष्ठों से आक्रान्त होकर, मरणासन्न हो रहा है। किसी को महाक्रूर ग्रहदशा चिन्तान्वित कर रही है। कोई धन जन की हानि से महाशोक अग्नि में दग्ध हो रहा है। कोई भाग्यहीन जहाँ जाता है, वहीं तिरस्कृत होता है। कोई अपने दुराचरण के कारण लोक निन्दित होने से खिन्न है। कोई ऐसा अनाथ है कि कहीं भी उसे ठिकाना नहीं लग रहा है। कोई महादुर्भाग्य से अत्यन्त दु:खी है। कोई परम कंगाल बना है, कोई भाँति के संताप से हृदय जला रहा है, ऐसे दु:खी जीवगण भी यदि श्री रामनाम का कीर्त्तन करें तो उनके सारे दु:ख विपत्ति मिट जायँ और सुखी भी हो जाय। इस सबंध के श्रीवृहन्नारदीय पुराण के मूल श्लोक नीचे लिखे जाते हैं।

महाचिन्ताऽऽतुरो यस्तु महाधिव्याधि व्याकुल:।
ज्वरापस्मार कुष्ठादि महारोगे: प्रपीडित:।।
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्यदु:खित:।
महाशोकाग्नि संतप्तस्सर्वलोकस्तिरस्कृत:।।
महानिन्द्यो निरालम्बो महादुर्भाग्य दु:खित:।
महादरिद्री संतापी सुखी स्याद्रामकीर्त्तनात्।।

ऊपर वाह्य उपद्रवों की बात हुई। आगे मानस कष्टों को गिना रहे हैं। यदि कोई पापी काम क्रोध से आतुर है, तो कोई लोभ मोह में पड़कर उद्विग्न बना हुआ है। कोई राग द्वेष की आग में हृदय जला रहा है तो कोई बड़ी —बड़ी विषय दुर्वासनाओं से घिरा हुआ है। कोई १. भूख, २. प्यास ३. लोभ, ४. मोह, ५. सर्दी और गर्मी इन छओ उर्मियों से पीड़ित है। कोई १. काम,

२. क्रोध, ३. लोभ, ४. मोह, ५. मद और मात्सर्य (पराई उन्नति देख कर डाह से जलना) इन छवों विकारों से परेशान है। कोई भावी सुख संग्रह का खयाली पुलाव पका रहे हैं, तो विषयलिप्सा के कारण उद्धत हो रहा है। ऐसे घोर उपद्रवों से व्याकुल है, इसी प्रकार अन्यान्य भाँति–भाँति के दारुण उत्पातों से अत्यन्त दुखी हो रहा है। यदि भावपूर्वक श्री सीतारामनाम जपें, तो इनके सभी उत्पात मिट जायेंगे और ऐसे व्यक्ति भी दिव्य परमानन्द का अनुभव करने लगेंगे। वहीं वृहन्नारदीय आगे भी कह रहे हैं।

काम क्रोधातुरः पापी लोभ मोह महोद्धतः।
रागद्वेषादिभिर्दग्धो महादुर्वासनाऽऽवृतः।।
षड्भिरूर्मिभिराक्रान्तः षडविकारै विखिद्यतः।
मनोराज्य कषायाद्यै र्व्याकुलः समुद्रवैः।।
अन्यैश्च विविधोत्पातै दारूणैरति दुःखितः।
रामनामानुभावेन परानन्दमवाप्नुयात।।

श्री आदि पुराण में भगवान श्री कृष्ण ने श्री अर्जुन जी को समझाया है कि श्री रामनाम स्मरण करते ही मनुष्य आपत्तियों से मुक्त हो जाता है। जो ऐसे कृपासागर नाम का सदा स्मरण करते रहते हैं, उन्हें न जाने कौन–कौन सी दुर्लभ वस्तुएँ मिलेंगी।

नामस्मरण मात्रेण नरो याति निरापदम।
ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां ज्ञानेन किं फलम्।।

श्री सीतारामनाम स्नेह वाटिका में श्रीबड़े महाराज, मानव जाति के बाधकों के नाम गिना रहे है। मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच तत्व भी कभी–कभी बाधक बन जाते हैं। पच्चीसों प्रकृति तो बाधक हैं ही। रज, तम, सत तीनों गुण, छः प्रकार के विकार, और भी अनेक दोष दुःख देने वाले हैं। श्री रामनाम जापक को ये सब कभी संताप नहीं पहुँचा सकते। सम्मुख होकर कुदृष्टि से देख भी नहीं सकते। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार भी जापक के विपरीत नहीं होने पाते। देहासक्ति मानों शीशे का नुकीला टुकड़ा है, छूते ही गड़कर कष्ट देगी। अतः इसे त्यागकर नाम संचय रूपी अनमोल धन संग्रह करना चाहिये। श्री बड़े महाराज का आदेश है कि नाम जप से तुम्हारे सभी शोक संताप मिट जायेंगे। परमानन्द पाओगे तथा सच्चिदानन्द घनश्याम श्री जानकी रमण स्वयं ही आकर तुम से मिलेंगे।

पाँच तत्व प्रकृति पचीस तीन गुन षट
ऊरमी विकार षट और जेते दोष गन।
आँच नहीं देय सके तके सन्मुख नाहि
चित्त बुद्धि अहंकार चौथो महावीर मन।।

काँच को किरिच विच कौन तोको मिली नफा।
दफा करि दीजे दिव्य लीजे अनमोल धन।
युगल अनन्य नाम जापही से
मिटे हाय मिले आय आप चित्त धन।।२३८।।

श्री शनैश्चर स्मृति में स्वयं शनैश्चरजी कहते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति सभी उपद्रवों के नाश के निमित्त श्री राम नाम ही का जप करते हैं। मैं सत्य सत्य सत्य कहता हुँ। श्री नाम में श्रद्धा रखने वालों को मेरा कहना मान लेना चाहिए।

सर्वोपद्रवनाशार्थं रामनाम जपेद्बुधः।
सत्यं सत्यं न सन्देहो मन्तव्यं सततं जनैः।।

श्री अध्यात्म रामायण में कहा गया है कि जिन जिन देशों में श्री रामनाम की उपासना होती है, वहाँ अकाल की भूखमरी तथा दीनता दरिद्रता दोष नहीं आने पाते।

येषु येष्वपि देशेषु राम नाम उपासते।
दुर्भिक्ष दैन्य दोषाश्च न भवन्ति कदाचन।।

श्री शनैश्चर स्मृति में स्वयं श्नैश्चर देव ही कहते हैं कि मेरे कोप के कारण जो महाःदुख समूह को देने वाली ग्रहवाधा यदि उपस्थित हो, तो श्री रामनाम के जप के उत्साह से थोड़े ही समय में शान्त हो जाते हैं।

मत्कृता यां भवेद्बाधा महादुःखौध दायिनी।
रामनाम्नो जपोत्साही मुच्यते स्वल्पकालतः।।

श्री सूत संहिता का वचन है। जो मनुष्य श्री राम नाम का जप करते हैं, उनके शत्रुगण नष्ट हो जाते हैं, उन्हें दुष्टग्रह बाधा नहीं पहुँचा सकते। राक्षस भी उन्हें नहीं खा सकते हैं।

रिपवस्तस्य नश्यन्ति न बाधन्ते ग्रहाश्च तम्।
राक्षसाश्च न खादन्ति नरं रामेति वादिनम्।।

श्री नृसिंहपुराण का वचन है कि परस्त्रीगामी, वेश्यागामी दुराचारी, चोरी डकैती करने वाले दुष्टगण, महापातकवान, भी श्रद्धा भक्ति पूर्वक श्री राम नाम का स्मरण करें तो निश्चय सभी पापों से मुक्त होकर विशुद्ध बन जाये। श्री बाल्मीकि जी प्रमाण हैं।

दुराचारो महादुष्टो महाघौघ निकेतनः।
रामनाम स्मरन भक्त्या विशुद्धो भवति ध्रुवम्।

श्री मिथिला के सुप्रसिद्ध नाम जापक शिरमौर परहंस श्री सियालाल शरण जी विकार नाश के सम्बन्ध में अपना अनुभव बताते हैं।

नाम तत्त्व लखि परत जब, नासत सकल विकार।
'प्रेमलता' रवि उदय जिमि, रजनी केर अँधार।।

नाम रटत दुरवासना याचकता जरि जाय।
प्रेमलता बिनु आग जिमि, ग्रीषम घास नसाय।।
नाम रटे बिनु कबहुँ उर, होत न रहित विकार।
प्रेमलता यहि भाँति जिमि, झारे बिनु घर द्वार।।

एक संत का जो यहाँ तक विश्वास है और उस पर उनकी प्रबल दृढ़ता भी है कि रामनाम जपते चलो तो दुर्घटनाओं से बचोगे, रोगों से मुक्ति पावोगे, विपत्तियाँ झेलने में सुविधाएँ प्राप्त करोगे, कठिनाइयों को आसानी से पारकर जाओगे और इहलोक– परलोक में दोनों हाथ लड्डू रहेंगे। वे तो यह भी कहते हैं कि आरंभ में प्रेम, विश्वास श्रद्धा, भक्ति आदि कुछ भी न हो, तब भी राम नाम जपते–जपते आपसे आप इन सद्गुणों का उदय हो जाता है जैसे उलटा नाम वाल्मीकि के लिए फलप्रद हुआ।

कल्याण के वर्ष २३ वाली सं० २ के पृ० ८७० में 'विष्णुपुरेर काहिनी' नामक बंगला पुस्तक के आधार पर एक सच्ची ऐतिहासिक घटना छपी थी। विष्णुपुर नामक राजधानी में एक वैष्णव परम्परागत राज्यसिंहासन पर राजा गोपालसिंहजी सन् १७१२ ई० में अभिषिक्त हुए थे। ये भगवन्नाम कीर्त्तन के ऐसे अनन्यप्रेमी हुए कि अपने राज्य भर के चतुर्वर्णों के स्त्री–पुरुष सबों से बलपूर्वक नाम जप करवाने लगे। स्वयं भी हरिनाम कीर्त्तन में ऐसे लीन रहने लगे कि राज्यसंचालन में स्वतः उदासीनता बढ़ने लगी। इधर मराठा सेनापति भास्कर पंडित बहुत दिनों से विष्णुपुर राज्य पर आक्रमण करने का सुयोग देख रहा था। श्रीगोपालसिंह की उदासीनता का उसने लाभ उठाने की ठानी। मराठा सैनिक मुर्शिदाबाद, ढाका और विष्णुपुर वाले मल्लराज्य के अनेक ग्रामों को लूटते हुए, खाश विष्णुपुर आ धमके । मराठों के इस अभियान से अनजान होने के कारण विष्णुपुर नगर की सुरक्षा सेना उस समय असावधान थी। घोड़े से सुरक्षा में तत्पर विष्णुपुरी सैनिकों को परास्त करते हुए, मराठी सैनिकों ने दुर्गपर अधिकार कर लिया। गढ़ की सेना भागकर राजा गोपालसिंह को सूचना दी।

राजा की आज्ञा से राजधानी के सभी प्रजाओं ने भयभीत होकर अपनी धन–संपत्ति बाल बच्चों सहित दुर्ग के भीतर आश्रय लिया। अपनी सेना की पराजय जानकर और कोई उपाय रक्षा का न देखकर, हरिनाम कीर्त्तन करने की आज्ञा दी। हरिनाम की तुमुल ध्वनि से गढ़ गूंज उठा । इधर भास्कर पं० की युद्धश्रान्त सेना रात्रि विश्राम करने लगी। राजा श्रीगोपालसिंह के राज मंदिर में श्रीमदनमोहन नामक ठाकुरजी उनकी वंशानुगत पराम्परा से बड़े लाड़–प्यार पूर्वक पूजित थे। मराठी सेना को विश्राम करते देख, बीच में समय पाकर मल्ल सेना तोपों में बारूद भरने लगी और नये नये सैनिकों के दल दुर्ग में आने लगे। अचानक, आश्चर्यचकित होकर विष्णुपुर के मल्ल सैनिकों ने देखा एक अश्वारोही राजप्रसाद से निकलकर बड़े जोर से दुर्ग की ओर दौड़ा आ रहा है। घोड़े के खुर की धूल चारों ओर उड़ रही है और वह घुड़सवार इतने वेग से चला आ रहा है कि वह कौन है, वह भी अच्छी तरह दिखलायी नहीं पड़ता। सहसा दल–भादल तोपें गरजने लगीं और थोड़ी देर बाद देखा कि जंगल में, जहाँ मराठी विश्राम कर रहे थे। वहाँ दल–मादल तोपों के गोलों की घनघोर

वर्षा हो रही है। फलत: असंख्य मराठे सैनिक मौत के शिकार हो रहे हैं। देखते–देखते भास्कर पण्डित की आधी सेना समाप्त हो गई। मराठा–सेनापति ने पराजय स्वीकार ली और शेष सेना को लेकर धीरे–धीरे पीछे हटने लगा। मल्ल सैनिक दुर्ग से निकलकर पीछा करने लगे। मराठी सेना तितर–बितर होकर अपने प्राण लेकर जहाँ भी छिपने की जगह मिली छिप गई।

पीछे पता लगा कि शत्रु सेना के छक्के छुड़ाने वाला दो तोप एक साथ एक ही घोड़े पर लाद कर चलने वाला आश्चर्य शूरता दिखाने वाला घुड़सवार कोई और नही था। वह था श्रीगोपाल सिंह की राज पराम्परा द्वारा पूजित वही मदनमोहन नामक ठाकुर। कैसे पता लगा? वह घुड़सवार सबों को देखते–देखते तोपों को लाल बाँध (तालाब) पर उतारकर स्वयं अपने मन्दिर में अलक्ष रूप में प्रवेश कर चुका था। शत्रु सेनापति अपने मंत्री सहित उस घुड़सवार के पीछे–पीछे आये और राजागोपाल सिंह के चरणों में पड़कर अपराध के लिए क्षमा माँगी। राजा ने कहा 'अपराध किस बात का' शत्रु सेनापति ने सारा हाल आद्योपान्त कह सुनाया कि 'आपके एक ही घुड़सवार वीर पुरुष ने तोपों के गोलों द्वारा हमारी सारी सेना को तहस–नहस करके पराजित कर दिया। आपके पास ऐसे कितने वीर पुरुष हैं? राजा गोपालसिंह ने कहा– हमारे पास तो ऐसा कोई सवार नहीं है, जो घोड़े पर तोप बाँधकर युद्ध करे। सेनापति ने कहा– यह तो प्रत्यक्ष घटना है। दोनों तोपें लाल बाँध के इधर–उधर पड़ी हैं और घोड़ा मन्दिर के दरवाजे के बाहर मौजूद है एवं घुड़सवार को हमने स्वयं इस सभा मंडप के भीतर प्रवेश करते देखा है। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। दोनों वहाँ से सभा मंडप के भीतर गये तो शत्रु सेनापति ने मदनमोहन की विशालमूर्ति को देखकर तुरंत कहा कि 'बस' ये ही तो थे। तब राजा ने भगवान् मदनमोहन के वस्त्रों को देखा तो वे पसीने से भीगे थे। राजा गोपाल सिंह करुणभाव से अश्रुपात करते हुए बोले 'मैं बड़ा ही राज्यलोलुप हूँ। मेरे इस तुच्छ काम के लिए आपको युद्ध में जाना पड़ा। फिर उन्होंने शत्रु सेनापति के सौभाग्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें आशवस्त करके विदा किया– आप धन्यभाग्य हैं, जो आपको साक्षात् भगवान के दर्शन हुए। आपने जो कुछ आश्चर्य देखा है, यह सब इन भृत्यवत्सल शरणागतपालक दयासिंधु भगवान् मदनमोहन की ही लीला है।

❄ श्री नाम जप से अमरत्व ❄

श्रीशिवपुराण में स्वयं भगवान् शंकरजी, श्रीनारदजी को बता रहे हैं कि अनादि अनन्त रामनाम का सतत ध्यान करते–करते मैं भी अजरअमर अविनाशी बन गया हूँ। मैंनें यह गोप्य बातें आपसे ठीक–ठीक बतायी है।

यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशित्वं परं मुने।
प्राप्तं नाम्नैव सत्यं च सुगोप्यं कथितं मया।।
'नाम प्रसाद संभु अविनाशी। साज अमंगल मंगल रासी।।'

श्रीपार्वतीजी ने भगवान् शंकरजी से पूछा कि आप तो अमर बने हुए हैं और मैं आप अविनाशी की दासी (शक्ति) होकर भी बार–बार जन्ममरण का कष्ट क्यों भोगती हूँ?

प्रेमा परा रहस रसाल भक्ति भाव भेद
खोद से विहीन लीन लाभ ललकत हैं।
युगल अनन्य इष्ट अनुकूल झूल शूल
रहित सहित रंग रूप झलकत है।

श्रीरामनाम प्रतिकूल को अनुकूल बनाते हैं

श्रीदक्षस्मृति का वचन है कि श्रीरामनाम में जिसे रुचि बनी रहती है, उसके लिये विष हो जाता है अमृत, शत्रु बन जाता है मित्र, वह प्राणिमात्र का प्रेमपात्र बन जाता है।

विषं तस्य सुधा प्रोक्तं शत्रुस्य सुहृद्भवेत्।
सर्वेषां प्रेमपात्रं सः यस्य नाम्नि सदा रुचिः।।

श्रीरामनाम जापक शिरोमणि परमहंस श्रीप्रेमलता जी महाराज भी यही कहते हैं।

नाम रटत अब सुनहु गुन, होत सुदुख सुख दाय।
प्रेमलता जिमि कुजल मिलि, गंगहि गंग लखाय।।
नाम संग ह्वै जात भल, गुनद विषहुँ अति भीम।
प्रेमलता लहि चैत जिमि, सुखद होत कटु नीम।।

श्रीगोस्वामिपाद स्वरचित श्रीकवितावली (७।७५) में कहते हैं। निरन्तर नाम जपने वालों के लिए श्रीरामनाम सरकार अपना चमत्कार पूर्ण प्रभाव दिखाते हैं। नामजापक के ऊपर यदि प्रारब्ध प्रेरित कोई शोच संकट आने लगता है, तो उसी शोच संकट के माथे पर नाम सरकार शोच संकट डाल देते हैं। तब वह शोक संकट, श्रीनामजापक के लिये सुख शान्ति में रूपान्तरित हो जाता है। यदि तीनों तापों में कोई जलन नामजापक के हृदय में डालता है तो श्रीनाम उस जलन को ही जला कर भस्म कर देते हैं। डूबा हुआ भी तैरने लगता है। देखिये स्वयं डूबने वालों तथा औरों को भी लेकर डुबाने वाले पत्थर सब तैरने लगे और सेतु बन गये। श्री हनुमान जी ने पत्थर पर श्रीरामनाम जो लिख रखा था। बिगड़ी हुई बात भी बन जाती है। पूर्वजन्म के अपराधों पर प्रतिकूल बनकर श्री ब्रह्मा जी ललाट में दुख लिखने जा रहे हैं, नाम जपते हुए देखकर प्रसन्न होकर, सुख सौभाग्य लिख जाते हैं। इस प्रकार उसका अभाग्य सौभाग्य बन जाता है। जो लोग पहले उदासीन हो गये थे, वे अनुराग करने लगते हैं। गोस्वामी जी कहते हैं कि मेरे जैसे आलसी और निकम्मे का भाग्य जग जाता है। लूटने को आई हुई लुटेरों की सेना रक्षक और हितकारी बन जाती है। यहाँ तक कि आई हुई मृत्यु लौट जाती है। अत: नाम जापक की आयु बढ़ जाती है।

सोच संकटनि सोचु संकट परत जर
जरत प्रभाउ नाम ललित ललाम को ।

बूढ़िऔ तरति, बिगरीऔ सुधरति बात
होत दखि दाहिनो सुभाउ विधि बाम को।।
भागत अभाग, अनुरागत बिरागु, भागु,
जागत आलसि तुलसी हूँ– से निकाम को।
धाई धारि फिरिकै गोहारि हितकारी होत
आई मीचु मिटत जपत रामनाम को।।

कुटिल कर्म की रेख कठिन जो नाम रटे मिटि जाती है।
अनहोनी हो जाई भलाई दशहू दिशि दरसाती है।।
मृत्यु मातु सम होइ नाम बल जो सब जगकहँ खाती है।
प्रेमलता सो धन्य संत जेहि नाम सुरटना भाती है।।
कोटिन विघ्न विलाय नाम धुनि सुनि कर दे जाते टाला।
पावक शीतल होय हलाहल करै नामबल प्रतिपाला।।
अरिहु मित्रता करै डरै तेहि बाघ भालु बिच्छू व्याला।
प्रेमलता जो सदा नामकी फेरा करते हैं माला।।

श्रीरामनाम का चमत्कार

इस सम्बन्ध में हम सर्वप्रथम श्रीबड़े महाराज विरचित श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से कुछ कवित्त उद्घृत करते हैं। श्रीमहाराज अपने नामजप के अनुभव के बल पर कहते हैं कि परम रमणीय श्रीरामनाम परमानन्द निधान हैं। परमानन्द देना इनका सहज स्वभाव है। इनके अतिरिक्त भी चाहे कोई भी अघट कार्य सुघट कर सकते हैं, इसमें आश्चर्य क्या करना है? जल के भीतर आग प्रगट कर सकते हैं। शून्य आकाश में नाना प्रकार की पुष्पवाटिकाएँ प्रकट कर दे सकते हैं। राई के भीतर समेरु पर्वत को अँटा दें। एक बूँद में समूचे समुद्र रख दें, सूई के छेद से झुंड के झुंड हाथियों को आर–पार कर देवें, इनके लिये सब संभव है। अत: इन्हीं नाम ब्रह्म के कृपाकटाक्ष की सदा सर्वदा आशा बनी रहती है अन्य उपाय चित्त को रुचता भी नहीं है।

सीताराम नाम अभिराम महामोद धाम
चाहे जोइ करे आचरज कौन पावहीं।
नीर बिच पावक निवास त्यों अकाश मध्य
विविध बिहार बाग फूले सरसावहीं।
राई माँझ मेरु को समोइबो समुंद बुंद
सूई बेध ही से गज जूथन समावहीं।
श्री युगल अनन्य परमेश की कृपा कटाक्ष।
एक रस आस और चित्त में न भावहीं।

पुन: श्रीमहाराज कहते हैं सभी अनहोनी बातें श्रीनाम सरकार करके दिखा देते हैं। जो निष्ठा उत्साह सहित नाम का स्वाद ले–ले कर नाम रटते रहते हैं, उनके लिये श्रीनाम सभी असंभव संभव कर देते हैं। तौक एक वृत्ताकार वजनदार पटरी होती है, जो बड़े–बड़े अपराधी के गले में दंडस्वरूप पहनायी जाती है। वह भी जापकका कट जाता है। शत्रु प्रेरित वाणों की शृंखला भी श्रीनाम सरकार टूक–टूक कर तोड़ डालते हैं। श्रीनाम प्रभाव से वन्ध्या भी पुत्र प्रसव करने लगती है, आकाश में फूल खिलने लगता है। पाषाण पर भी डाले हुए बीज अंकुरित हो उठते हैं। बालू से तेल निकालना, खरहे के माथे पर सिंग जमा देना श्रीनाम सरकार के बायें हाथ का खेल है। श्रीनाम सरकार के करुणामय प्रभाव से सभी संभव है।

नाम अभिराम माँझ रमत जमत जौक
तौक तीर तार तूटि जात एक पल में।
बाँझ सुत जनत फुलत व्योम बीच फूल
बीजहू पषान बिच सुदय प्रवल में।।
सिकता से तेल बारि मथत कढ़त धीउ।
ससहूं में शृंग दरसात अविचलमें।
(श्री) युगल अनन्य नाम करुना प्रताप पाय।
अखिल अयोग योग होवत सुथल में।।३६२

पुन: कहते हैं कि श्रीनामसरकार चाहे जो कर दें, आश्चर्य क्या करना है? जल के भीतर प्रबल आग को बसा दें, उसमें बर्फ की पुतली दबाकर रखे रहें। स्त्री बिना पुरुष के संयोग से ही पुत्र जन्मा दें, बिना बीज बोये खेत में अन्न उपजा दें, सब कर सकते हैं। बिना प्राण प्रवेश कराये ही मृतक शरीर को चला फिरा सकते हैं। पत्थर को तैरा देवें। ये सब आश्चर्य सुनकर चुप्प रह जाना है। श्रीनाम सरकार सब प्रकार से समर्थ है। सब कर सकते हैं।

'चाहे जौन करें नाम अचरज कौन है।
नीर बीच अनल प्रबल को बसावैं, पुनि
तामें हिम मूरति दबावै द्रुत दौन है।
पुरुष विहीन सुत वाम उपजावै, बीज
बिना उपजावै खेत साँच बात तौन है।
प्रान के प्रवेश बिना देहहू चलावैं, तिमि
पाहन तरावै सुनि कीजै मुख मौन है।
(श्री) युगल अनन्य सब भांति समरथ तम
चाहे जौन करे नाम अचरज कौन है।। ३६३

पुन: आप कहते हैं कि आकाश में पुष्पवाटिका का प्रफुल्लित हुआ देखना आदि आश्चर्य की करामातें श्रीनाम सरकार से सहज संभव है। जो संत महानुभाव अज्ञानान्धकार से निकल आये हैं तथा

गृह सम्पत्ति को त्याग दिया है, वे ही श्रीनाम चमत्कार को समझेंगे। यथा शून्य आकाश की वाटिका में विलक्षण फूल खिलना असंभव है, उसी भाँति गृहस्थी मोह जाल में दिव्यानंद मिलना असंभव है। किन्तु विषय भोग में लंपट को कौन समझावे? वे तो उसी में लुब्ध हो रहे हैं। श्रीनामसरकार के चमत्कार को कहते नहीं बनता है। समझने पर नामाभ्यास के लिए अपार उत्साह बढ़ता है।

व्योम विहार बहार विलेकन की कुल कीमत नाम ते प्यारे।
संत सिरोमनि जानत है, तजि के तमतार अजार अगारे।।
फूलत फूल अजूब जहाँ रस लंपट लोभ लिये ललकारे।
(श्री) युग्म अनन्य कहे न बने मनमाह उमाह उद्वेत अपारे।। ४५६।।

पाथेयहीन व्यक्ति के लिए श्रीनाम सुपुष्ट पाथेय, (राह खर्च) है। सर्वथा निस्सहाय व्यक्ति के लिए प्रबल समर्थ सहायक बन जाते हैं। भाग्यहीनों के भाग्य चमकाने वाले, गुणहीन में सब गुण गण भर देने वाले हैं। गरीबों को निवाजने वाले दीनबन्धु हैं। दीनहीन व्यक्ति के लिए परमदयालु उदारदानी हैं। कुलहीन को उत्तम कुलवानों के समान पूज्य बना देते हैं। इसके प्रमाण वेद हैं। पंगु को हाथ पाँव देने वाले, अंधे को आँख देने वाले, भूखे के लिये माता—पिता के समान भोजन देकर तृप्त करने वाले, आधारहीनों के लिए स्वयं आधार बन जाते हैं। भवसागर से पार उतारने के लिए स्वयं पुल बन जाते हैं। सुख का सार सर्वस्व प्रगटाने वाले हैं। इनके समान तो कोई पतितों को पावन बनाने की सामर्थ्य भी नहीं रखता।

श्रीगोस्वामी जी अपना दृष्टान्त देते हैं कि ऊसर भूमि के समान किसी भी कर्म के फलोत्पन्न में हम असमर्थ थे, सो नाम जपने से उपजाऊ भूमि के समान चारों फलों से भरपूर हो गये।

'सुमिरु सनेह से तू नाम रामराय के।
संवल निसंबल को सखा असहाय के।
भाग हैं अभागे हूं को, गुन गुनहीन को।
गाहक गरीब को दयाल दानि दीन को।।
कुल अकुलीन को सुन्यो है वेद साखि है।
पाँगुरे को हाथ पाँव आँधरे को आँखि है।।
मायाबाप भूखो को अधार निराधार को।
सेतु भवसागर को हेतु सुख सार को।।
पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।
सुमिरि सुभूमि भयो तुलसी सो ऊसरो।।

श्री विनय ६९।

श्रीगोस्वामीपाद कहते हैं कि घोर सूर्य की तपन भी अपना स्वभाव पलटकर, नामजापक को छाया समान शीतल सुखदायिनी बन जाती है। यदि कोई कहे कि कमल कीचमें नहीं, पत्थर पर उत्पन्न हुआ है, सो नाम के प्रभाव से वह भी सही मानने योग्य है।

'रामनाम जप निरत सुजन पर करत छाँह घोर घामो।
नाम प्रभाव सही के जो कहै कोउ सिला सरोरुह जाम्यो।।

श्री विनय० २२८।

डाक्टर भगवतीप्रसाद सिंह लिखित श्रीहनुमान प्रसाद पोद्दार जी के जीवन– दर्शन पृ० ६४ से साभार उद्घृत है। सन् १९१६ ई०में भाई जी राजद्रोह के अभियोग में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के द्वारा बंगाल के बाँकुड़ा जिलान्तर्गत शिमलापाल नामक थाने के पास अन्तरीण (नजरबंद) रखे गये थे।

घर से ऐसा समाचार आया कि दादी रामकौर देवी बीमार हैं और मिलना चाहती हैं, पर अत्यधिक कमजोर होने के कारण वे शिमलापाल नहीं आ सकतीं। नजरबंदी के नियमानुसार पोद्दार जी शिमलापाल से बाहर नहीं जा सकते थे। कलक्टर भी बाहर जाने की आज्ञा नहीं दे सकता था। इनके मन में दादी जी से मिलने की तीव्र इच्छा जगी। बंगाल–सरकार को तार दिया, वहाँ से अस्वीकृति आ गई। बड़ी व्याकुलता हुई। फिर उसी भगवन्नाम का आश्रय लिया और इस निमित्त से जप आरम्भ कर दिया। उसी दिन एक मुसलमान डिप्टी कलेक्टर मुआइना करने के लिए थाने में आये थे। वे चटगाँव के निवासी थे। बड़े सहृदय तथा राजनीतिक व्यक्तियों के प्रति आदरभाव रखने वाले व्यक्ति थे। सरकारी अधिकारी होने से देश–भक्तों की सहायता करने में भय था, परन्तु भारतीय होने के कारण हृदय में राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं के प्रति अपार सम्मान था। वे पोद्दार जी से मिलने के लिए आये। इन्होंने उनसे सारी बातें बता दी। सब सुनकर वे बोले– 'आपके लिये कल ही आर्डर आता है।' इनको विश्वास नहीं हुआ। ये जानते थे कि आर्डर कलक्टर नहीं, गर्वनर ही दे सकता है और मिल सकता है एकमात्र कलकत्ता से। इतने समय में तो कलकत्ता आना जाना भी संभव नहीं। इन्होंने पूछा–'कल कैसे आ सकता है?' डिप्टी कलक्टर ने कहा– 'देखिये, कल आ जाता है।' डिप्टी कलेक्टरसाहब की बड़ी पहुँच थी। उन्होंने अपने दौरे का सारा कार्यक्रम स्थगित कर दिया। उसी दिन बाँकुड़ा गये और बाँकुड़ा से कलकत्ता जाकर गर्वनर के सेक्रेटरी से मिले। पूरी रिपोर्ट देकर उनसे कहा– ' पन्द्रह दिन के लिए पैरोलपर छोड़ना चाहिये। ' इसके फलस्वरूप पन्द्रह दिन तो नहीं, सात दिन के लिए पैरोलपर जाने की आज्ञा मिल गई और यह दूसरे दिन ही पोद्दारजी को प्राप्त हो गयी।

इसी प्रकार एक दिन इन्हें किसी सम्बन्धी से समाचार मिला कि इनके फूफा ज्वालादत्त जी सख्त बीमार हैं। उन्हें देखने के लिए व्यग्रता हुई, किन्तु स्वीकृति मिलने की कोई आशा दिखायी नहीं पड़ी। निदान प्रार्थना और नाम–जप का आश्रय लिया। संयोगवश उसी दिन इनके स्नेही पुलिस इन्स्पेक्टर चटर्जी महाशय आ गये। इन्होंने अपनी समस्या उनके सामने रखी। इन्स्पेक्टर साहब ने कलकत्ता जाकर इन्हें पैरोलपर जाने की स्वीकृति भेजवा दी। इन घटनाओं से पोद्दार जी को भगवन्नाम के प्रति निष्ठा प्रगाढ़ होने में बल मिला।

❄ श्रीनाम प्रारब्ध भी मिटाने में समर्थ है ❄

श्रीगणेश रहस्य में कहा गया है कि जिसके हृदय में श्रीरामनाम की अखंड स्मृति बनी रहती है, उसकी प्रारब्धरेखा भी धर्मराज मिटा देते हैं।

स्मरणे राम नाम्नस्तु मानसं यस्य वर्तते।
तस्य वैस्वतो राजा करोति लिपि मार्जनम्।।

श्रीआदिरामायण में श्रीहनुमतलालजी ने श्रीनलजी को श्रीरामनाम का चमत्कारपूर्ण प्रभाव बताया है। आप कहते हैं बुद्धिमान् जनों ने सिद्धान्त ठहराया है कि श्रीरामनाम में ही प्रारब्ध कर्म मिटाने की प्रवीणता है। दृष्टान्त के लिये श्री शबरी जी को बताते हैं। उनका अस्पृश्य शवर जाति में प्रारब्धवश जन्म हुआ था। वह जाति चाहे कितना भी कर्म–धर्म करे, विप्रों द्वारा पूजनीय वन्दनीय नहीं हो सकती। पर श्रीरामनाम के प्रभाव से स्वयं श्री राघवजू ने उसे मुनिजनों का वन्द्य बनाया और उसी के चरणामृत से पंपा सरोवर का जल शुद्ध होता दिखा दिया।

प्रारब्ध कर्मापहृति प्रवीणं रामेति नामैव बुधैर्निरुक्तम्।
यज्ज्ञानमात्रादधमा किराती मुनीद्रवृन्दैरभवन्नमस्या।।

श्रीसीतारामनामसनेहवाटिका में श्रीबड़े महाराज ने भी यही कहा है। श्रीनामानुराग करने से जापक को द्वन्द्व रहित परमानन्द का अनुभव होता है और उसके तीनों गुण अथवा, संचित क्रियमाण और प्रारब्ध तीनों कर्मयोग क्षीण हो जाते हैं। हृदय में सुपुष्ट परम प्रकाश सुगम हो जाता है। एक निमिष भी नाम रटन बिना व्यर्थ बीत जाय तो कोटि कुलिश की चोट से भी अधिक दुखदायी प्रतीत होता है। अमृत से भी अनन्तगुणा अधिक मधुर स्वाद मिलता है। इनसे वेदवाणी से भी बढ़कर, वाक्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है। वेद बखान कर कहते हैं, श्रीरामनाम ऐसे करुणानिधान हैं कि अपने अनुरागियों के लिखित भाल अंक भी मिटा देते हैं।

परानन्द द्वन्द्व से विहीन तीन छीन पीन
परम प्रकास नाम नेह से सुगम है।
एक पल रटन विहीन जो वितीत होय
सो तो कोटि कुलिस समान ही सुगम है।
मधुर पियूष से सहस गुन कहे हान
वचन विलास वेद वानी हूँ अगम है।
युगल अनन्य भाल अंक को मिटाय देत
करुना निकेत यो बखानत निगम है।।३९५।।

श्रीगोस्वामी जी की महावाणियों से भी यही सिद्ध होता है। यथा–

रामनाम सो विराग जोग, जप जागि है।
वाम विधि भालहू न कर्म दाग दागि है।। (श्री विनय ७०।३)

नाम लेत दाहिनो होत मन, वाम विधाता वाम को।। श्री विनय ।।
तुलसी प्रीति प्रतीति सो, रामनाम जप–जाग।
किए होइ विधि दाहिनो, देइ अभागेहि भाग।। श्री दोहा० ३६।
कुटिल कर्म की रेख कठिन जो नाम रटे मिटि जाती है।
अनहोनी होइ जाय भलाई दशहू दिशि दरसाती है।।
मृत्यु मातु सम होइ नाम बल जो सब जग कहँ खाती है।
प्रेमलता सो धन्य संत जेहि नाम सुरटना भाती है।। ७६।।
— श्री हितोपदेश शतक

नाम साधना संभूत अनुभव

श्रीबड़े महाराज ने हम आश्रितों के मार्गदर्शन के लिए श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका नामक एक विशालकाय ग्रन्थ लिखा है। इसमें कुल ३२४८ छन्द है। कवित्त, सवैया और झूलना ये तीन ही छन्द इसमें लिखे गये हैं। अंत में एक दोहा है। नामानुरागियों के लिए संपूर्ण ग्रन्थ मननीय है। यहाँ हम अपने लघु ग्रन्थ में कहाँ तक उनका उद्धरण दे सकते हैं? कुछ छंद यहाँ आपके अनुभव एवं नाम साधना अनुभूत प्रभाव सम्बन्धी उद्धृत किये जाते हैं।

आप कहते हैं कि श्रीसीतारामनाम की बार–बार बलिहार जाता हूँ। आपकी अहेतुकी करुणा से मुझे परमानन्दमय दिव्य धाम की प्राप्ति हुई। आपने कृपाकर मेरी तीनों वासनाएँ तथा तीनों ईषणाओं को नष्ट कर दिया। त्रिगुणमय उपद्रव सभी शांत हो गये। हमारे व्यथासमूह स्वयं सकुचाकर दब गये। माया का अपार सागर सूख गया। अब श्रीरामराज्य के नीतिमय देश में अपना निवास है, श्रीजानकीवर ईश्वरों के शिरताज हैं। आपके नाम के गुणों का गान कर अनुकूल स्वच्छ सुखसार की पराकाष्ठा तक पहुँच गया हूँ।

सीताराम नामही की बलिहारी बार बार
निरहेत करुना ते पायो मोद धाम दिव्य
वासना विलास बहवाय खानवाय तीन
ईषना उपाधि गुन दाह्यो हवनीय हब्य।।
सासना समूह सकुचाय सरमाप सूखि
सिंधु पर पार आप भये भई नीति नव्य।
(श्री) युगल अनन्य जानकीश सिरताज ईश
नाम गुन गाय स्वच्छ सीम सुख सार सव्य।।११३९।।

श्रीनाम सरकार के कृपाप्रकाश से दिव्यानंद प्राप्त हुआ तथा दुःख विरहित बड़ायी पायी है। हृदय में ही श्रीअवध छयल का निवास स्थान दीख पड़ा, जहाँ उनकी छवि छटा सदैव छायी रहती है। अनंत गुणगणनिलय श्रीजानकीरमण को दिव्यगुणों एवं उनकी विमल कीर्ति का गान करने

से विषय आशा गई एवं संसार का भानमिटा तथा अब हृदय रसि काई की कमल कली प्रफुल्लित हो रही है।

पाय प्रकाश विलास से खाश हुलास उदास विहीन बड़ाई।
छाय छटा छवि छैल निवास सुवास अजूब हिये दरसाई।।
गाय गुनेश सुकीरति आस विनास कियो भव भान भुलाई।
लाय ललाम सुनाम विकास 'अनन्य' सुकंज खिले रसिकाई।।११४३।।

पुनः कृपापूर्वक अपना अनुभव बताते हुए श्रीबड़ेमहाराज कहते हैं कि श्रीनामकी ही चिन्मय शक्ति से वेद, पुराण तथा कुरान आदिक धर्मग्रन्थ प्रगट हुए हैं। श्रीनाम रहस्य न समझ सकने के कारण अनजान व्यक्ति पढ़—पढ़ कर वृथा वकबाद में फँसकर, श्रीनाम का स्वाद नहीं ले रहे हैं। अनेक मत मतान्तर के ग्रन्थ तो पढ़ लिया, किन्तु श्रीनामरहस्य की जानकारी के बिना जीवन समाप्त होने पर है तौ भी यथार्थ रहस्य का तत्त्वज्ञान नहीं हुआ। मेरा तो शास्त्रवासना का बीज ही श्रीनाम प्रताप से जल गया है।

चेतन शक्ति से वेद पुरान कुरान अनेक सुशब्द भये हैं।
बूझे बिना बेवकूफ वृथा बहुवाद वके नहि स्वाद लये हैं।।
बोध विहीन पढ़े बहुधा मत, भासत भेद न जन्म गये हैं।
(श्री) युगल अनन्य सुनाम प्रतापते वासना बीज जलाय दये हैं।।१२१५।।

श्री बड़े महाराज श्री संतसुख प्रकाशिका नामक स्वरचित ग्रंथ में अपने शुभ संकल्प का उल्लेख नीचे लिखे गये शब्दों में करते हैं।

अब हम वसिहौं प्रीतम पास।
सकल लोक सम शोक समुझि जिय सब सन होय उदास।
सूरज चंद अनल दामिनि सम जहँ पल पल प्रतिकास।।
(श्री) युगलानन्य अमल नामहि चखि होहु मगल रसरास।।

श्री नाम के कृपाकटाक्ष के कण मात्र से, आपका वह संकल्प अब चरितार्थ हुआ है। आपका मानसिक निवास अब उसी दिव्य युगल विहार देश में हो रहा है जहाँ प्रेम, प्रमोद तथा प्रकाश का बाहुल्य है। अनंत साकेत सुन्दरियों के साथ रास विलास में तत्पर विश्वसुखदाता श्री जानकी रमण जू के संग आप भी एक विलासिनी नायिका रूप से वहाँ रहने लगे हैं। वहाँ अखंड दिव्य विलासानन्द परिपूर्ण रहता है। धूलवत् तुच्छ स्थूल शरीर के भान से ऊपर उठकर, आपने त्याज्य मन के संकल्प विकल्पों को हटा दिया है, कंटक के समान खटकने वाली दुर्वासिना मिट गई है। यह सब श्री नाम जप का प्रभाव है। अब तो आपके लिये दशो दिशाओं में वही रूपराशि कोटि कोटि विद्युतपुंज का प्रकाश छिटकाते हुए, सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

''सीताराम नाम कृपा कलित कटाच्छ कन
पाय प्रेम प्रमुद प्रकाश पर वास है।
आठ वाम वामवर विश्वअभिराम संग
रंग अविभंग अंग विशद सुवास है।।
मनोराज खाम, खार खाहिस, खजान खेह
देह को विहाय दूर भये अनायास है।।
(श्री) युगल अनन्य दाम दामिनी दमक दिव्य
दशहूं दिशान सुखखान रूपरास है।।''१३३०।।

श्री गोस्वामिपाद ने अपनी दोहावली में लिखा कि निष्काम नामजप से अविलंब दिव्यप्रेम की प्राप्ति होती है। उस दशा में गदगद कंठ, अश्रुपात तथा रोमांच आदि सात्विक विकार जापक के अंगों में अनायास होते रहते हैं। यदि तुम्हारा हृदय नाम स्मरण काल में प्रेम से द्रवित नहीं हो रहा है तो, ऐसा हृदय लेकर क्या करोगे? वह तो टुकड़े–टुकड़े करके फट जाने योग्य है। नयन में स्राव नहीं होता, वह नयन फूट जाय। शरीर में रोमांच नहीं होता तो वह शरीर जल जाय।

'हिये फाटहु फूटहु नयन जरै सो तन केहि काम।
द्रवै स्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत राम।।'

प्रारम्भिक जापक अपने में इस दशा का अभाव देखकर घबड़ा उठता है। श्रीबड़े महाराज आश्वासन देते हैं कि घबड़ाओ नहीं। नाम साधना में तत्पर रहो। गोस्वामी जी ने तीन ही सात्विक दशा को आवश्यक बताया है, तुम्हें आठो सात्विक विकार एक साथ अनायास उदित होंगे। मुझे भी प्राप्त हुआ है और जिन्हें प्राप्त होगा वे धन्यातिधन्य हैं। आठो प्रकार के सात्विक भाव कांतिमय होते हैं। श्रीजानकी कांतको वे आठो भाव बहुत ही प्रिय हैं। नामजप से ही ऐसा हो सकता है। अनायास शरीर में रोमांच होगा। नयनों से अश्रु प्रवाह बहने लगेगा। स्वरभंग अर्थात् गदगद् कंठ हो जायगा। प्रेमजन्य कंप भी शरीर में आपही आप प्रगट होगा। दिव्य शरीर की स्तब्ध दशा, अंग रंग का वैवर्ण्य हो जाना, मूर्च्छा, प्रलाप सभी होंगे और होंगे वेप्रमाण। उसे नापा–जोखा नहीं जा सकता । श्रीनामप्रताप से ऐसे प्रेम का दिव्य प्रकाश जिनके अंगों में हो जाता है, वे धन्य हैं।

' आठ भाँति कांतिकर कांतप्रिय सत्य सुचि
संभवित जौन तौन नाम ही सुजाप ते।
अनायास पुलक, प्रवाह नैन नीर, स्वर
भेदन, सुकंप, प्रगटात अंग आप ते।।
चिदवपु जड़ता, विवरन विचित्र वर,
मूर्च्छा, प्रलाप, विरहित जोख नाप ते।
(श्री) युगल अनन्य धन्य धन्य नाम जापो जन
पायो प्रतिकास प्रेम नाम के प्रताप ते।। १४४३।।

श्री बड़े महाराज अपनी प्रेमदीवानी दशा नामजप से संभवित बता रहे हैं। श्रीजानकी रमणलाल के श्रीसीतारामनाम अति सुखधाम से मेरी लगन लग गयी है। हृदय में निरंतर प्रेम की तरंग आलोडित होती रहती है। कलिकाल का दुष्ट प्रभाव एवं प्रारब्ध की दुखदायिनी रेखाएँ आप ही आप श्रीनामप्रताप से मिट गयी और प्रीतिकी वह श्रेष्ठता (हिश्मत) प्राप्त हो गई है, जो शोक दु:ख (गम) से सर्वथा विरहित हैं। अमृतमय संजीवनी के समान तथा पवित्रता का सारसर्वस्व श्रीप्राणप्यारे की अखंड स्मृति (सुरति) जग पड़ी है। श्रीप्राणवल्लभ जी के रूपगुणों में पग गई हूँ, जहाँ मनोनिग्रह (सम) आपही आप हो जाता है। प्रेमरस से जी जान आक्रान्त हो गया है और 'मैं अरु मोर तोर तै माया' मिट गई है।

झूलना छन्द १६७३ पढ़िये–

'लगी लाल के नाम से लगन मेरी
लहर कहर उठती जिगर आय हरदम।
भगी भभरि के भाल से काल किसमत
मिली प्रीति हशमत रहे जौन गत गम।।
जगी जीवनी सुधा सुचि सार सूरति
पगी यार के रूप गुन लाय के सम।
भनै जुग्म आनन्य जी जान घायल पगी
प्रेमरस, मिटि गई कथा हम तुम।।'

श्रीसीताराम नाम के छपे अक्षर वर्णराज है, साक्षात् श्रीयुगलकिशोर के स्वरूप ही समझो इन्हें। इनकी कृपा से ही दिव्य युगलविहार रहस्य का ज्ञान होता है। ये दयालु नाम सरकार अपने जापकों को दिव्य अनमोल अचल गुणगण तथा अनंत सुख देते हैं। एक ही बार श्रीसीतारामनाम का उच्चारण कर लो तो हृदय के क्लेश शांत हो जायें, विलक्षण पवित्रता आ जाय। श्री बड़े महाराज ने इन्हीं श्रीनाम सरकार से नेह नाता जोड़ा है। अत: इन्हीं के प्रभाव से कभी मंद न होने वाला दिव्यानन्द पाकर हृदय निहाल हो रहा है।

सीयपीय सहज स्वरूप वरनेश विधि,
विशद विहार बोध कारन कृपाल है।
अमल अमोल गुन अमित अडोल दिव्य
भव्य रस एक सुखदायक दयाल है।।
सुद्धता विचित्र भाँति वारक प्रतच्छ स्वच्छ
नाम सियराम हिय हरन कुसाल है।
श्रीयुगल अनन्य ताते इनही से नेह करि
अधिक अमंद मोद मानस निहाल है।। १७९०।।

नाम साधना से संभाव्य लाभ

अभिमान, मान बड़ाई की चाह और धन की तड़क–भड़क तीनों ही दु:खखान है और प्राणों को संकट में डालने वाले हैं। बैखरीवाणी में नामरटन करने से तीनों ताप मिट जाते हैं। नाम जापक के ऊपर भूत, प्रेत, दानव, दरिद्रता, अपराध प्रवृत्ति, दरिद्रता, दुष्ट वचन सुनने का खेद आदि अपना दुखद प्रभाव नहीं डाल सकते। श्रीसीतारामनाम जपने से परमानन्द का अनुभव होने लगता है। अत: श्रीनाम साधारण जीवों के लिए तो प्राण संजीवनी ही है। ऐसी जगत्प्रसिद्ध बात है तथा शास्त्र भी इसके प्रमाण हैं। श्रीबड़ेमहाराज का कहना है कि भोग वासना को भली–भाँति निर्मूल करने के लिए तो श्रीसीतारामनाम की प्रत्येक श्वास में तथा भोजन काल के प्रत्येक ग्रास में भी जपते रहो।

रामनाम रटत कटत अभिमान मान
शान दुख खान प्रान फाँस अनायास ही।
भूत प्रेत दानव दरिद्र दोष दुष्टवाद
करे न दखल कोउकाल ताके पास ही।।
जाहिर जहान सब शास्त्रन प्रमान
नाम महामौज खान जीव जान आम खास ही।
(श्री) युगल अनन्य भोग भावना समूल भली भांति
निर्मूल हेतु जपो सांस ग्रास ही।। २७३३।।

उदार शिरोमणि श्रीरामनाम जीभ से जप करते हुए, मन ही मन उनके सुयश के गान करने से तुमको दिव्य प्रेम रूपी पदार्थ प्राप्त होगा। श्रीनामजप छोड़कर दूसरे साधन के चक्कर में मत भटकना, और जगह स्वार्थ सिद्धि हो सकती है, पर सब प्रकार के परमानन्दमय परमार्थ तो परमोत्तम श्रीसीतारामनाम जप से ही संभव है। पंचाग्नि तापना आदि तपश्चर्या को छोड़कर, परम प्रेमनिधि श्रीनाम सरकार में भली–भांति प्रीति करना ही यथार्थ उपाय है।

नाम उदार सिरोमनि के जस गाइये पाइये प्रेम पदारथ।
और नहीं भटको कतहूँ सब ठाई समाइ रह्यो निज स्वारथ।।
पाँचहु आँच बिहाय भली विधि नाम महानिधि प्रीति यथारथ।
श्रीयुग्म अनन्य सुनाम जपे भलि भांति मिले मुदमय परमारथ।।१८१५।।

जिन बड़भागी ने श्रीनामरूप अमृत का स्वाद चख लिया, उनकी सभी वासनाएँ नि:शेष रूप से मिट जाती हैं। उनके हृदय में सतत आनंद भरा रहता है। उनके लिये मानस में तथा वाह्य जगत में भी श्यामगौर की झाँकी सदैव बनी रहती है। श्रीजानकीकांत प्राणवल्लभ को आत्म समर्पण कर देने पर, नामजापक को अचल अनुराग प्राप्त होता है। जो नाम नहीं जपकर, अन्य उपाय में रचते पचते हैं उनका पेट कभी नहीं भरेगा। कूकर के समान टुकड़े– टुकड़े के लिए भले भटका करें।

जानकी जीवन नाम सुधा जिन चाख्यो तिन्हें नहिं वासना और है।
आठहु जाम उछाह रहे तिनके हिय में मन बाहर गौर है।
आपको प्रीतम के पद पै बलिहारी किये अनुराग अदौर है।
(श्री) युग्म अनन्य सुनाम भजे बिन मागत मूरुख कूकुर कौर है।। १९८५।।

श्री जानकी जीवनजू के श्रीसीताराम नाम जपने से काल की भयंकरता तथा विषय वासना मिट जाती है। जापक को संसार का भान तनक भीं नहीं रह जाता। सुयश जोर श्री युगलकिशोर में प्रीति और प्रतीति (विश्वास) दोनों बढ़ जाती है। निष्काम भाव से प्रेमपूर्वक नामाभ्यास करने पर ज्ञान, वैराग्य तथा योग सिद्धि के महाफल श्रीनाम ही दे देते हैं। ऐसे ही नामानुरागी संत शिरोमणि के अनुग्रह से अगम अथाह तथा निर्वाध रहस्य का ज्ञान संभव है।

जानकी जीवन नाम जपे खपे काल कराल कषाय करोरन।
शेष रती न रहे जग की मति प्रीति प्रतीति बढ़े जस जोरन।।
ज्ञान विराग सुयोग महाफल नाम सुप्रेम अकाम हलोरन।
(श्री) युग्म अनन्य अतीव अगाध अबाध रहस्य सुसंत निहोरन।। २७७।।

रटत नाम सियराम संत जे चमचम चमका करते हैं।
असन वसन बिन मागे पावत प्रमुदित अवनि विचरते हैं।।
पूजत सब जग पांय नाय शिर राजौ तिन सन डरते हैं।
प्रेमलता बसुजाम सुमंगल मोद मौज मन भरते हैं।

रटते रटते नाम जींहसे राम रूप उर आवत है।
विविध जतन करि मुनिजन जेहि नित तजि मायामद ध्यावत है।।
महिमा अगम अपार जासु कहि वेदादिक कवि गावत है।
प्रेमलता सोइ ब्रह्म नामवश जो शंकर मन भावत है।।

त्रिगुणमयी माया जेहि प्रभु की जग कहँ नाच नचावति है।
सृजि पालति संहरति लोकत्रय रुख लखि बहुरि नशावति है।।
ज्ञानी शूर मुनीशन के मन छनमें पकड़ि डुलावति है।।
प्रेमलता सोइ नामजापकिनि शिशु सम लाड लड़ावति है।।

नाम रटे नशि है दुख द्वंद अमंगल संकट सोच विषादू।
नाम रटे नशिहैं परिताप प्रलाप कलाप विमोह प्रमादू।।
नाम रटे नशिहैं मद मत्सर दंभ मनोमल मायिक स्वादू।
नाम रटे नशिहैं अघ संकुल प्रेमलता जनि शोचिय बादू।।

नाम रटे मुदमोद प्रकाशत नाम रटे मन होत सुछंदा।
नाम रटे दशहूँ दिशि मंगल नाम रटै नसिहैं भ्रम फंदा।।
नाम रटे उर बोध अनूपम भक्ति विचार सुहोत अमंदा।
प्रेमलता रटि नाम निरंतर पावत सुंदर संत अनंदा।।

श्रीप्राणप्रियतम के अनुपम रम्यगुणों के अनेक कौतुक नाम लगन लगाते ही प्रत्यक्ष भासने लगते हैं तथा श्रीनामानुराग की चासनी में मन को पगाकर, नामाभ्यास करने पर हृदय में श्रीयुगलकिशोर की सुछवि के प्रति ऊँची – ऊँची सुमधुर अनुरागों की तरंगे उठती रहती हैं। मोह रजनी से जगकर अथवा रात्रि जागरणपूर्वक नाम रटन करने पर, रागद्वेष, कठिन क्लेश, कलिकृत उपद्रव, कड़ुवी तथा व्यर्थ की विषयस्पृहा मिट जाती है। अपनी दिव्य आशा, मनोरथ तथा आत्मस्वरूप की कल्पनातीत सुन्दर मनोरम चाँदनी श्रीनामसरकार प्रदत सौभाग्य से भासने लगती है।

नाम रंग रूप गुन अमल अनूप प्रिय
प्रगट प्रतच्छ होत नाम लाग लागते।
उज्ज्वल उतंग पर तरल तरंग छवि
उठत हमेस नाम प्रेम पाग पागते।।
रागद्वेष दारुन कलेश करतव कलि
कटुक कषाय जाय जात जाम जागते।
(श्री) युगल अनन्य आस आतम अचिंत्य चाह
चाँदनी चमक चारु भासे भाग भागते।। १५३५।।

ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासु वेदान्त अध्ययन का महत्व अधिक देकर, वेदान्त का अध्ययन करते तो हैं, परन्तु सच्चे ज्ञानोदय के अभाव में झखते रहते हैं। श्रीसीताराम में निर्मल स्नेह तो हुआ नहीं। चित्त की चाही सुख शान्ति मिले तो कैसे? आलस्यप्रमाद को तथा विषय आशा को त्याग कर, नामाभ्यास कीजिए। दिव्य प्रेम का सूर्योदय होगा और आप आनंदसिंधुमें मगन हो जायेंगे। नामजापक अचानक आनंदसिंधु में जाकर मगन हो जाते हैं।

वेद परत्व विशेष कर पर बोध उदोत बिना विललात हैं।
नाम निसोत सुनेह नहीं केहि भांति लहे चित्त की कुसलात है।।
आलस आस उदास किये मुद माहि समाइये प्रेम प्रभात है।
(श्री) युग्म अनन्य प्रमोद नदीस में आकस्मात ही जाय समात है।।१२१६।।

नाम रटने से जापक को अपने इष्ट में प्रीति प्रतीति दृढ़ हो जाती है। उसे रसरीति का बोध हो जाता है। जापक विनीत हो जाता है। उसमें गंभीर गुणगण आ बसते हैं। वह धीर और शीतल हो जाता है तथा उसे सुख राशि ही हाथ लग जाती है। वह लोक परलोक में शोक रहित हो जाता है। वह मोहान्धकार की परिधि से बाहर निकल आता है। अत्यन्त महान पुरुषों की गोष्ठी में उसे स्थान मिलता है। उसके सभी दिव्य मनोरथ सफल हो जाते तथा हृदय की

आनन्दकमल– कली प्रफुल्लित हो उठती है। सभी सिद्धियाँ उसकी मुट्ठी में आ जाती है। तथा उसके सभी दु:खशोक विनष्ट हो जाते हैं।

'प्रीति परतीति रस रीति सुविनीत गुन
गहर गंभीर धीर सीर सुख रास है।
लोक परलोक में असोक तम तोक बिना
महत महानन की सभा में सुबास है।।
अनायास उदित मुदित अभिलाष खास
मधुर सुमंजु कंज विसद विकाश है।
श्री युगल अनन्य सब सिद्धि करतल नित्त
नामही के रटेते उदासता विनाश है।। १२४३।

अब अगिले दो तीन छन्दों में हम मधुर उपासक रसिक महानुभावों के लिये नाम साधना से संभाव्य दिव्य युगलविहार रहस्य के दिव्यानुभव के सम्बन्ध में दो चार बातें श्री बड़े महाराज की महावाणी के प्रकाश में दर्शायेंगे। श्री जानकीरमण जी का श्रीरामनाम रमु रमणार्थ साधु से सिद्ध दिव्य रस से भरा है। वैसे सरस नाम में मन रमाने से जापक के लिए लोक विलक्षण दिव्य रस के सिंधु में रमण करना सहज संभव है। श्रीयुगलकिशोर में रागासक्ति एवं संसार के विषय विलास से रागरहित होना दोनों सरस श्रीनाम जप का परिणाम होगा तथा विहार देश में पहुँचाने वाले (सायब) (साइब) अनुराग भी उदित होगा। जीव को विह्वल बनाने वाले भयंकर कलिकाल का प्रभाव स्वत: मिट जायगा। नाम जप से ही परम पावन रस सिद्ध सुधी संत का समागम होगा। ऐसे रसिक महानुभावों को आप श्रीयुगलकिशोर का प्रतिरूप (नाइव) ही समझें।

'राम सुनाम रमे रमिहै, रस सागर माँझ अथाह अजायव।
राम अराग दोऊ अनुभव अनुराग बिहार बहार सुजायव।।
काल कराल विहाल जहां तहँ आपहि आप से होंयेगे गायव।
(श्री) युग्म अनन्य मिले तब मौज जभी सुचि संत समागम नायब।।' २६६७।।

दिव्य सुखों का सार तो युगल दिव्य विहार ही है। वहाँ रसकी धारा ही बहती रहती है। ऐसे रससिन्धु युगल सरकार के प्रति प्रेमप्यार का उदय होना, श्रीनामही के अधीन है। जपिये और पाइये। आप जप के द्वारा श्रीसीतारामनाम में मन को रमाइये। फिर आप संतोचित निर्मल विचार हृदय में स्फुरित कराना चाहें, सो भी होगा। संतों का स्वच्छ आचार–विचार टकसार में आप नाम कृपा से ढल जायेंगे। युगलकिशोर में इश्क (रागासक्ति) का दिव्यानन्द भी नामजप से ही संभव है। दिव्यप्रेम का सिन्धु हृदय में उमड़ाना, हृदय में दिव्य सद्गुणों को बसाना, प्राण संजीवनी युगल मनहरण ललन के दिव्यदर्शन (दिदार) कराना श्रीनामही परतंत्र हैं। मन को अचंचल, शांत बनाना हो, बोलको अटल बनना हो, तो भगवान् शंकर के हृदय में दिव्यहार के समान सुशोभित होने वाले श्रीसीताराम नाम को अपने हृदय में बसाइये।

'विमल विहार रसधार सुखसार सुचि
सिन्धु सरकार प्यार नाम के अधार है।
विसद विचार संत स्वच्छ टकसार
इश्क अमल वहार नाम रमत अपार है।।
प्रेम पारावार दिव्य गुन गुलजार
जान जिवन दिदार नाम तंत्र एकतार है।
(श्री) युगल अनन्य मन लोल अविलोल बोल
अटत अतोल नाम हर हिय हार है।।' १२०९

श्रीनाम जप से आपके हृदय में प्रेम का सिन्धु उमड़ेगा। सुखसार की सीमा तो श्रीयुगल अवधविहारी हैं, उनसे मिलन का उत्साह बढ़ेगा। नींद स्वप्न दशा में भयंकर दृश्य का अनुभव कराने वाली है। ऐसी तमोगुणमयी निद्रा दब जायगी। दिलदार यार श्री अवधकुमार के अविकृतरूप दर्शन ही मौजदार क्षेम है। श्रीनाम वर्णराजों में ही उस रूप की झलक होगी। जिस सुखद सौज से सम्पन्न स्वर्णकुंड में युगलबिहारी जी बिहरते हैं, उस अनिद्य हौजका (अन + ओट – अनोट) निरावरण साक्षात्कार आपके लिये एकरस सदा बना रहेगा। सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि आपके हृदयकमल को प्रफुल्लित करने वाले विलक्षण सूर्य के समान नामसरकार के हृदय में आते ही यह सब चमत्कार होने लगते हैं।

'प्रेम पारावार उत्साह सुखसार सीम
भीम भान भवन दवन नाम निंद है।
छेम मौजदार दिलदार अविकार रूप
झलक परत बरनेस विच चिंद है।।
हेम हौज सौज शौकदार दिखलाई देत
दृगन अनोट एकरस अविनिंद है।
(श्री) युगल अनन्य मोद मधुर मरंद मित्र
नाम सुविचित्र उर आवै अरविन्द है।। १५३६

नामही रटत कलिकलुष कटत सुख सटत
सुझत जीव मुक्ति पद पावही।
नाम ही रटत रामरूप रति प्रगटत
घटत कुचामवाम प्रीति परिनामही।।
नामही रटत राम लीला लखि लोभै मति
तन धन लोक लीला नहीं मन भावही।
नामही रटत रसरंगमनी प्रेमानन्द
पावैं जीव जोपै मन नाम मै जुटावही।।

नामही रटत रामधाम ध्यान वास मिलै।
मानसी सुप्रीति पूजा झिलै चित्त चावहीं।
नाम ही रटत भव विषया विरति होति
माया गोति काम मद दंभ न सतावहीं।।
नाम ही रटत रस भावना सुभाग जागै
भाल के कुभाग भागै राम प्यारे लागही।
नामही रटत रसरंगमनी परा भक्ति
पावैं जीव और जुक्ति सपने न पावहीं।।

प्रातःस्मरणीय श्रीजयदयाल जी गोयन्दका भगवन्नामाङ्क पृ० ६८ में नामजप विषयक स्वकीय अनुभव लिखते हैं।

'कुछ मित्रों ने मुझे इस विषय में अपना अनुभव लिखने के लिये अनुरोध किया है। परंतु जब कि मैंने भगवन्नाम का विशेष संख्या में जप नहीं किया, तब मैं अपना अनुभव क्या लिखूँ? भगवत्कृपा से जो कुछ यत्किंचित नाम–स्मरण मुझसे हो सका है, उसका माहात्म्य भी मुझसे पूर्णतया लिखा जाना कठिन है।

नाम का अभ्यास मैं लड़कपन से ही करने लगा था। जिससे शनैः शनैः मेरे मन की विषय वासना कम होती गई और पापों से हटने में मुझे बड़ी ही सहायता मिली। काम क्रोधादि अवगुण कम होते गये, अन्तःकरण में शान्ति का विकास हुआ। कभी–कभी नेत्रबन्द करने से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अच्छा ध्यान होने लगा। सांसारिक स्फुरणा कम हो गयीं। भोगों से वैराग्य हो गया। उस समय मुझे वनवास या एकान्त स्थान का रहन–सहन अनुकूल प्रतीत होता था। इस प्रकार अभ्यास होते–होते एक दिन स्वप्न में श्रीसीताजी और श्रीलक्ष्मण जी सहित भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के दर्शन हुए और उनसे बातचीत भी हुई। श्रीरामचन्द्रजी ने वर माँगने के लिये मुझसे बहुत कुछ कहा, पर मेरी इच्छा माँगने की नहीं हुई। अन्त में बहुत आग्रह करने पर भी मैंने इसके सिवाय और कुछ नही माँगा कि 'आपसे मेरा वियोग कभी न हो।' यह सब नाम का ही फल था। इसके बाद नामजप से मुझे और भी अधिकतर लाभ हुआ, जिसकी महिमा वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। जब जब साधन से च्युत करने वाले भारी विघ्न प्राप्त हुआ करते थे, तब–तब मैं प्रेम पूर्वक भावना सहित नामजप करता था और उसी के प्रभाव से मैं उन विघ्नों से छुटकारा पाता था। अतएव मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि साधन पथ के विघ्नों को नष्ट करने और मन में होने वाली सांसारिक स्फुरणाओं के नाश करने के लिए स्वरूप चिंतन सहित प्रेमपूर्वक भगवन्नाम जप करने के समान दूसरा कोई साधन नहीं है, जबकि साधारण संख्या में भगवन्नाम जप करने से ही मुझे इतनी परमशांति, इतना अपार आनन्द और इतना अनुपम लाभ हुआ कि जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता, तब जो पुरुष भगवन्नाम का निष्काम भाव से ध्यान सहित नित्य निरंतर जप करते हैं उनके आनन्द की महिमा कौन कह सकता है?

वहीं भगवन्नामांक पृ० ७८ में कलकत्ते के एक अनुभवी नामजापक श्रीहीरालाल जी गोयन्दका लिखते हैं।

श्रीरामनाम में पतितको पावन, नीच को उच्च, अधर्मी को धर्मात्मा और विषयीको विरागी बनाने की अद्‌भुत शक्ति है। महान् दुराचारी पुरुष भी निरंतर निष्काम नामजप से सत्बर पापमुक्त होकर शुद्धान्त:करणवाला धर्मात्मा बन जाता है और शरीर के रहते हुए भी वह उस परम शान्त रूप परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। भगवान कहते हैं—

अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामन्यभाक् साधुरेव स मन्तव्य: सम्यग्व्यवसितो हि स:।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति कौन्तेय प्रतिजानीहि न में भक्त: प्रणश्यति।।

गीता ९। ३०, ३१।

नामजप की वृद्धि के साथ ही संसार में वैराग्य और भगवान् में प्रेम की वृद्धि होती है। हृदय में भगवत्स्वरूप स्फुरित होने लगता है। भगवान् के ध्यान में रुचि होती है और स्वत: ही ध्यान होता है। नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगती है, हृदय गद्‌गद हो जाता है। यों होते—होते साधक की वृत्ति भगवत्स्वरूप में तदाकार हो जाती है और फिर किसी समय में ध्यान नहीं छूट सकता। सगुण स्वरूप के दर्शनाभिलाषी को भगवान् स्वयं प्रगट होकर दर्शन देते और उससे बात करते हैं तथा अंत में अपने स्वरूप का ज्ञान प्रदान करके अन्तर्धान हो जाते हैं। यदि साधक की इच्छा भगवत्तत्व जानने की होती है तो ध्यानकाल का भगवत्स्वरूप अन्तर्धान हो जाता है और उसे सर्वत्र एक सच्चिदानंदधन परमात्मा ही भासने लगता है। जैसे स्वप्न से जागने के बाद पुरुष को स्वप्न संसार की केवल आकृतिमात्र भासती है, इसी प्रकार उस भगवत् प्राप्त पुरुष को भी यह संसार केवल आकृति मात्र से ही भासता है। उसके ज्ञान में केवल एक रामही रह जाते हैं। यह स्थिति नामजप के प्रताप से होती है। अतएव प्रत्येक पुरुष को निष्काम भाव से भगवन्नाम का जप करना चाहिए।

अखंड जप से और अधिक लाभ

निरन्तर का तात्पर्य कि नियम के बीच एक दिन भी छूटे नहीं। एक दिन भी नागा पड़े तो सिद्धि में रुकावट हो जाती है।

नैरन्तर्य विधि: प्रोक्त: न दिनं व्यतिलंघयेत्।
दिवसातिक्रमे तेषां सिद्धिरोध: प्रजायते।।

इस तुच्छ लेखक की सम्मति में जागृति अवस्था में एक क्षणभी नामजप न छूटने पाये। हाथ में माला न भी रहे तो जीभ नाम रटन करती ही रहे।

श्री बड़े महाराज का परम हितकर उपदेश है कि श्रीजानकी जीवनजू का प्रकाशपुंज युगल सीतारामनाम स्नेह संयुक्त तैलधारावत् अखंड जप कीजिए, नीद पड़ने पर जीभ भले रुके, नहीं तो जाग्रत दशा में माला हाथ में नहीं रहने पर भी जीभ सतत नाम रटने में तत्पर रहे। शौचालय में बैठे—बैठे भी नामजप होता रहे। भोजन काल, प्रभाती करते समय, चलने फिरने के समय भी

जपको सम्हाले रहें। कभी जीभ रुके नहीं। जीभ भोजन चबाने समय नाम छोड़े, तो उस समय मन जप करें। काम तो कठिन है, परन्तु असंभव नहीं है। अजी, ऐसा अखंडजप जाग्रत दशा में होगा, तो आप नींद में भी नाम रटते ही रहेंगे। इन पंक्तियों के लेखक ने ऐसे नामजापकों के दर्शन किये हैं, जो जाग्रत के समान ही निद्रावस्था में भी बैखरी वाणी में नामोच्चारण की झड़ी लगाये रहते थे।

अब निरन्तर जप का लाभ बताते हुए श्रीबड़े महाराज हमें आश्वासन देते हैं कि तुम्हारे अनिष्ट करने वाली कोई बात नष्ट होने से नहीं रहेगी, अर्थात् मिट जायेगी। सारे उत्पात, सारे प्रपंच भाग खड़े होंगे। श्रीजानकीजीवन प्राण के प्रति अचानक प्रीति–प्रतीति उदित हो जायगी। श्रीनाम को दृढ़तापूर्वक हृदय में धारण किये हुए जीभ से निरन्तर नाम रटने से मान रहित होने की रीति सुनी जाती है।

'जानकीजीवन नाम प्रभानिधि नेह नहे जपिये एकतारे।
हान की बात न नेक रहे उत्पात प्रपंच पलाय पवारे।।
प्रानकी प्रीति प्रतीति सुजान, आकस्मात विचित्र बहारे।
(श्री) युग्म अनन्य अमान की रीति सुनात सुनाम रटे द्रूढ़ धारे।।' ११३१।।

आठो पहर जीभ से निरन्तर नाम जपने वाले के काम और लोभ इस प्रकार मिट जाते हैं कि उन्हें कामिनी के चामवाले शरीर से, दाम अर्थात् रुपये पैसे से कोई भी मतलब ही नहीं रह जाता है। निरन्तर नाम जापक के हृदय में सुख शांति का अनुभव इस कारण होता है कि वहाँ कच्ची बुद्धि में समाये रहने वाली दु:ख का घर मोह ममता तथा लौकिक भोगवासना, मान बड़ाई की चाह आदि नाम प्रभाव से मिट जाती है। ऐसे जानकीकांत जी की गुलामी (सेवकाई) के अभिमान से (अस अभिमान जाइ जनि भोरे। मैं सेवक रघुपति पति मोरे) मायिक त्रिगुण का तार विगत हो जाता है। श्री बड़े महाराज अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि समस्त वाणियों की उत्पत्ति तथा स्थिति स्थान तो (वर्गधाम) अनादि श्रीसीतारामनाम ही है। उन्हीं को जीभ से उच्चारण करने से मैंने प्रियतम के परम दिव्य रूप के प्रति प्रीति भी पायी है।

'जिन जीह जापौ नाम अभिराम अष्ट याम
तिनही न काम रह्यो चाम अरू दाम से।
ममता मलिन मति खाम दु:खधाम तजि
पायो विश्राम विश्ववासना विराम से।।
जाग्यो जिय जोति प्रीति निखिल निसोत
तिभि गुनगन गोत गयो गरब गुलाम से।
(श्री) युगलअनन्य नाम रसना अधार करि
पायो प्रिय रूप अनुराग वाग धाम से' ।।१७८९।।

जीभ से एक बार सीताराम उच्चारण के समान कोटि–कोटि तीर्थ, व्रत, दान, पुण्य, यज्ञादि के फलों को कहना तो अज्ञानता ही है। सच बात तो यह है, एक नामोच्चारण का फल स्वयं शब्द ब्रह्मरूप वेद भी नहीं निरूपण कर सकते, ऐसा वेदवत्ता बुद्धिमान् कहते हैं। जो बड़भागी नामानुरागी दिनरात अखंड तैलधारावत् नामोच्चारण करते रहते हैं, उनके विशुद्ध परत्त्व महत्त्व को कहां कहाँ जा सकता है? जैसे क्षुधातुर भोजनान्न के समीप लुब्ध रहता है, उसी भाँति परातत्पर ब्रह्म स्वयं श्रीजानकीरमणजू ऐसे जापक के आसपास लुब्ध की भाँति मड़राते रहते हैं। श्रीबड़ेमहाराज का विमल आदेश है कि ऐसे निर्विकार, सारे उपद्रवों को शांत करने वाले श्रीनाम को निरंतर रटते रहो। जगत जीव के विरोध (जुध) की परवाह न करो।

एक बार रसना उचारको महत्त्व वेद
वचन बयान योग वदत न वेद वुध।
जौन जन रैन ऐन रटत अखंड नाम
तिनको परत्व प्रिय कहिये कहाँ लों सुध॥
परम परेस हूँ लुभाय रहे ढिग नित्त
नामिन के आसपास आतुर सजाय छुध।
(श्री) युगल अनन्य अनुपाधि अविकार नाम
रटिये सचेत हेरिये न जग जीव जुध॥ १२८१॥

श्रीनामजप के प्रभाव से जापक के आसपास श्रीयुगलरूप का प्रकाश अनायास हो जाता है। इसमें कुतर्क कौन करेगा? मूर्ख व्यक्ति अज्ञानवश श्रीनामपरत्व प्रतिपादक शास्त्रवचन को बढ़ा चढ़ा कर कहा गया मिथ्या वकता फिरता है। वह तो स्वयं मोहसिंधु में बहा जा रहा है, उनकी बकवाद कौन सुने? सावधान होकर शाश्वत फलप्रद नामजप को चालू रखें, तो प्रेमप्रकाशक दर्जे तक सुगमता से पहुँच सकते हैं। श्री बड़ेमहाराज का कहना है कि निर्मल अतुल नाम प्रभाव की चमक तभी संभव है, जब तैलधारावत् अखंड नामजप का प्रवाह जारी हे।

नाम के प्रभावते प्रकाश आसपास होत
अनायास यामें मीनसेख कहो को कहे।
अर्थवाद व्यर्थ वकि वदन सुबोध बिन
वालिस विशेष मोह वारिनिधि में बहे॥
होय हुशयार कार कायम करत किल
अनायास प्रेम प्रतिकाश पद को लहे।
(श्री) युगल अनन्य आव अमल अतोल तब
रहे एकतार नाम रटन सदा गहे ॥१३२४॥

अखंड नामजप करने की लालसा रखने वाले जापक श्री बड़े महाराज के संयम सम्बन्धी आदेश को नीचे लिखे गये सरल सुबोध कवित्त में पढ़ें।

'राम रस चाखिये न भाखिये विकार वैन
ऐन अभिलाषिये अनूप रूप प्यार पन।
काम कस नाखिये न राखिये जहर जोड़ि
ग्राम आस लाखिये न माखिये सु सत्रु सन।।
सुधा सत स्वाद संत संग रसरंग बीच
अंग अंग आपनो भिजाइये बिहाय बन।
(श्री) युगल अनन्य आठहू पहर रट
लाइये अखंड तब पाबो सम चित धन।।१८३९।।

निरन्तर नामाभ्यास का प्रभाव

इन पंक्तियों के लेखक को भी कुछ नामजप के प्रभाव देखने को मिले हैं। श्रीजनकपुरधाम मध्यवर्ती परिक्रमा में सुप्रसिद्ध जलेश्वर नामक महादेव स्थान से आगे चलकर, आप वजराही नामक एक संत की कुटिया परिक्रमा मार्ग से सटे हुए पायेंगे। वहीं मेरे एक घनिष्ट स्नेही संत श्री ससित रामलषनदास जी महाराज भजन करते थे। उन्हें सीतारामनाम जप का ऐसा सुदृढ़ अभ्यास पड़ा था कि निद्रा अवस्था में भी उनके मुख से जोर–जोर से सीतारामनाम का उच्चारण होता रहता था। कई बार मुझे उनके साथ ही साथ आसन लगाकर, अत्यन्त निकट में रहकर देखने का अवसर मिला है। नामोच्चारण उनका जागृत की भाँति ही चलता रहता था, उनकी निद्रा का पता उनके खर्राटे की आवाज से, तथा हाथ से जपमाला छूटकर गिर जाने से, लगता था। एक क्षण भी उनकी जीभ नामजप से खाली नहीं रहती थी। इस समय आप नित्यधाम में हैं।

श्रीमिथिलाजी के सुप्रसिद्ध संत बाबा श्रीनवलकिशोरदास जी महाराज की दिवंगत माता के श्राद्ध के अवसर पर, संत महोत्सव में मैं भी सम्मिलित हुआ था। गाँववाले उनके परिवारवाले बताते थे कि माताजी की मृत्यु के पश्चात् भी उनके निष्प्राण हाथ की उँगलियाँ, सुमरनी फेरने की चाल से बराबर हिलती रहती थी, चिता पर भस्म होते होते उँगली का संचालन जारी रहा।

हमारे सम्पर्की श्री अयोध्या गोलाघाट के रासकुंज नामक स्थान की निर्मातृ महिला संत माता श्रीरामसखीजी ने मुझे अपनी आँखों देखी घटना सुनायी थी। काशी के गृहस्थ नामजापक भक्त थे श्री गंगाप्रसाद जी। ऐसा नामजप का अभ्यास था उन्हें कि चितापर जलते–जलते उनके निष्प्राण ओंठ जीवित की भाँति नामजप के समान हिलते रहे थे।

महाराष्ट्र के एक अस्पृश्य जाति के गृहस्थ संत थे चोखामेलाजी। वे राजमिस्त्री के कार्य से अपनी जीविका चलाते थे। कभी एक ऊँची इमारत के निर्माण कार्य में कच्ची नींव के कारण, वह इमारत बहुत ऊँचाई तक पहुँचते पहुँचते ढहकर गिर गई।

पचासों राजमिस्त्री तथा मजदूर हजारों मन ईंट के नीचे दबकर मर गये। ईंट हटाने पर जो लाशें निकलीं वे ऐसी कुचली थीं कि उनकी पिसी हुई हड्डियों से उनके व्यक्तित्व की पहचान असम्भव थी। चोखामेलाजी की अन्त्येष्टि वहाँ के भक्त समाज के द्वारा बड़ी प्रतिष्ठा तथा

समारोह से सम्पन्न करनी थी। जब पहचान में आवे तब तो? श्रीनामदेवजी ने युक्ति बताई। भक्तों से कहा शवों की हड्डी के समीप कान सटा कर, निकलने वाली ध्वनि सुनो। चोखामेला की हड्डी से नामध्वनि निकल रही थी। उसी के द्वारा उनके शव को पहचान कर, उनकी अन्त्येष्टि प्रतिष्ठित हुई।

छिनकू भगत के कटे सिर धड़ से रामनाम की ध्वनि निकलती थी। प्राचीन समय की बात है, जब भारत में यवनशासन अपने पूरे प्रभुत्व में था और प्रभुता के मद में शासक अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे। उस समय वहायलपुर राज्य में एक छिनकू नाम के भगवद्भक्त रहते थे। वे सत्यवादी, ईमानदार तथा नैष्ठिक राम–नाम के जापक थे। वे आँटा, दाल, घी, मसाले आदि गल्ले किराने की दुकान करते थे। उनकी दुकान अपने पदार्थों की शुद्धता के लिए प्रसिद्ध थी। वे केवल शाम को दो घंटे के लिये दुकान खोलते थे। शेष सब समय भजन में व्यतीत करते थे। एक दिन सवेरे एक मुसलमान छिनकू के घर पहुँचा और उसने उसी समय दुकान खोलकर कुछ सामान देने की माँग की। उस समय भक्त छिनकू भजन में लगे थे। उन्होंनें उसे शाम को आने के लिए कहा और तत्काल दुकान जाने में असमर्थता प्रगट की। मुसलमान चिढ़ गया। उसने छिनकू को ही नहीं, उनके आराध्य को भी बुरा–भला कहा। छिनकू जी बोले– अगर यहीं शब्द मैं तुम्हारे धर्मग्रन्थ और पैगम्बर को कहूँ तो कैसा लगेगा?

मुसलमान– तुम्हें इतनी जुर्रत है? मैं तुम्हें देख लूँगा। वह मुसलमान काजी के पास पहुँचा और उसने वहाँ अभियोग लगाया कि छिनकू ने पैगम्बर को गाली दी है। उस समय के नबाब वहायलपुर भले स्वभाव के थे। वे छिनकू भगत को जानते थे – और उनमें श्रद्धा रखते थे। उन्होंने छिनकू के पास संदेशा भेजा– 'आप कह दें कि मैने कुछ नहीं कहा।' लेकिन छिनकू भगत ने झूठ बोलना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने काजी के सामने अपने शब्द दोहरा दिये, काजी ने उनको 'संगसार' कर देने (पत्थर मार–मार कर मार देने) की सजा दी। छिनकूभगत को पकड़ कर एक मैदान में ले जाकर, एक खंभे से बाँध दिया गया। उधर से आने जाने वाले मुसलमान उन्हें पत्थर मारने लगे। छिनकू जोर–जोर से श्रीराम– श्रीराम बोलते रहे। पत्थरों की मार से उनका पूरा शरीर घावों से भर गया। रक्त की धारा शरीर से चलने लगी। संध्या को एक मुसलमान सैनिक उधर से निकला। वह छिनकू से परिचित था। उससे भक्त की वह असहनीय दशा देखी नहीं गई। उसने तलवार से उनका शिर काटकर,उन्हें इस अवस्था से छुट्टी दे दी। किंतु उसे तथा औरों को भी यह देखकर आश्चर्य हुआ कि छिनकू का कटा सिर तो 'श्रीराम' बोलता ही था, उनके मस्तक हीन धड़ से भी देर तक 'श्रीराम' का ध्वनि निकलती रही।

(कल्याण भगवन्नाम महिमा अंक से साभार उद्धृत)

एक और नामाभ्यासी की चर्चा करूँगा। महाराष्ट्र में श्रीगोंदवलेकर महाराज नाम के सुप्रसिद्ध परम रामभक्त संत हो गये हैं। एक बार डाक्टर ने रोग परीक्षा के हेतु आपके सीने पर, स्टेथोंस्कोप लगाया और आश्चर्य यह कि बजाय नाड़ी के शब्द के उन्हें 'श्रीराम जय राम जय जय राम इस त्रयोदस अक्षरमन्त्र की ध्वनि ही सुनायी दी। डाक्टर ने सोचा– शायद भ्रम हो गया होगा, किंतु बार–बार ध्यान देने पर भी वहीं अनुभव हुआ। यह नामाभ्यास की उत्त्कटकोटि की सिद्धावस्था है।

❈ नाम से शान्ति लाभ ❈

महात्मा गाँधी कहते हैं:— (भगवन्नामांक पृ० ९९ से)

नाम की महिमा के बारे में तुलसीदास ने कुछ भी कहने को बाकी नहीं रखा है। द्वादशाक्षर मन्त्र अष्टाक्षर इत्यादि सब इस मोह जाल में फँसे हुये मनुष्य के लिए शांतिप्रद है, इसमें कुछ भी शंका नहीं है। जिससे जिसको शान्ति मिले उस मंत्र पर वह निर्भर रहें। परन्तु जिसको शांति का अनुभव ही नहीं है और जो शांति की खोज में है, उसको तो अवश्य रामनाम पारसमणि बन सकता है। ईश्वर के सहस्त्र नाम कहे गये हैं। उसका अर्थ यह है उसके नाम अनंत हैं, गुण अनंत हैं। परन्तु देहधारी के लिये नाम का सहारा अत्यावश्यक है और इस युग में मूढ़ और निरक्षर भी रामनाम रूपी मंत्र का सहारा ले सकता है।

(डाक्टर भगवतीप्रसाद सिंह लिखित भाई जी के जीवन—दर्शन से——)

सन् १९१६ ई० की घटना है। कल्याण के लब्धप्रतिष्ठ भूतपूर्व सम्पादक भाई हनुमान प्रसाद जी पोद्दार उन दिनों राजद्रोह—अभियुक्त के रूप में अलीपुर कारावास में आवद्ध थे। 'इन्हीं दिनों पोद्दार जी के ससुर श्री मुंगतूराम सरावगी इनसे जेल में मिलने आये। उस दिन घर से भोजन नहीं आया था। ये जेल से कोटे में प्राप्त चावल पकाने की तैयारी कर रहे थे। चावल बहुत ही घटिया किस्म का था। उसे देखकर सरावगीजी बोले— आपने ऐसे चावल जीवन में कभी छुये भी न होंगे, इनसे पेट की ज्वाला कैसे शान्त होगी? इस निर्जन, मच्छरों से भरी कोठरी में जिन्दगी कैसें कटेगी? पोद्दार जी ने अत्यन्त शान्त स्वर में उत्तर दिया— "दु:ख और सुख की अनुभूति तो मन की मान्यता पर है। यह तो भगवान का प्रसाद है, तो मैं प्रेम से खाता हूँ। इसमें दु:ख की तो कोई बात ही नहीं है।"

अध्यात्मनिष्ठ विप्लववादी विचारधारा में निष्णात होने से जेलयात्रा इन्हें रंचकमात्र भी कष्टकर नहीं प्रतीत हुई। मानसिक स्थिति पूर्णतया संतुलित रहीं। चिन्ता केवल एक बात की थी और वह थी गृहस्थी की दयनीय स्थिति। घर में रह गई थी तीन स्त्रियाँ बूढ़ी दादी, विमाता गौरा बाई और पत्नी रामदेई तथा दो छोटी बहनें कमलाबाई और पूर्णीबाई। इनमें माँ गौराबाई उन दिनों अपने पीहर में थीं। इन सबकी देखभाल की व्यवस्था करने वाला कोई पुरुष न था। भरण—पोषण के लिए भी अपेक्षित साधनों की कमी थी। पोद्दार जी की यह उद्विग्नता कुछ ही दिनों तक रही। इस घबराहट में भगवान का नाम याद आया। नामजप के लिये माला की आवश्यकता का अनुभव हुआ। वह इनके पास थी नहीं। कोठरी के द्वार पर एक सन्तरी पहरा दे रहा था। वह उत्तर प्रदेश का निवासी ब्राह्मण था। पोद्दार जी ने बुलाकर उससे कहा— 'पण्डित जी ! एक माला ला दीजिये।' पहरेदार ने पूछा, 'माला का क्या करोगे? ये बोले 'भगवन्नाम का जप करूँगा।' ब्राह्मण ने कहा— माला मेरे पास है नहीं, बाहर से लाना जुर्म है। यदि कहीं पकड़ लिये जायँ, तब क्या होगा? मैं माला लाकर नहीं दे सकता, पर जप करने का गुर बता सकता हूँ।' यह कह कर वह चला गया। कुछ देर के बाद जब वह लौटा तो उसके हाथ में एक कांटी थी। उसे पोद्दार जी को देते हुए उसने कहा—

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।'

इस मंत्र को जपकर एक कहो, फिर जपकर दो कहो, फिर तीन! इस प्रकार जप करते– करते जब १०८ हो जायँ तो इस काँटी को लेकर दीवार पर एक लकीर खींच दो। ऐसे तुम्हारा जप चल सकता है और गिनती भी हो सकती है। पोद्दार जी को यह बात जँच गई। जप करने का गुर बताने वाले उस पहरेदार को उन्होंने गुरू मान लिया और आजीवन इसी भाव से उसका स्मरण करते रहे।

ब्राह्मण के निर्देशानुसार नाम–जप चलने लगा। इसमें इनका बड़ा मन लगा। जप से धीरे–धीरे मन की सारी व्याकुलता दूर हो गई। मन शांत हो गया। यहीं से इन्हें नाममाहात्म्य का परिचय मिला। फिर तो नामजप पोद्दारजी के जीवन का साथी हो गया। वह षोडशनामात्मक मन्त्र उनका आजीवन सहचर रहा। दूसरों को भी इसका महत्त्व बताकर जप की प्रेरणा देते रहे।

हमारे मित्रगणों का सुझाव है कि यह युग आलसस्य प्रधान है। आजकल लोग परिश्रम करने से जी चुराने लगे हैं। आपका यह विशालकाय ग्रन्थ कौन पढ़ेगा? संक्षेप में छोटा ग्रन्थ लिखिए। श्रीरामनाम की स्तुति से जी अघाता ही नही। अत: कम करते करते ग्रन्थ बढ़ गया। दूसरी बात यह है कि नामजप श्रमवीरों की सम्पत्ति है। आलसियों के लिए यह मार्ग दुर्गम है। अत: एक उत्तम नाम साधक के लिए जितनी ज्ञातव्य बातें अपनी छोटी सी बुद्धि में आवश्यक समझी गईं सब पर कुछ न कुछ कहा गया है।

अत: 'विश्राम स्थानमेकं' शान्तिदायक श्रीसीताराम द्वारा शांति लाभनामक अन्तिम लेखके साथ यह ग्रन्थ समाप्त किया जाता है। आगे अन्तिम नामलेखन खंड पढ़िये। इसमें आप केवल तांत्रिक विचार पायेंगे। कर्मकांडियों के लिए उपादेय होगा। प्रेमी तो नाम जपेंगे ही।

श्री नाम- लेखन खण्ड

✡✡

अब तक श्रीसीतारामनाम जप के ही प्रभाव पर विचार होता रहा है, किन्तु नाम लेखन का विशिष्ट प्रभाव भी अपना अलग चमत्कारपूर्ण महत्त्व रखता है। इस अन्तिम खण्ड में हम श्रीनाम लेखन के प्रभाव पर ही प्रकाश डालने की चेष्टा करेंगे।

यह पौराणिक बात प्रत्यक्ष प्रमाणवत् लोकप्रसिद्ध है कि श्रीगणेश जी श्रीरामनाम लिखकर तथा लिखित नाम की परिक्रमा करके ही सभी पूज्यदेवों में अग्रपूज्य बने बैठे हैं। इसी पर विचित्र नाटक में लिखा है कि श्रीरामनाम के अर्न्तगत ही सभी ब्राह्मणों की स्थिति है। अतः और देवता तो प्रथमपूज्यता प्राप्त करने के लिए, सर्वतीर्थमयी वसुन्धरा की परिक्रमा करके सबसे पहले श्रीब्रह्माजी के यहाँ उपस्थित होने की त्वरा में थे, वहाँ श्रीनारद जी के उपदेश से मूसा–वाहन गणेशजी ने श्रीरामनाम लिखकर उसी की परिक्रमा कर ली। इसी से आपकी परिक्रमा सर्वप्रथम पूरी भी हो गई तथा आप प्रथमपूज्य भी बन गये।

यदीक्षणाच्छम्भुसुतो गणाधिपः सुरासुरैः प्राथमिकः प्रपूज्यः।
प्रदक्षिणा यस्येकृते समस्ता क्षमावती स्यात् परितः प्रदक्षिणा।।

बृहन्नारदीय पुराण का कहना है कि जैसे श्रीरामनाम के कीर्त्तन करने से, श्रीरामनामध्वनि श्रवण करने से, श्रीनामाक्षरों के दर्शनों से, श्रीनामाक्षरों के ध्यान करने से, सभी दिव्यादिव्य मनोरथ पूर्ण होते हैं, उसी भाँति श्रीनामलेखन भी सर्वाभिष्ट प्रदायक हैं।

स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेखानादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।

श्रीअमर रामायण में लिखित आख्यायिका है। एक नौका पर बहुत से यात्री बैठकर एक बरसाती वेगवती नदी पार कर रहे थे। विपरीत तूफान के झकोरे में पड़कर, वह नौका सभी यात्रियों के सहित जल में डूब गई। यात्रियों में अधिकार पापीगण ही भरे थे, जिनके पापों के बोझ से भी नाब डूबी रही होगी। किन्तु उस नौका पर कहीं रामनाम अंकित था। अतः नाम लिखित नौका पर चढ़ने वाले सभी डूबे हुये यात्रियों को मुक्ति मिली।

श्रृणुदेवि ! पुनश्चैका नौंका जन– समाकुला।
प्रतिकूलाशुगेनैव वारिमग्ना जनै: सह।।
सा नौ: श्री रामरामेति वर्णेश्च संस्कृता शिये
तत्प्रभावेण ते सर्वे मुक्तिमीयुरयौगिका:।। ४।१२।१३।।

सेतुबन्ध के अवसर पर श्रीनल जी के मन में अभिमान हो गया। आज मैं न होता तो, सर्वेश्वर सर्वसमर्थ प्रभुका भी यह सेतुबन्ध कार्य कैसे पूरा होता? गर्वहारी अखिलेश्वर ने उनका ऋषिप्रदत्त स्पृष्ट पाषाण को तैराने वाली शक्ति कर्षित कर ली। अव तो जो पाषाणशिला श्रीनल जी जल पर रखें, वही डूब जाय। परमचतुर श्रीहनुमतलाल जी प्रत्येक पाषाण खंड पर श्रीरामनाम लिख– लिखकर श्रीनल जी को देने लगे। अब तो छोटे बड़े सभी नामांकित पाषाणखण्ड समुद्री जल पर तैरने लगे। श्रीरामनाम के इस प्रभाव को देखकर सभी वानर आश्चर्यचकित हो गये।

लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापतेर्मुहु:।
निचिक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन्।।
संतरन्तिस्म दृषतो रामनामांकिते जले।
तद्दृष्ट्वा बानरा: सर्वे वभूवु र्विस्मितास्तदा।।

सत्संग– गोष्ठी में सुनी हुई एक क्विंदन्ति है। एक नामसिद्ध संत को किसी श्रद्धालु सेवक ने तन, मन, धन से सुदीर्घ कालीन सेवा की। सिद्ध जी ने एक दिन उस पर रीझकर कहा 'बेटा' तैं तुम्हें एक ऐसा यंत्र दे रहा हूँ, जिसको अपने शरीर के किसी भी अंग में धारण करके रखो, तो तुम्हें सभी प्रकार की सिद्धियाँ अनायास प्राप्त हो जायेंगी। सेवक सिद्ध की अनेकों सिद्धाई चमत्कार देख चुका था। अत: उनके वचन में दृढ़ विश्वास रखकर, उस सिद्ध प्रदत्त यंत्र को बड़ी श्रद्धा के साथ अपनी दाहिनी भुजा पर बाँध रखा। उसे उस यंत्र के प्रभाव से क्रमश: सभी अष्टसिद्धि उपसिद्धि प्राप्त होने लगी। एक दिन उस सेवक के जी में आया कि जरा यंत्र को खोलकर देखूँ तो सही। कैसा चमत्कारपूर्ण है यह। देख लेने पर मैं भी दूसरे को यह यंत्र देकर सिद्ध बन सकूँगा। खोलता है तो भोजपत्र पर केवल एक रामनाम मात्र लिखा था। उसके मन में आया– यही रामनाम मात्र है! इसे तो हर कोई जानता है! कहता है, अगोंमें लिखित रूप से बहुत धारण भी करते होंगे, तो कहाँ सिद्ध हो जाते हैं? मुझे जो कुछ प्राप्त हुआ है, हो न हो महात्मा के आशीर्वाद की करामात होगी। रामनाम में इतना प्रभाव कहाँ संभव? इस प्रकार नाम प्रभाव में कुतर्क करते ही उसकी सारी सिद्धाई कपूर की भाँति उड़ गई। ठीक ही है।

'कबनिउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा।'

ऊपर वाली आख्यायिका है तो किंवदन्ति, परन्तु उसकी सत्यता श्रीरामरक्षा स्तोत्र के नीचे दिये गये श्लोक से प्रमाणित हो रही है।

जगज्जत्रैक मन्त्रेण रामनाम्नैव रक्षितम्।
य: कण्ठे धारयेत्तस्य करस्था: सर्व सिद्धय:।।

अर्थात् जगत पर विजय प्राप्त करने वाले श्रीरामनामात्मक मंत्र से जो सदा सुरक्षित रहते हैं, वे यदि इन्हें अपने कंठ से सदा धारण किये रहेंगे, उन्हें सभी सिद्धियाँ हस्तामलकवत् सुलभ हो जायेंगी। यहाँ कंठ में धारण करने का अर्थ १– कंठ से मध्यमा नाम जप रूप में तथा २– यंत्र रूप से कंठ में पहने रहने से। दोनों ही अर्थ मान्य हैं।

श्रीहनुमत्संहिता का आश्वासन है कि जिनने श्रीरामनाम का यंत्र बनाकर अपने अंग में धारण कर लिया है, उन्हें कहीं किसी समय में भी किसी वस्तु का भय नहीं रहेगा। वही यंत्र उसकी सदैव सुरक्षा करेंगे।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम्।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

किसी भी मंत्र की सिद्धि के लिए, सर्वप्रथम साधक के लिए अपने इष्टमात्र का पुरश्चरण कर लेना चाहिए। मंत्रशास्त्र का कहना है कि पुरश्चरणहीन मंत्र की सैकड़ों वर्ष पर्यन्त आराधना करने पर भी सिद्धिदायक नहीं होता। यदि मंत्र की पुरस्क्रिया कर लेने पर, आप जो–जो भी सिद्धि चाहें, आप अपने आराध्य मन्त्र के द्वारा सुगमता से प्राप्त करते रहेंगे। पुरश्चरणसम्पन्न मंत्र ही फलदायक होते हैं। नामलेखन भी रामनाम रूपी महामंत्र की आराधना ही है। संमोहन तन्त्र का आदेश है कि यहाँ से हम नामलेखन मंत्र की पुरश्चरणविधि कहते हैं।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणकं विधिम्।
बिना येन न सिद्धिः स्यान्मंत्रो वर्ष शतैरपि।।
कृतेन येन लभते साधको वाञ्छितं फलम्।
पुरश्चरण सम्पन्नो मन्त्रोहि फलदायकः।।

श्रीरामनाम तो सर्वश्रेष्ठ मंत्र है ही । इनका लेखन भी मंत्राराधन का एक प्रकार ही है। अतः नाम लेखन रूपी मंत्राराघन के लिए भी पुरश्चरणविधि, लेखन साधन में प्रवृत्त होने के पहले कर लेनी चाहिए। एकमात्र नामलेखन पुरश्चरण द्वारा सिद्ध हो जाने पर, नाम–लेखन के लिए कोई भी सिद्धि असाध्य नहीं रहेगी। उसी संमोहन तंत्र के यह भी श्लोक हैं।

अतः पुरस्क्रियां कुर्यान्मंत्रवित् सिद्धि काम्यया।
सम्यक् सिद्धयैक नाम्नोऽस्य नासाध्यं विद्यते क्वचित्।।

पुरश्चरण के पश्चात् अधिक संख्यक नाम लेखन के लिये और क्या कहा जाय, वह स्वयं मंगलस्वरूप बन जाता है। उसे नामलेखन के अतिरिक्त किसी भी अन्य साधनान्तर की अपेक्षा नहीं रहेगी। न उसे किसी मंत्र का जप, न्यासादि विधि, मंत्रान्त में हवनादि कार्य करना आवश्यक रहेगा।

बहुनामवतः पुंसः का कथा शिव एव सः।
किं होमैः किं जपैश्चैव किं मन्त्रन्यास विस्तरैः।।

मन्त्र का यह रहस्य है कि पुरश्चरणहीन मंत्राराधन, प्राणहीन शरीर की भाँति, काठके बने हुए हाथी की भाँति, निष्प्रयोजन रह जाते हैं।

रहस्यानां हि मंत्राणां यदि न स्यात्त्पुरस्क्रिया।
जीवहीनो यथा देहो यथा काष्ठमयो गजः।
पुरश्चरणहीनो हि तथा मंत्र प्रकीर्त्तितः।।

किसी भी शुभ दायक महीने के शुक्ल पक्ष में कोई शुभदायक नक्षत्र के समय आप पुरश्चरण प्रारंभ करें। प्रारंभ में आपको नामलेखन द्वारा अग्रपूज्य बने श्री गणेश जी तथा अपने इष्टदेव श्री जानकी कॉतजू का पूजन कर लेना चाहिये। पुरश्चरणकाल में श्वेत–वस्त्र ही धारण करना चाहिये। प्रत्येक दिन नित्यकर्म स्नानादि से पवित्र होकर ही आप नाम लिखें। भूतशुद्धि करके अपने हृदय में अपने इष्ट देव श्री रघुलालजू का, श्री मैथिली जी, श्री लखन लाल जी तथा हनुमदादि पार्षदों के सहित ध्यान कर लें। उनकी संक्षिप्त मानसिक पूजा भी कर लेनी चाहिए। प्रणव अथवा प्रणवमूल श्री राम नाम का उच्चारण करके नाम लेखन प्रारम्भ करें। लेखन कार्य के अंत में भी प्रणव का उच्चारण करना चाहिये। किन्तु बीज मंत्र का आद्यक्षर तो अनन्त एवं अगन्यासन माने जाते हैं। इनका उच्चारण तो और भी मंगलदायक होगा।

लेखन कालीन पुरश्चरण के अवधि–पर्यन्त शुद्धासन का उपयोग करें। शरीर शुद्ध रखें नित्य शुद्धान्न ही भोजन करें। मांसाहार कभी न करे। एकान्त में अकेला रहे। चौबीस घंटे में एक ही समय भोजन करें। श्री रावघजू की सतत शरणागति को सम्हाले रहे। श्री रामदर्शन के लिए सदा उत्कंठा बनी रहे। पुरश्चरणकालीन नामलेख अष्टगंध की होनी चाहिये। कस्तूरी, केशर, लाल और सफेद श्री खंड चन्दन, गोरोचन, कपूर, कंकोल और खश ये आठों, अष्टगंध कहाते हैं। भोजपत्र पर या ताड़ पत्र पर, अथवा शनके कागज पर लेखन होना चाहिये। प्रत्येक दिन एक हजार सीतारामनाम लिखना चाहिए। तीन महीने दस दिनों में अर्थात पूरे सौ दिनों में एक लक्ष नाम लिखे। लेखनकाल में मुख से भी श्रीनामोच्चारण करते रहें। श्री रामचरित्र का श्रवण करें, श्रीसीतारामात्मक स्तुति का पाठ करें। यह लेखन विधि तीन मास में पूरा करके, अनुष्ठान समाप्त करें। पूरी लिखित संख्या का दशांश अर्थात् दस हजार बार संस्कार किये हुये अग्नि में गोदुग्ध की तस्मई से हवन करे। हवन का दशांश एक हजार बार गो–दूध से तर्पण करे। पवित्र–जल से तर्पण का दशांश अर्थात एक सौ बार मार्जन करें। तत्पश्चात् पंचसंस्कार पूर्वक द्वितीय जन्म पाये हुये मंत्र जापक द्विजो को दक्षिणा सहित भोजन करावें। गेहूँ के आटे की गोली बना बना कर, अपने लिखित नामके पत्र टुकड़ों को उनमें बंद करे। तत्पश्चात नाम भरित गोलियों के पात्र को माथे पर रखकर नाभि भर जल में जाकर स्थित होवे। श्री रामानन्य चित्त होकर एक–एक करके सभी गोलियों को जल में पवरा देवे। ऊपर गद्यवर्णित विधि निर्देशक मूल श्लोक नीचे लिखी भाँति से पठित हैं।

शुक्लपक्षो शुभेवारे स्वस्तिवाचन पूर्वक।
विघ्नेशं स्वेष्टवेञ्च पूजयित्वा लिखोत्प्रिये।।
शुक्लाम्बरधर: स्वस्थ: कृतनित्यक्रिय: शुचि।
भूतशुद्धयादिकं कृत्वा संध्या द्राघवं हृदि।।
हनुमता च संयुक्तं लक्ष्मणेन च सीतया।
मानसं पूजनं कृत्वा लिखोन्मन्त्रमनन्यधी:।
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सदामंत्रं लिखोत्प्रिये।।
अंते प्रणवमुच्चार्य नमेत्सीतापतिञ्जपेत।
अनन्तोऽग्न्यासनो देवि केवलो जाठर: स्मृत:।
शुद्धासन: शुद्धदेहो नित्यं शुद्धान्न भक्षक:।।
निरामिषा शनो नित्यमेकाकी ह्येक भुग्भवेत।
रामाश्रयो रामचित्तो दुर्जन दृष्टि वर्जयेत।।
गुरुप्रोक्तविधानेन ह्यनुष्ठानं समाचरेत्।
एवं मन्त्र लिखोद्यस्तु लक्षसंखया जितेन्द्रिय:।
तस्य सिद्धो भवेन्मन्त्र: सर्वकाम–फलप्रद:।
राममन्त्र लिखोन्नित्यमष्ट– गन्धेन भक्तित:।।
कस्तूरी कुडकुमं युग्मचन्दने रोचनागरू।
घनसारञ्च कङ्कोलमुशीञ्चाष्ट गन्धका:।
भूर्जपत्रे तालपत्रें शणपत्रे च लक्ष्मिजे।
रामनाम सहस्रन्तु लिखोदनुदिनं सुधी:।।
मासत्रयं शुद्ध चित्तो यावल्लक्षं समाप्यते।
तावत्स रामरामेति राममन्त्रञ्पेन्नर:।
शृंणुयाद्रामचरितं पठेद्रामस्तुति सदा।
त्रिमासैवं विधिं कृत्वा ह्यनुष्ठानं समापयेत।।
तद्दशांश पायसेन जुहुयात्संस्कृतेऽनले।
पयसा तर्पणं कुर्याद वारिभिभार्जनं स्मृतम।।
द्विजेभ्यो भोजनं दद्याद् दक्षिणाञ्च तत: परम्।
पिण्ड गोधूमचूर्णेन कृत्वा पत्राणि गोलकम्।।
नाभिमात्रे जले स्थित्वा मस्तकोपरि धारयेत।
श्री रामं हृदि विनस्य क्षिपन्नद्यामनन्यधी:।
एवं सिद्धि मनुप्राप्तो मन्त्र: सिद्धि– प्रदायक:।।

सकाम साधकों को उपर्युक्त विधि से नामलेखन रूप मंत्राराधन वाला पुरश्चरण करके, तभी श्री नामलेखन से मनोरथ पूर्ति के यत्न में लगना चाहिये। ऐसे तो श्री नाम सरकार की रीझ है, बिना पुरश्चरण के भी नाम लिखने वाले पर ढरकर, उसके सभी मनोरथ दे डालें , किन्तु तांत्रिक विधि तो प्रथमतः पुरश्चरण कर लेनी ही है।

नामलेखन से धन सम्पत्ति की प्राप्ति

प्राप्त धन का भी तिरस्कार करके, जानबूझ कर स्वेच्छापूर्वक गरीबी स्वीकार करने वाले बीतरागी नामानुरागी तो लाखों करोड़ो में विरले निकलते हैं। वैसे महानुभावों की दृष्टि में यह बात सदैव सुनिश्चित रूप से जमी रहती है कि अर्थ तो सभी अनर्थों का जनक है।

'परम अकिंचन प्रिय हरि केरे।' अतः

मुनिवर जतन करहि जेहि लागी। भूप राज तजि होहिं विरागी।।

अतः ऐसे परमोत्तम साधक रूखा–सूखा आधा पेट खाकर रह जाते हैं, वस्त्र भी नाममात्र का ही संग्रह करते हैं। कुटिया बनाने को बला मानते हैं। बाकी लोग धन के पीछे पागल हो रहे हैं। धर्म पूर्वक हो, अधर्म करने से हो, घूसखोरी, कालाबाजार, चोरी डकैती आदि कदाचारों का बाजार सर्वत्र गर्म हो रहा है। गृहस्थों को तो परिवार संग्रह के लिए अर्थ चाहिये ही, विरक्त कहाने वाले, गृहत्यागी महानुभाव भी धन ही के चक्कर में नाना प्रकार के दंभ सजकर धन संग्रह में ही रचते पचते रहते हैं। उन्हें कहाँ फुर्सत कि बैठकर माला फेरें?

धन प्राप्त के लिये श्री मंत्र राज–लेखन

अतः हम सर्वप्रथम धन–प्राप्ति के लिएनामलेखन की युक्ति बतायेंगे।

श्री महानिर्वाण तंत्र में आया है कि एकाकी श्री रामषडक्षर मंत्रराज मदार के पत्ते पर, अष्टगंध की रोशनाई से, तथा चंपेकी कलम बनाकर उत्तर मुँह बैठकर एक लक्ष लिख डालें। इतने ही में वह कुवेर से भी अधिक धनाढ्य हो जायगा। श्री रामनाम, श्री राममंत्र के अपरिमित प्रभाव जानने वाले इस कथन में सहज विश्वास कर लेंगे।

षडक्षरं महामत्रं संलिखोदर्कपत्रके।
लेखिनी चंपकोद्‌भूता चाष्ट गन्धैरूदङ्मुखः।।
लक्षमात्रेण देवेशि कुवेरादधिकं धनम्।।

अर्कपत्र मदार के पत्ते को कहते हैं। मदार अकवन जाति का बड़ा पेड़, पुष्प सुगंधयुक्त पत्ते चिकने होते हैं। कस्तूरी, केशर लाल चंदन, श्रीखंड चंदन, गोरोचन, अगर, कर्पूर , खश – ये अष्टगंध कहाते हैं। यह पहले भी कह आये हैं।

कस्तूरी कुङ्कुमं युग्म चन्दनं रोचनागरु।
घनसारञ्च कङ्कोलमुशीरञ्चाष्टगन्धकाः।।

कहाँ बैठकर लिखे? अन्य तंत्र कहते हैं वटे च धन वृद्धिः स्यात् अर्थात् बरगद की छाया में बैठकर लिखने वाले के धन बढ़ जाते हैं।

स्नानादि से शुद्ध बनकर, कम्बल या कुशासन पर बैठकर श्री मंत्र लिखना चाहिये। नित्य शुद्धान्न चौबीस घंटे में केवल एक बार भोजन करें। एकांत में रहे।

''शुद्धासनः शुद्धदेहो नित्यशुद्धान्न भोजनः।
निरामिषाशनो नित्यमेकाकी नित्यमेकभुक।।''

भूमि पर कुश या कम्बल बिछाकर सोना चाहिए, अनुष्ठान पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत रखे। हो सके तो स्वयं पाकी रहे। दूसरे से स्पर्श बचावे। वासस्थान की ग्रामसीमा से बाहर न जाए। सभी अनुष्ठानवालो के लिए इतने संयम समान रूप से पालनीय हैं।

धन के लिए राम नाम-लेखन

महानिर्वाण – तन्त्र के अनुसार भूमि पर पवित्र तीर्थरजबिछाकर अथवा कागदपर ही अष्टोत्तरशत अथवा पाँच सौ रामनाम नित्य श्रद्धा भक्ति के साथ लिखे तो वह धन–धान्य से सम्पन्न हो जायगा। श्रीराघवजू का प्रियत्व–लाभ होगा। लेखक गुणज्ञ, शत्रुनाशक बनेगा तथा इसके और और मनोरथ भी पूरे होंगे। रजपर नाम अंकित कर गिनकर मिटा दें, फिर लिखे और गिन गिनकर मिटाता जाय।

'केवलं बिलेखाद्रामं भूमौ वा कागदेऽथवा।
शतं पंचशतं नित्यं लिखायेद्भक्तिसंयुतः।।
धन धान्य समायुक्तों भवेच्छ्री रामवल्लभः।
गुणज्ञः शत्रुसंहर्ता वाञ्छासिद्धिः प्रसिध्यते।।'

धनप्राप्ति के लिए भूमि या कागद पर लिखने का आदेश तो महानिर्वाणतन्त्र को आप पढ़ ही चुके हैं। अन्यत्र तंत्रवचनों के अनुसार धन लाभ के लिए भोजपत्र पत्र तथा कदलीपत्र पर भी नाम लिख सकते हैं– यथा कदल्यां सुख सम्पत्ति'

'कार्गजे सम्पदः प्राप्तिः भूर्जेच श्रियमाप्नुयात्।।

स्मरण रहे कि नामलेखन के लिए कुशासन या कम्बलासनपर ही पर बैठकर नाम लिखना हितकर होगा। भोजन पान का संयम तो प्रत्येक दशा में आवश्यक है।

'कुशासने समासीनमथवा कम्बलासने।
दग्धान्नस्य परित्यागी विश्वामित्रभवं तथा।।'
श्रीविश्वामित्र जी के बनाये अन्न भी त्याज्य हैं।

वेल के बने १० अंगुल लंबे ६ अंगुल चौड़े तख्ते पर भी नाम लिखकर गिना और मिटाया जा सकता है।

'केवलं रामरामेति भूमौ वा विल्वपट्टके।।'

लेखनी का जहाँ कोई विशेष निर्देश नहीं हो, वहाँ अनार की बनी कलम आठ अंगुल की काम में लावें।

'लेखन्याष्टङ्गुलं कुर्यात्सर्वकार्येषु साधकः।।'

धन प्राप्ति के लिए श्रीशंकर उपासना

बेल के पत्ते पर जितने दिनों में बने नित्य नियमपूर्वक आप एकलक्ष नाम लिखकर पूरा करें। रक्तचन्दन से लिखिये। प्रत्येक दिन का लिखा पत्र श्रीशिवजी का यथायोग्यपूजन करके उन पर 'नमः शिवाय' मंत्र से चढ़ाइये। लक्षसंख्या पूरा होते– होते आप धनवान्, रूपवान् तथा चिरंजीवी बन जायेंगे। श्रीशंकर भगवान् के प्रेमभाजन बनेंगे तथा अन्त में किसी पाठ के अनुसार आपको श्रीशिवलोक की प्राप्ति होगी। किसी पाठ में श्रीविष्णुलोक–प्राप्ति बतायी गयी है–

श्रीअवध किशोर दासजी महाराज द्वारा लिखित लेखन विधि में पाठ है–

'रूद्रलोकमवाप्नोति नात्राकार्या विचारणा।'

श्रीरामटहलदास जी अपनी लेखनविधि नाम छपी पुस्तिका में लिखते हैं–

विष्णु लोकमवाप्नोति नात्र कार्य विचारणम्।

सम्पूर्णविधि इस प्रकार पठित है।

विल्वपत्रे लिखेन्नाम लक्षं वै रक्तचन्दनैः।
शिवार्चनञ्च च कर्त्तव्यं तस्योपरि निवेदयत्।।
धनाढयो रूपवान् सद्यश्चिरञ्जीवी शिवप्रियः।
रूद्रलोकमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

पुत्र प्राप्ति के लिए नाम लेखन

पुत्र – प्राप्ति के लिये श्रीरामनाम लेखन अमोघ उपाय है। श्रीरामनाम लेखन से कोई भी अभीष्ट पूर्ण होने से बाकी नहीं रहता। तंत्रशास्त्र की सम्मति में श्रीरामनाम लिखने का आधार भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। महानिर्वाणतंत्र की सम्मति से आप तालपत्र पर भी नाम लिख सकते हैं।

तालपत्रे लिखेद्राम सर्वतोभवति ध्रुवम्।
सुवर्णश्चापि गौराङ्गो रूपवान्पुत्रवान्भवेत्।।

अर्थात् तालपत्र पर नाम लिखने से कनकोज्ज्वल गौरांग सुन्दर पुत्र प्रगट होता है। तालपत्र पर लिखे तो लक्षारस में हल्दी मिलाकर रोशनाई बनाकर, अनार की आठ अंगुल की कलम से लिखें।

'लक्षारस हरिद्राया लेखनी दाड़िमोद्भवा।'

पुत्रार्थ पाँच लाख नाम लिखना चाहिये।

'लक्षेतु कार्य सिद्धिः स्यात्पुत्रार्थे पंच लक्षकम्।'

यदि श्रीतुलसी वन में बैठकर यह नाम लेखन करें तो पुत्रप्राप्ति निश्चित हो जाती है। 'तुलस्या पुत्रवृद्धिश्च।'

संमोहन तंत्र की राय से आप पीतल के चदरे पर श्रीरामनाम लिखें। 'पुत्रार्थे पैत्तलं पत्रम्।' उस समय आपको रोशनाई चाहिये केशरमिश्रित श्रीखंड चन्दन की।

कङ्कुमं चन्दनोपेतं पुत्रप्राप्ति सुसम्पदः।

वही आठ अंगुल वाली अनार की कलम रहे। पीतल पर केवल एक या दो लाख नाम लिखने से ही कार्य– सिद्धि होगी।

लक्षमेकं द्विलक्षं वा लिखेत्पुत्रार्थमम्बिके।

पीतल पर नाम लिखने वाले को लिखित नाम की संख्या गिन–गिन कर अलग संख्या का हिसाब रखना चाहिये तथा लिखित नाम मिटाकर– मिटाकर पुनः पुनः नाम लिखा करें। ऐसे तो तंत्र ग्रन्थों में पुत्रार्थ नामलेखन के लिये ताम्रपत्र तथा सुवर्णपत्र का विधान है।

'पुत्रार्थे स्वर्णपत्रञ्च – महानिर्वाण तत्रे।' उस समय कस्तूरी तथा कर्पूर मिश्रित रोशनाई रहे। 'मृगमदे च कर्पूरं पुत्रप्राप्ति न संशयः।' पुत्रार्थ नाम लिखने वाले को सर्वदा श्रीमनुशतरूपा वाला वरदान माँगने काल का ध्यान करना चाहिये।

चाहउँ तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ।

रोगनिवारण के लिये नामलेखन

गौरी–डामर तन्त्र के मत से तुलसीपत्र पर श्रीरामनाम लिखकर, श्रीशालग्राम शिला पर चढ़ावे। पीछे उतरी हुई लिखित निर्माल्य चवाकर खा जाय। उसके समस्त रोग नष्ट हो जायेंगे तथा वह तेजस्वी हो जायगा।

तुलसी– पत्रमालिस्य भक्षेयेत्प्रातः यो नरः।
रोगादि सर्वे नश्यन्ति तेजस्वी सोऽभिजायते।।

उसी तंत्र में यह भी कहा गया कि जो ग्रन्थारंभ में लिखित ढंग से नामलेखन का पुरश्चरण कर चुके हैं, वे यदि वट पत्र पर अष्टगंध से जूही की कलम से केवल दस हजार श्रीरामनाम एकान्त में बैठकर लिखे, तो उसके क्षय (टी०वी०), मृगी, कुष्ठ आदि असाध्य रोग भी सहजही तत्काल नष्ट हो जायेंगे।

लिखोदयुतमेकान्ते महारोगान् बहून्यपि।
क्षयापस्मार कुष्ठादि नाशयत्येव तत्क्षणात्।।

रोगनाश के लिये लोहपत्र पर भी नाम लिखने का विधान है। उस समय गोराचन को दूध में मिलाकर रोशनाई का काम लें।

रोगनाशे शत्रु नाशे लोहपत्रे च उत्पले।
गोरोचन सदुग्धेन सर्वक्लेश निवारणम्।। (महानिर्वाण तन्त्रे)

गौरी— डामर तन्त्र में कहा गया है वेल पत्र पर रक्तचंदन से अनार की कलम से द्वारा इक्कीस हजार रामनाम लिखकर श्रीशिवजी को अर्पण करे तो रोगी रोगमुक्त हो जायगा। शर्त यह है कि वह ग्रन्थारंभ कथित नामलेखन वाला पुरश्चरण कर चुका हो।

विल्वपत्रे समालिखय महादेवं प्रपूजयेत्।
एकविंशति साहस्त्रं पुरश्चरणकृन्नरः।।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत.................।
तुलसीपत्रमालेखयमयुतं रामनामकम्।
शालग्रामेऽर्पयित्वा सर्वकार्याणि साधयेत्।
तत्पत्रे नरोनित्यं क्षालयित्वा पिवेज्जलम्।
सर्व रोगा विनश्यन्ति सुख सौभाग्य वर्द्धते।।

अर्थात् दस हजार रामनाम एक सौ नित्य के हिसाब से लिखे। प्रत्येक दिन श्रीशालग्राम पर चढ़ावे। पीछे पूजा से उतारे निर्माल्य में से, नाम लिखित तुलसीपत्र निकालकर, उन्हें कटोरे भर जल में भिजावे। वह श्रीनामचरणामृत पी जाया करे, तो उसके सभी रोग नष्ट होंगे। श्रीखंड केशर से श्रीतुलसी की कलम से श्रीठाकुर जी के आगे बैठकर नाम स्नानादि से पवित्र होकर कम्बल या कुशासन पर बैठकर या चमेली की कलम से लिखे। 'चारोग्यं हरि सन्निधौ।'

केवलं रामरामेति भूमो वा विल्वपट्टके।
शतपञ्च सहस्त्रच नित्य भक्ति युक्तो लिखेत्।
धनधान्य समायुक्तों विरूजो विष्णुवल्लभः।

अर्थात् केवल रामनाम पृथ्वी पर या बेलकाठ के १० अंगुल लंबे ६ अंगुल चौड़े पटरे पर श्रद्धाभक्तिपूर्वक नित्य पांच सौ अथवा एक हजार लिखे तो धनधान्य से सम्पन्न, रोगरहित और भगवान् का प्रिय भक्त बन जाता है। पवित्र नदी या सिद्धपीठ से रजधूलि ले आवे। उस रज को बिछाकर, तुलसी, , चमेली या अनार की कलम से नामांकित करता और गिन—गिन कर मिटाता जाय। लिखने के समय मुख से नामोच्चारण करते रहना चाहिये। पटरे पर हरदी, रोरी या सिन्दूर से नाम लिखे।

व्यापार में लाभ के लिय नाम लेखन

महानिर्वाण तन्त्र में लिखा है कि पुत्रप्राप्ति के लिये कदली पत्र पर तथा व्यापार लाभ के लिए तालपत्र पर केशर श्रीखंड मिश्रित चन्दन से चमेली की आठ अंगुल वाली कलम से एक लक्ष नाम लिखे। नाम लिखते समय पीताम्बरी पहने रहे। मौन होकर लिखे। यावत् संख्या पूरी होने तक दृढ़ ब्रह्मचर्य धारण किये रहे। व्यापार में यथेच्छ लाभ होगा।

कुङ्कमं चन्दनोपेतं पुत्रप्राप्ति सुसम्पदः।
पीतवस्त्रान्वितो मौनी ब्रह्मचर्य दृढ़व्रतः।।
कदली तालपत्रेषु लेखयेल्लक्ष मात्रकम्।
व्यापारे लभते शीघ्रमिष्टसिद्धिं न संशयः।।

❀ सर्वमनोरथ दायक नाम ❀

गौरीडामरतंत्र के विधान से दस हजार तुलसीपत्र पर रामनाम लिखकर श्रीशालग्राम को चढ़ावे, तो उसके जो भी मनोरथ हो पूरा होगा ही। इसमें तनक भी सन्देह नहीं।

तुलसीपत्रमालेखयमयुतं परमेश्वरि।
सर्वान् कामानवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।।

यदि पीपल या अगस्त्य की जड़ में बैठकर उपर्युक्त प्रकार से नाम लिखे, तो कार्यसिद्धि और भी सुनिश्चित होगी।

अश्वत्थागस्त्यमूलं च सर्वकाम: प्रसिद्धयति।

तुलसीपत्र पर केशरचन्दन, या हरिद्रामिश्रित चन्दन से नाम लिखना चाहिये। कलम तुलसीकाष्ठ या अनार की होवे। यदि कार्य सिद्धि में विलंब मालूम पड़े, तो 'कलौ चतुर्गुणंप्रोक्तम्' अर्थात् कलिकाल में शास्त्रोक्त संख्या को चारगुणा बढ़ा दें तो अवश्य कार्य सिद्ध होगा।

महानिर्वाण तंत्र मं भी ऊपरनिर्दिष्ट नामलेखन विधान ही कहा गया है।

तुलसीपत्रमालेखयमयुतं रामनामकम्।
शालग्रामेऽर्पयित्वा सर्व कार्याणि साधयेत्।।

❄ सर्वमनोरथ सिद्धार्थ श्री हनुमादाराधना ❄

पीपल के पत्ते पर आप रामनाम लिखें। अष्टगंध से लिखना चाहिये। अष्टगंध के नाम हम पिछले पृष्ठ में लिख आये हैं। अनार की कलम आठ अंगुल वाली से लिखिये। पत्ते पर ११ या २१ नाम लिखिए। १०८ पत्तों पर नित्य लिखना चाहिये। प्रत्येक दिन के नामलिखित पीपलपत्तों को पान की भाँति लपेटकर लाल धागे में उसकी माला बनाकर प्रतिष्ठित और पूजित श्रीहनुमतलाल जी की प्रतिमा को चढ़ाइये। यह क्रम ६१ दिन चले। नित्य के निर्माल्य नाम लिखित माला को किसी प्रवाहमान नदी में बहा देना चाहिये। आपके मन में जो भी कामना होगी, उसे श्रीहनुमानजी अवश्य पूरी कर देंगे।

मैं (लेखक) ने कई व्यक्तियों को यह प्रयोग बताकर सफल मनोरथ बनाया है। विहार के श्रीसीतामढ़ी जनपद में कोइली नामक ग्राम में श्री विजयेन्द्रनाथ वर्मा रहते हैं। आज–कल श्रीसीतामढ़ी अदालत कचहरी में महाफिसदफ्तर है। विद्यार्थी जीवन में इन्हें मृगी रोग से विशेष विद्यार्जन में बाधा हुई। डाक्टर ने ही ऊबकर कहा हमारे चिकित्सा विधान में जो भी संभव चिकित्सा है, हम लोगों ने सब करके देख लिये। अब यह रोग किसी संत के आशीर्वाद से भले छूटे, नहीं तो चिकित्सा शास्त्र के लिए असाध्य है। वह बालक मेरे सामने लाया गया। मैंनें यही प्रयोग बताया। लेखन के अंतिम दिन उसे श्रीरघुनाथजी के साक्षात् दर्शन हुये और आरोग्य लाभ का आशीर्वाद मिला। आज उस प्रयोग से रोग मुक्त हुये, उन्हें ३० वर्ष हुए होंगे। इस समय कई बच्चों के पिता हैं। एक गरीब मारवाड़ी से यह प्रयोग कराया। वह आज करोड़पति है। कई उदाहरण हैं।

श्रीहनुमानजी के उपर्युक्त अनुष्ठान काल में ब्रह्मचर्य धारण करना, भूमि शयन, हो सके तो स्वयंपाकी रहे। स्पर्श किसी से भी न करावे। हविष्यान्न भोजन फलाहार या दुग्धाहार करे।

प्रेत बाधा निवारण के लिये

श्रीहनुमानजी या नृसिंह मंदिर में बैठकर, श्रीविग्रह के सामने कागद पर लाल रोशनाई से ५०० नित्य रामनाम लिखिये। जब तक प्रेतबाधा, निर्मूल रूप से नहीं मिटे, तब तक लिखते रहिये। प्रेतबाधा अवश्य मिटेगी। लेखन काल में मुख से नामोच्चारण करके श्रीहनुमान जी को सुनाते भी रहिये।

'कागदे तु समालिखय हनुमदग्रे सुरेश्वरि।
प्रेतबाधाः प्रणश्यन्ति नृसिंहाग्रे न संशयः।।'

क्लेश निवारण के लिये नामलेखन

कागद पर (कागदे संकटो हानिः) गोदुग्ध में गोरोचन मिलाकर (गोरोचन सदुग्धेन सर्वक्लेशनिवारणम्– महानिर्वाणतन्त्रे) अनार की कलम से नित्य ५०० रामनाम लिखिए। (सकाम नामलेखन ५०० से कम न होना चाहिये) जब तक संकट एवं क्लेश सर्वथा न मिटे, तब तक इसी प्रकार लिखते रहिये।

मृत्युयोग टालने के लिए नाम लेखन

उपर्युक्त विधि से एक हजार नित्य नाम लिखिये। लिखते समय मुख से नामोच्चारण भी होता रहे– तथा अविनाशी रामरूप का ध्यान करते रहिये। महामृत्युञ्जय जप से नाम लेखन अधिक हितकर एवं विश्वसनीय है।

लिखित्वानुदिनं ध्यायन्नपमृत्युं जयेन्नरः।

उपद्रव उत्पात शान्ति के लिये नाम लेखन

संमोहन तन्त्र के मत से उपद्रव शान्ति के लिये महुए के पत्तों पर रामनाम लिखना चाहिए। (शान्त्यर्थे च मधूकम्।') ताम्रपत्र पर लिखें तो और भी अधिक हितकर होवे।

ताम्रपत्रे लिखोद्राम संविधानं रसायुतम्।
सर्वपापक्षयं याति विघ्ननाशो भवेद्ध्रुवम्।। (महानिर्वाण तन्त्रे)

रोशनाई गोरोचन गोदुग्ध में धुला रखिये। कलम जूही में रखें। 'शान्ति के जाति संभवा' संमोहन तन्त्रे।

नित्य ५०० या एक हजार नाम लिखकर आप पचास हजार नाम लेखन पूरा करें।

औत्पातकस्य शान्तयर्थे लक्षार्द्ध च महेश्वरि।

साधक में विश्वास की प्रबलता से थोड़े लेखन से ही कार्यसिद्धि हो जाती है। नारदीय पुराण में कहा गया है कि 'यस्य यावाश्च विश्वासस्तस्य सिद्धिश्च तावती।' अर्थात् साधक में विश्वास की मात्रा के अनुपात से ही सिद्धि मिलती है। जितना अधिक विश्वास उतनी ही शीघ्र सिद्धि। जिन्हें विश्राम शिथिल हो, उन्हें भी अमोघ नाम लेखन अपना फल देंगे। कलियुग में सिद्धियाँ चौगुने साधन से मिलती है। एक आवृति में न हो, तो दो बार के, तिवारे या चार बार में अवश्य कार्य होगा ही। लिखना न छोड़ो।

बन्धनमोक्ष के लिये नाम लेखन

कोई अपराधवश कारागृह (जेल) में बन्द हो जाय, तो वह ताम्रपत्र पर केशरचंदन से अनार की कलम द्वारा तीन लाख नाम लिखें। अवश्य बन्धन से मुक्त हो जायगा, चाहे कैसी भी अक्षम्य कठिन सजा हुई हो।

ताम्रपत्रे लिखोद्राम संविधानं रसायुतम्।
सर्वपापक्षयं याति विघ्ननाशो भवेद्ध्रुवम्।।
लक्षत्रयेन देवेशि ! वन्धमोक्षौ भवेद्ध्रुवम्।।

नाम लेखन द्वारा विद्या प्राप्ति

संमोहन तंत्र के निर्देशानुसार आपको विद्या प्राप्ति के लिए तीन महीने का नामलेखन प्रयोग करना चाहिये। शुद्धासन पर बैठकर श्रीनाम में अनन्य मन लगाकर लिखिए। नित्य लिखने के पहले अपने इष्टदेव का षोडशोपचार से पूजन कर लिया करें। अनुष्ठान पर्यन्त जितेन्द्रिय बने रहें। घी का दीपक जलाकर उसका काजल संग्रह कीजिये। उसकी रोशनाई बनाइये। सन से बने कागज पर लिखना होगा। काशकी कलम रखिये। सर्वसुलभ साधन हैं। एक हजार सीतारामनाम नित्य आपको लिखना होगा। आप समस्त विद्याओं को प्राप्तकर परम तत्वज्ञ बन जायेंगे। शर्त इतनी ही है कि आप ग्रन्थारम्भ में कथित रामनाम लेखन का पुरश्चरण पहले कर चुके हों, तभी यह विद्या प्राप्ति वाला लेखन प्रयोग आपका सफल होगा।

शुद्धासने समास्थाय मासत्रयमनन्यधीः।
पूजापुरःसरं नित्यं सहस्त्रं विजितेन्द्रियः।
लिखेन्नखिल विद्यानां तत्त्वज्ञो भवति ध्रुवम्।।

इसके पहले स्याही, कागद तथा कलम की व्यवस्था लिख चुके हैं। यथा–

शुद्धोदकेन संसिद्धं कज्जलं घृत दीपजम्।
पत्रं शानमयं प्रोक्तं लेखिनी कासजा स्मृता।।

महानिर्वाण तन्त्र मतानुसार ताम्रपत्र पर केशर चन्दन से मौनपूर्वक पाँच लाख नाम लिख लें, तो सभी विद्याओं का अधिपति हो जाता है।

'पञ्चलक्षं लिखेन्मौनी सर्व विद्यधिपोभवेत्।'

इसके पहले वाला श्लोक कहता है– 'ताम्रपत्रे लिखेद्रामं.........।'

मुक्तिप्राप्ति के लिए नामलेखन

नाम लेखन का पुरश्चरण कर चुका हो, तो वह केशर चन्दन से तुलसीपत्र पर 'तुलस्यां मोक्षदं प्रोक्तं' एक लाख रामनाम लिख ले। उसकी अन्य जो भी मनोकामना होगी, उसके अनुसार इस लोक में भी सभी मनोरम भोगों को भोग कर, पूर्वजन्मों की वार्ता का जानकार होकर, अन्त में भगवद्धाम को ही जायगा।

मुक्तिकामो लिखेल्लक्षं साधको विधिपूर्वकम्।
सकामो याच्छितं लब्ध्वा भुक्त्वा भोगान्मनोरमान्।।
जातिस्मरो नरो भूत्वा याति विष्णुः परं पदम्।'

जातिस्मरका अर्थ पूर्वजन्म का ज्ञान जानने वाला तथा विष्णु से श्रीरामजी को ही जानना चाहिये।

षडक्षरं महामंत्रं लेखयैदर्क पत्रके।
लेखानी चम्पकोत्थाय ह्यष्टगन्धैरूद्रङ्मुखाम्।।
पञ्चलक्ष विधानेन खेचरी सिद्धिमाप्नुयात।
लक्षत्रयं प्रकुर्वीत वाक्सिद्धिर्नात्रसंशयः।।

अर्थात् षडक्षर श्रीराममंत्रराज को अकवन के पत्तों पर अष्टगंध से चम्पे की कलम से उत्तरमुख बैठकर लिखें। इस विधि से पाँच लाख मंत्रराज लिखने पर उसे आकाश में उड़ने की शक्ति प्राप्त होगी। तीन लक्ष लिखे तो वाक्सिद्धि होगी। अर्थात् जो बोलेगा, वही हो जायगा।

आगे हम क्षुद्र अष्टसिद्धियों की संक्षेप में चर्चा करेंगे। तंत्रशास्त्र में इन सिद्धियों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, परन्तु भक्तों के समाज में भगवत्प्रेम प्राप्ति का बाधक होने के कारण इन्हें क्षुद्र कहकर उपेक्षणीय बताया जाता है। यहाँ लेखन का विधान तांत्रिकमत से ही हो रहा है, अतः संक्षेप में वर्णन करना पड़ता है।

❄ आकर्षण प्रयोग ❄

आकर्षण प्रयोग के लिए शीशे पर (आकर्षे शीशजस्मृतम्– संमोहन तंत्रे) नित्य तीन सौ (आकर्षे शतत्रयम्) करंज की कलम से (आकर्ष करञ्जोत्थया– संमोहन तंत्रे) रामनाम लिखना चाहिए। केशर से लिखने पर सभी सिद्धियाँ सुलभ हो जाती है। (केशरेण लिखेद्रामं सर्वसिद्धिः प्रदायकम् महानिर्वाण तन्त्रे) ऐसे कार्यो के लिए एक लक्ष नाम पूरा करना चाहिए।

पलाशपत्रे समालिखय चौदश सहस्त्रकम्।
गन्धर्वाप्सरसां चैव भवेदाकर्षणं ध्रुवम्।। गौरी डामर तन्त्र।

पलाश के पत्ते पर केशर से करंज की कलम द्वारा ग्यारह हजार रामनाम लिखने पर गन्धर्व तथा अप्सराओं का भी निश्चित रूप से आकर्षण होता है।

❄ वशीकरण सिद्धि ❄

किसी को भी वश में करना हो भोजपत्र (वश्यार्थे भूर्जपत्रेतु– संमोहन तंत्रे) या वट के पत्ते पर (वशीच वटपत्रके) दर्भ अर्थात् कुशके अंकुर से(वश्ये दर्भाङ्क रौत्थया– संमोहनतन्त्रे) पाँच हजार रामनाम नित्य (वश्यार्थे पञ्चसाहस्त्रं – संमोहन तंत्रे) लिखना चाहियें। कुश के अंकुर से न बने तो तुलसी की कलम से भी नाम लिख सकते हैं। (तुलसी कुशमूलेन भूर्येपत्रे लिखेद्वशी)।

एक एक नामोच्चारण से दुर्लभ मुक्ति पर्यन्त देने वाले, महान अनमोल परमदिव्य मंगल–भवन श्रीसीतारामनाम को लौकिक धन पुत्र आदि क्षुद्र नश्वर वस्तुओं की प्राप्ति के निमित्त जपना या लिखना मुझे नहीं भाता। किन्तु कुछ ऐसे मनोरथांध लोग भी हैं, जो लाख समझाने पर भी अपने मनोरथका हठ किसी प्रकार से छोड़ने को राजी नहीं होते। उन्हीं को श्रीनामलेखन जैसे मंगलमय कार्य में लगाने के लिए, यह तान्त्रिक नामलेखन खंड लिखा गया है। श्रीनामलेखन से उनके मनोरथ तो पूरे होंगे ही, और श्रीनामसरकार की साधना में लगने पर, उनका हृदयभी पीछे निष्काम हो जायगा। कुछ विलंब से ही सही वे भी श्रीसीताराम भक्ति के सुधाधिक रस का समास्वादन कर सकेंगे। अत: उपर्युक्त श्रीनामसरकार को निर्दोष विधि अकामी भक्तों को ग्राह्य हो सकते हैं।

किन्तु तान्त्रिक ग्रन्थों में दुष्ट प्रयोगों की सिद्धि के लिए कुछ ऐसे भी घृणित उपकरण बताये गये हैं, जो सदाचार प्रेमी सज्जनों के लिए, अस्पृश्य एवं अग्राह्य हैं?

प्रश्न यह होता है कि तंत्र–ग्रन्थ में ऐसा लिखा ही क्यों गया? उत्तर सीधा है। वाममार्गियों का मन तो तंत्र–मंत्र पर ही आधारित होता है। वाममार्गी लौकिक भोगों के भूखे होते हैं। उन्हें परलोक सँवारने से क्या मतलब? उन्हें श्रीरामनाम में इष्ट भाव तो है नहीं, जो श्रीनाम सरकार का समादर कर सकें। उन्हीं से वैसे घृणित उपकरणों का उपयोग संभव है और उन्हीं के लिये तंत्र ग्रन्थ में ऐसे प्रयोग बताये गये होंगे।

श्रीसीतारामनाम लेखन प्रसंग पर लिखने वाले हमारे पूर्व लेखक हैं, वैष्णव–धर्म के कट्टर समर्थक पं० रामटहल दास जी महाराज। आपका लिखा हुआ श्रीराममन्त्र (रामनाम) लेखन विधि नामक पुस्तिका सं० १९९५ माघ पूर्णिमा के दिन श्रीअयोध्या नयाघाट स्थानाधिपति पं० गिरधारी दास जी ने प्रकाशित करवाया था। यह ग्रन्थ अब अप्राप्य है। दूसरे लेखक हैं परम प्रतिष्ठित श्रीवैष्णव पं० श्री अवध किशोर दास जी महाराज, जिनकी लिखी श्रीरामनाम लेखन विधि नामक पुस्तिका सं० १९९७ में विद्यापति प्रेस पटना से प्रकाशित हुई है और अद्यावधि वहीं से उपलब्ध भी है। उपर्युक्त उभय परमादरणीय बहुश्रुत विद्वान संतों ने हस्तलिखित एवं प्रकाशित तन्त्र ग्रन्थों की पर्याप्त छानबीन की है तथा उनमें से श्रीसीतारामनाम लेखन सम्बन्धी सामग्रियों को ढूँढ़ निकाला है। इनके ग्रन्थों में उन तन्त्र ग्रन्थों के मूल संस्कृत श्लोक इन्हीं के हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित भी किये गये हैं। अत: आप दोनों महानुभावों ने श्रीनाम साहित्य में नई कड़ी जोड़कर नाम जगत का महान उपकार किया है।

रही ग्रन्थोक्त ग्राह्य एवं त्याज्य भागों के सम्मिश्रण की बात। सो क्या शब्द ब्रह्म–भूत वेदों में परम निषिद्ध तामस यज्ञों का वर्णन नहीं है? वेदों के भाष्यकर्ता लंकाधिपति रावण का पुत्र 'मेघनाद मखकरइ अपावन।' वाला यज्ञ क्या वैदिक नहीं था? यदि नहीं तो श्रीगीता में वेदों को त्रिगुणमय क्यों बताया गया? 'त्रैगुण्य विषया वेदा निस्त्रेगुण्यों भवार्जुन।' श्रीगीता २।४५ का क्या भाव? इस पर हम परममान्य वेदों की निंदा नहीं करते। करें तो स्वयं निन्दित हो जायँ। श्रीगोस्वामिपाद रचित श्रीदोहावली कहती है–

'अतुलित महिमा वेद की तुलसी किये विचार।
जे निंदत निंदित भयो, विदित बुद्ध अवतार।।'

श्रीवेदों में भरे सभी प्रकार की सामग्रियाँ अधिकार भेद से भिन्न–भिन्न विचार वालों के लिये यथा योग्य ग्राह्य हैं। जो अपने काम की नहीं, उन्हें आदरपूर्वक वहीं छोड़ देना पड़ता है। वही बात मंगल

साधक भगवान् शंकर जी द्वारा विरचित तन्त्र ग्रन्थों की है। हमारे पूर्व लेखक दोनों संतों ने ग्राह्य एवं त्याज्य सभी तान्त्रिक मतों को हमारे सामने रखा। यह तो हमारे विचार पर निर्भर करता है कि हम अपनी बुद्धि से अपने अनुकूल सामग्री उन तांत्रिक ग्रन्थों से चुन लेवें। जो तामस दुष्ट प्रयोग हमारे काम का नहीं, वे वहीं पड़े रहेंगे। उनका ग्राहक वाममार्ग वाले हो सकते हैं, अवथा जो भी हो।

उपर्युक्त उभय नामलेखन विधि संज्ञक प्रकाशित ग्रन्थों में विविध मनोरथ तथा उनके पूर्ति साधक उपाय ऐसे मिले-जुले ढंग से लिखे हैं कि साधारण बुद्धिवाले साधक अपने मतलब की चीज उनमें से चुनकर ले भी नहीं सकते। अत: हमारी विश्लेषणी बुद्धि ने पहले विविध मनोरथों का विभाजन किया। पीछे उनकी पूर्ति साधनों की उन उद्धृत श्लोकों से चुन चुनकर उन प्रकरणों में सजाया। पहले उन विभागों की चर्चा की, जो सकाम सदाचार प्रेमी सज्जनों के द्वारा ग्राह्य भी हो सकेंगे। पीछे तान्त्रिक मत के अनुसार मारण, उच्चाटन, संतापन आदि दुष्ट प्रयोग वाले त्याज्य विभाग लिखने की बारी आई। एक तो वे दुष्ट प्रयोग ही द्वेष मूलक हैं। हिंसा प्रिय आसुरीप्रकृति वाले दुर्जनों के मतलबकी बात है। दूसरे उनके साधक लेखन सामग्री तो ऐसे कुत्सित एवं अपावन है कि भावुक नामप्रेमी सज्जन उनकी चर्चा भी नहीं सुनना चाहेंगे। उनके लेखन में हमारे हृदय में हिचकिचाहट उत्पन्न हुई। मस्तिष्क के विचार एवं हृदय की भावुकता में विवाद छिड़ गया।

विचार– सभी ग्रन्थों में नाना विधि अधिकारियों के निमित्त नाना प्रकार के विषय लिखे होते हैं। एक की जो उत्तम जँचता है, दूसरा उसी को त्याज्य मानता है। ग्रन्थकर्त्ता का क्या दोष? तंत्र ग्रन्थों में जैसा लिखा है, जैसा पूर्व लेखकों ने लिख दिया, उसी प्रकार तुम भी लिख दो।

हृदय– हमारे इष्ट श्रीजानकीजीवन सर्वसुहृद, सर्वसुखद हैं।

'राम प्रानप्रिय जीवन जी के। स्वारथ रहित सखा सबही के।।

उनका जैसा मधुर मनोहर रूप, उसी भाँति उनके नाम।

आखर मधुर मनोहर दोऊ।' ' सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू।।'

अपने कलुषित हृदय से उत्पन्न अनुचित रागद्वेष के वशीभूत होकर, उन्हें तन्त्रवल से किसी की हिंसा, किसी के संतापन, किसी के उच्चाटन में नियोजित करना भयानक भूल है। दूसरी बात यह कि इष्ट नाम हमारे प्राणाधिक प्रिय है, जिन्हें हम अधिक से अधिक आदर करते हैं,जिनकी परमपावन वस्तुओं से अर्चना करना चाहते हैं उनके लेखन में तंत्रोक्त अपावन एवं घृणित वस्तुओं का संयोग करना हमारे लिए सर्वथा असह्य है। सच्छास्त्रों के दिव्य प्रमाणों से संशोभित एवं वैष्णवाचार्यो की विमल महावाणियों से विभूषित ऐसे आदर्श ग्रन्थ में तन्त्रशास्त्र में लिखित वाममार्गियों कें मतपोषक गन्दे विषय लिखना ही सर्वथा अयोग्य है।

विचार– भई, अपने भोले– भाले वैष्णव बन्धुओं को वाममर्गियों के कुत्सित मत से बचाने के निमित्त उन्हें स्पष्ट रूप से त्याज्य बताकर सावधान तो कर ही देना चाहिये। 'संग्रह त्याग न बिन पहिचाने।' वैष्णवों के लिए परहिंसा संतापन, उच्चाटन आदि दुष्ट कर्म त्याज्य हैं, उनके साधन भूत कुत्सित सामग्रियों से नाम लिखना तो सर्वथा त्याज्य है ही। अल्पविचार वालों को सावधान करने के लिए त्याज्य विभाग में सभी वस्तुओं का स्पष्ट विवरण लिखना ही चाहिये।

हृदय– लिखना हो लिखो, पर ऐसा लेख तो लेखक को भी कलंकित करता है। न जाने, आदरणीय तन्त्र शास्त्र ने कैसे आचार भ्रष्ट, दुष्ट प्रकृति के हृदयहीन अधिकारों के लिए, ऐसे दुष्ट प्रयोग लिखे तथा उसके ऐसे कुत्सित साधन बताये, जिसकी चर्चा सुनना भी हम लोगों को नहीं सुहाता।

कहाँ हम लोग श्री नवल युगल मनभावनजू की सुमधुर लीला रस के समास्वादन करने वाले अनुरक्त तथा अपने प्राण सर्वस्व को कोटि–कोटि भाँति के समादर पूर्वक लाड़–प्यार करने वाले तथा कहाँ उनके सुललित पावनास्पद नाम के साथ ऐसे घृणित द्रव्यों का प्रयोग! अत: ऐसे प्रसंग को किसी भाँति से भी परम पावन नाम साधना ग्रन्थ में लिखना लेखक को भी कलंकित करेगा।

विचार– श्रीनाम साधना के विभिन्न लक्ष्य रखने वालों के दृष्टिकोण से, नाम उपासकों के वर्ग माने गये हैं। १– आर्त्त २– जिज्ञासु ३– अथार्थी, और ४– ज्ञानी।

'राम भगत जग चारि प्रकारा। चारिउ सुकृती अनघ उदारा।
चहुँ चतुर कहँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि विशेष पिआरा॥'

और रस के दृष्टिकोण से पाँच प्रकार के भक्त होते हैं। १– शान्त, २– दास्य, ३– वात्सल्य, ४– सख्य और मधुर।

श्रीनाम साधना सार्वभौम एवं सर्वोपयोगी ग्रन्थ है। इसमें केवल मधुर भाव वालों की भावुकता एकदेशीय विचार एकाधिकार जमाना चाहें, सो कैसे हो सकता है? अत: विधि निषेध बताना ग्रन्थ का आवश्यक कर्त्तव्य समझकर, दुष्ट प्रयोग एवं उनके कुत्सित साधन को त्याज्य बनाने के लिए, उसकी चर्चा अनुचित नहीं है। इस प्रकार दोनों में विवाद का अंत नहीं देखा। शाखा प्रशाखा बढ़ती ही जा रही थी। इधर हमें भी ग्रन्थ पूरा कर, बहुत से उतावले प्रतीक्षकों के हाथों में ग्रन्थ यथाशीघ्र पहुँचाने की चटपटी थी। विचार के प्रमाद में आकर दुष्ट प्रयोग एवं उनके कुत्सित साधनों को त्याज्य विभाग में स्थान देकर, ग्रन्थ छिपा दिया। छपी हुई दो हजार प्रतियों में से लगभग ३०० प्रतियाँ धड़ाधड़ वितरित हो गईं। हमारे प्रेमी मित्रों के करकंजों में जब इसकी प्रति पहुँची, तो वे अंतिम त्याज्य विभाग के दुष्ट प्रयोग एवं कुत्सित साधन को हमारे हाथों से लिखा हुआ जानकर, भौंचक से रह गये। मीठे उपालंभो के प्रेमपूर्ण शब्द कान में पहुँचने लगे। मित्रों का कहना था कि तंत्रशास्त्र अपनी जगह पर सही भले हों, तुम्हारे पूर्व विद्वान लेखकों ने उसी तन्त्रोक्त कुत्सित साधन को अपनी पुस्तिका में स्थान दिया तो विद्वान महापुरुष सर्वसमर्थ होते हैं, परन्तु तुम्हारे जैसे नामानुरागी की कलम से त्याज्य ही बताने के लिए क्यों न हो, ऐसे अवाच्य शब्द लिखे कैसे गये?

मित्रों के प्रबोधन से हमारी विचार की प्रमादनिद्रा भंग हुई। आखिर लेखक का हृदयभी अपने मधुर उपासक बन्धु मित्रों के सहधर्मी ही तो ठहरा। अब हम अपने हृदय की भावुकता में सजग हो गये हैं। हम अभी अपने यहाँ की अवितरित प्रतियों में उन अंतिम विवादस्पद पंक्तियों को वहिष्कृत करते हैं। यह संशोधित पृष्ठ वितरित प्रतियों में भी जो प्रेमीबन्धु चाहें, हमारे यहाँ से छपे पर्चे लेकर चिपका लेवें। हमने तर्क प्रधान विचार विमर्श को नैयायिकों की झोली में डाल दिया है। हे ज्ञान विज्ञान की गवेषणा! आपको प्रणाम है! आप दार्शनिक महानुभावों के गंभीर मस्तिक देश को जाकर सुशोभित करें। सकाम नाम साधना कर्मकांडी सज्जनों के कर्मठ हाथों में सौंपकर, हम सबसे न्यारा अपना पंथ बना रहे हैं। 'नेह नगर के पैरोइ 'न्यारो' अब हमने अपने मन को समझा–बुझाकर राजी कर लिया है।

'करो मन नेह नगर गुजरान॥' 'अब हम बसिहौं प्रीतम पास।
सकल लोक सम सोक समुझि जिय, सब सन होय निरास।
सूरज चंद अनल दामिनि से, पल पल जहँ प्रतिकास।
श्रीयुगलानन्य अमल नामहि चखि होहु मगन रसरास।'

नेह नगर प्रवेश होगा, नाम साधना से ही। वहाँ ठहरेंगे भी नाम जापकर ही। वहाँ के दिव्य युगल भावना रस की माधुरी भी चखेंगे नाम जपकर ही। हमारी नाम साधना लौकिक वस्तुओं से

सर्वथा निष्काम रहेगी। हम दिव्य प्रेम के भूखे हैं। श्रीनाम सरकार भी कृपा कर हमें वहीं देवें। हृदय की भावुकता में पड़कर विचार का त्याग करते जानकर पाठक यह न समझें कि ये लोग विचार हीन होकर आचार भ्रष्ट हो जायेंगे। हम लौकिक बुद्धि त्याग रहे हैं। इस बुद्धि से प्रभु की प्राप्ति तो नहीं होती। श्रीगीताजी में श्रीमुख वचन है कि इष्ट ध्यानपूर्वक सतत सप्रेम भजन करने वाले प्रेमी भक्तों को ही आप कृपापूर्वक वह बुद्धि भी देते हैं, जिसकी सहायता से भगवत्प्राप्ति संभव है।

तेषां सतत युक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददाभि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते१०१०

श्री जगज्जननी श्री जनकनंदिनीजी के युगलचरण पकड़कर मचलने पर, वे कोई साधन कराये बिना ही सेतमेत में वह बुद्धि दे देंगी।

'जनकसुता जगजननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की।
ताके युग–पद कमल मनावऊँ। तासु कृपा निरमल मति पायऊँ।।'

श्रीगुरु करुणा से भी विमल विवेक मिलता है।

तुलसिदास हरि गुरु करुना बिनु विमल विवेक न होई।
विनु विवेक संसार–घोरनिधि पार न पावै कोई।।

श्रीविनय०११५।६

ऐसी निर्मल बुद्धि और हृदय की भावुकता में मतैक्य है। विरोध तो लौकिक बुद्धि और दिव्य प्रेमपूर्ण हृदय की भावुकता में होता है। अनादिकाल से ही परम समर्थ पतित– पावन श्री सीताराम नाम सरकार ऐसे घोर पातकियों का भी समुद्धार करते आ रहे हैं, जिनके पापों के प्रायश्चित कई जन्मों तक कृच्छ् चान्द्रायणादि व्रतों तथा अन्यान्य क्लिष्ठ साधनों से भी संभव नही थे। इसी पर तो श्री गोस्वामिपाद ने श्रीविनयजी में कहा 'पतित पावन रामनाम सो न दूसरो।' अनन्तकाल तक यह पतित पावन विरद श्रीनाम सरकार वहन करते ही रहेंगे। तीनों लोकों में समस्त मंगलों का विस्तार करते रहना श्रीनाम सरकार का सहज स्वभाव है। अन्यान्य युगों में श्रीनराम सरकार का गोप्य प्रभाव आज इस घोर कलियुग में स्पष्ट रूप से इस प्रकार प्रगट न हो जाते, तो हमारे जैसे विषय के किंकर जीवन तो डूब ही मरते। ऐसे परम उदार, सर्व सुहृद, सर्व सुखद मंगलखान श्रीसीताराम नाम सरकार की सदा जय जय होवे।

हमारे लिये तो वही ग्रन्थ धन्यातिधन्य है जिनके पठन श्रवण से हमें श्रीनाम साधन में लगन जगती है, वही सत्संग नित्य वाञ्छनीय, नित्य कर्त्तव्य है जिससे श्रीनाम साधना में हमारी रुचि सदा बढ़ती रहे, वही महापुरुष हमारे परमाचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने योग्य है, जिनके समागम से हममें श्रीनाम निष्ठा समुत्पन्न हो। वही घड़ी, वही मुहूर्त्त हमारे समस्त जीवन का सर्वाधिक सौभाग्य वर्द्धक है, जिस क्षण हमारी जीभ से अपने प्राणाधिक प्रियतम के मधुरातिमधुर नाम का समुच्चारण बन जाय।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव तारावलं चन्दवलं तदेव।
विद्यावलं देववलं तदैव सीतापतेर्नाम यदा स्मरामि।।

वहीं सौभाग्यशाली सज्जन धन्यातिधन्य है, मान्याग्रगण्य है, जो श्रीसीतारामनाम जप में लगे हुए हैं। स्वर में स्वर मिलाकर गर्जन कीजिए तो–

'जय जय श्री सीताराम।' इत्यलम्
'शुभं भूयात्। मङ्गलं सन्तनोतु।।'

श्रीशत्रुहनशरणजी द्वारा लिखित

अन्यान्य उपलब्ध अनमोल पुस्तकें

श्रीइश्क कान्ति की रहस्योद्‌घाटिनी टीका

मूल इश्ककान्ति के यशस्वी लेखक हैं अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज। दिव्य प्रेम की उन्मत्त दशा में लिखी गई यह प्रेम पुस्तिका सहदय प्रेमी पाठक के ह्रदय में दिव्यप्रेम की चैतन्य चेतना संदीपन करने में बड़ा ही उपादेय है। मूलग्रन्थ हिन्दी संस्कृत के साथ अरबी –फारसी,पंजाबी आदि शब्दों के संमिश्रण से केवल हिन्दी मात्र जानकार पाठकों के लिये अब तक दुर्बोध रहा है। ओजस्वी भाषा में लिखित इस पुस्तक के केवल मूल रूप में पाठ से प्रेमी सज्जन थोड़ा बहुत दिव्य प्रेम का आभास पाकर टीका के अभाव में इसके सम्यक् रसास्वाादन के लिये तरस कर रह जाते थे। अब रहस्योद्‌घाटिनी टीका में पूरी व्याख्या पढ़कर आप दिव्यप्रेम के सुघा स्वाद का दिव्यानन्द लूटें। विद्वान् सज्जनों ने इस टीका की मुक्तकंठ से सराहना की है। एकबार इसे आद्योपान्त पाठकर लेने पर, फिर तो आपको इसके नित्य पाठका स्वत: चस्का लग जायेगा। इसे एकबार अवश्य देखें। २५२ आठ पेजी साइज में छपे होने पर भी इसके न्यौछावर केवल दस रूपये रखे गये है।

–: श्रीअयोध्या के जगमगाते रत्न :–

इस ग्रन्थ में आज से डेढ़ सौ वर्ष पहले के अयोध्यावासी सिद्ध महापुरूषों की संक्षिप्त गुणात्मिका जीवनी है। उनके नाम हैं १–दीनवन्धु श्रीरामप्रसादजी विन्द्वचार्य,२–तपस्वी–रत्न,श्रीरामदासजी महाराज जिनका अचलकीर्ति स्वरूप है वर्त्तमान श्री तपस्वीजी की छावनी।३–संतसेवी रत्न श्रीमणिरामदासजी महाराज जिनकी श्रीमणिराम बाबा की छोटी छावनी आज भी संत सेवा का आर्दश वहन करती है।४–रसिक रत्न करूणासिन्धु श्रीरामचरणदासजी महाराज, जितने सर्वप्रथम श्रीमानस जी टीका लिखी।५–आदर्श रसिकरत्न श्री जानकीचरण। आप इनकी प्रेमदीवानी दशाजीवनी में पढ़ें । ६–श्रीरामसखारत्न श्रीशीलनिधिजी। श्रीकनकभवन के आगे श्रीलाल साहब का मन्दिर आज भी के सुयश पताका फहरा रहा हैं।७– भावुक रत्न श्री चित्रनिधि जी महाराज। मूल्य केवल दो रूपये।लागत से भी कम।

–: श्रीमिथिला संतमणि मोदलताजी का चरितामृत:–

नवीन कीर्त्तन गायन रूप देकर,विवाह पदावली की रचना करने वाले श्री मोदलताजी का जीवन दर्शन कर, आप सीखेंगे प्रेमसाधना पद्वति एवं संतो की रहनी। एकबार इसे अवश्य पढ़ें। २३६ पृष्ठों की इस पुस्तक का सस्ता न्यौछावर केवल पाँच रूपये मात्र हैं।

–: श्रीराघव स्वभाव सौरभ :–

श्रीगोस्वामीजी के काव्यों के साथ–साथ श्रीवाल्मीकीय रामायण श्रीमद्‌भागवत आदि प्रामाणिक ग्रन्थों के श्रीराघवचरित्र चित्रण से उनके मधुरतम शीलस्वभाव का परिचय संग्रह किये गये इस ग्रन्थ के पाठ से आपको लाभ होगा। न्यौछावर दो रूपये मात्र।

उमा रामस्वभाव जिन जाना। तांहि भजन तजि भाव न आना।।

मुद्रक : श्रीराम ऑफसेट प्रिन्टर्स, पालकी खाना, फैजाबाद, दूरभाष–२०५५२

छह उर्मियाँ:— भूख, प्यास, लोभ, मोह, सर्दी, गर्मी, जन्म-मरणादि
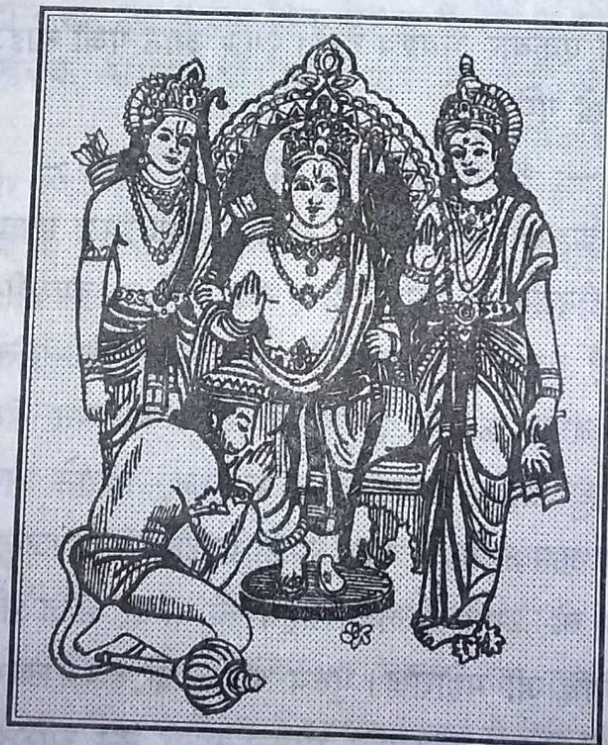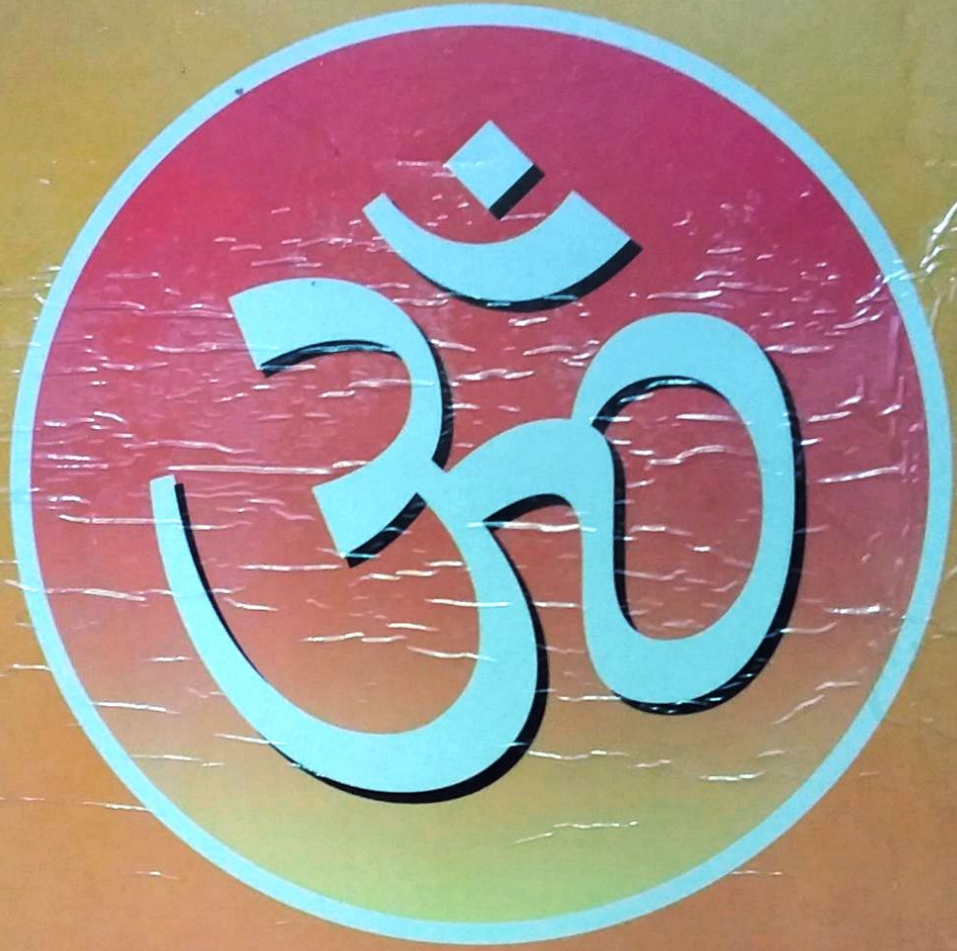
ॐ
: मुद्रक :
गणेश प्रिन्टिंग प्रेस, 'श्याम भवन', रिकाबगंज-फैजाबाद फो. २२७११, २२४४४